UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178925

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 831 | C55s h Accession No. G.H. 2563

Author चौधरी त्रिभुवनाथ सिंह गाडिल्य

Title शिकारियों की सच्ची कहानियाँ

This book should be returned on or before the date last marked below.

शिकारियों की सच्ची कहानियाँ

चौधरी शिवनाथ सिंह, शांडिल्य

पुस्तक-भंडार,
पटना और लहेरियासराय

मूल्य—२·५०

प्रकाशक
पुस्तक-भंडार,
पटना और लहेरियासराय

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
मुरलीधर गुप्त
श्री श्याम बिहारी प्रेस,
बिहारी लेन, पटना—४

भूमिका

अँगरेज़ी में एक कहावत है--Truth is stranger than fiction'—अर्थात् सच्ची घटनाएँ कल्पित कहानियों से कहीं अधिक आश्चर्यजनक होती हैं। शिकारियों की कहानियों के विषय में यह कहावत पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है।

आखेट-सम्बन्धी कहानियाँ पढ़ने से मनोरंजन के अतिरिक्त और भी कई लाभ हैं। प्रकृति के क्रीड़ास्थल—पहाड़ों और वनों के सुहावने तथा भयावने दृश्य इस प्रकार की कहानियों में ही देखने को मिलते हैं। जंगल के पशु-पक्षियों के स्वभाव आदि का भी ज्ञान प्राप्त होता है। और, साथ-ही-साथ, इस प्रकार के वीरता-पूर्ण वृत्तान्त पढ़ने से मुर्दा-दिलों में भी नये उत्साह का संचार होने लगता है।

मृगया के विषय में कविकुल-गुरु कालिदास ने 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' में सेनापति के मुख से ठीक ही कहलाया है।

"मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः
सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः।
उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले
मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः॥"

इसी श्लोक का अनुवाद हिन्दी-पद्य (सवैया) में राजा लक्ष्मण सिंह ने अपने 'शकुन्तला' नाटक में यों किया है—

"कछु मेद कटे अरु तुन्दि घटे, लघु के तन धावन जोग बने।
चित वृत्ति पसून की जानि परे, भय क्रोध में लेति लपेट घने॥
अति कीरति है धनुधारि न की, चलता यदि बान तें बेझो हने।
मृगया तें भली न विनोद कोई, ताहि दोषन माहि वृथा ही गने॥ *

इसी वजह से अँगरेजी जर्मन फ्रांसीसी आदि उन्नत युरोपीय भाषाओं में इस विषय (शिकार) पर एक-से-एक बढ़कर अनेक पुस्तकें हैं। परन्तु दुःख का विषय है कि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस प्रकार के साहित्य का नितान्त अभाव है।

---

* मृगया में ये गुण हैं कि मेद (चरबी) घटाकर और तोंद छाँटकर शरीर को चलने-फिरने के योग्य बनाती है; पशुओं की चित्त की वृत्ति—अर्थात् कभी भय, कभी क्रोध इत्यादि—का ज्ञान कराती है; और चलता बेझा (निशाना) मारना सिखाती है। यह तो मनोरंजन का सबसे अच्छा साधन है—इससे अच्छा कोई विनोद ही नहीं; फिर न जाने लोग इसे दोषों में व्यर्थ ही क्यों गिनते हैं।

इसका यह कारण नहीं है कि भारतवर्ष में साहसी शिकारियों की कमी है। यहाँ तो अनेक ऐसे बहादुर शिकारी पड़े हुए हैं जो शेर, चीता, बाघ, सूअर आदि हिंसक जानवरों का शिकार उनके मुकाबले में खड़े होकर बड़ी निर्भयता से कर डालते हैं, और मचान पर चढ़कर या गड्ढे में छिपकर गोली चलाने को लज्जाजनक कार्य समझते हैं। इन शिकारियों की वृत्तान्त इतने रोमाञ्चकारी और मनोरंजक हैं कि बड़े-बड़े ऐयारी और तिलिस्म के उपन्यासों को मात करते हैं। परन्तु कमी केवल इस बात की है कि इन शिकारियों का ध्यान अपने शिकारों का वर्णन लिखने की ओर बिल्कुल नहीं है! हिन्दी संसार में एकमात्र पंडित श्रीराम शर्मा बी० ए० ही ऐसे लेखक हैं जिन्होंने अपने शिकारों का वर्णन अत्यन्त ओजस्वी भाषा में लिखकर हिन्दी को गौरव प्रदान किया है। उनका 'शिकार' पुस्तक अद्वितीय और अनूठी है।

राजपुताने के एक जागीरदार ने स्वयं अपने हाथों से मारे हुए सैकड़ों शेरों की खालों से एक बड़ा सुन्दर तम्बू तैयार कराया है। ईडर नरेश स्वर्गीय महाराजा जनरल सर प्रतापसिंह के जोड़ के शिकारी संसार में विरले ही होंगे—प्रसिद्ध सेनापति लार्ड राबर्ट ने उनके आखेट सम्बन्धी साहस और योग्यता की, अपने संस्मरणों में बड़ी प्रशंसा की है। परन्तु जनरल महोदय ने इस विषय में स्वयं एक अक्षर भी नहीं लिखा!

हिन्दी भाषा-भाषी शिकारियों तथा उनके मित्रों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करने तथा जनता में सच्ची और वीरतापूर्ण कथाएँ

पढ़ने की सुरुचि पैदा करने के लिये मैंने इस पुस्तक में अँगरेजी, उर्दू और हिन्दी की पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं * से कतिपय आखेट-सम्बन्ध कहानियों का संकलन किया है।

यदि इस पुस्तक से पाठकों का कुछ भी मनोरंजन हो सका तो मेरा परिश्रम सफल हो जायगा।

जिन पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तक से ये कहानियाँ संकलित तथा अनूदित की गई हैं, उनके संपादकों और, उक्त कहानियों के लेखकों का मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ। और, बिहार के सुप्रसिद्ध हिन्दी-हितैषी श्रीरामलोचनशरणजी का भी अभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को ऐसे सुन्दर रूप में जनता के सामने उपस्थित किया है।

माछरा (मेरठ)
२१-५-३६

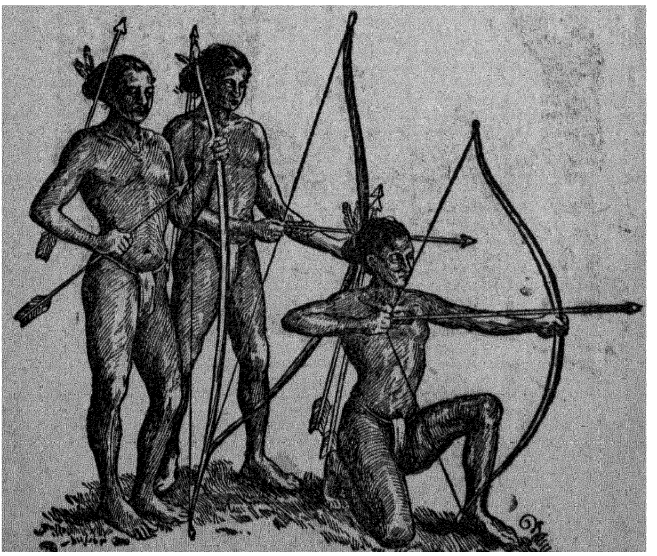
शिवनाथ सिंह शांडिल्य

* सरस्वती, माधुरी, गंगा आदि।

सूची

रोमांचकारिणी नव सचित्र कहानियाँ

१.	निजामशाह शिकारी की पहली कहानी	१
२.	निजामशाह शिकारी की दूसरी कहानी	८
३.	बदमाश हाथी	१६
४.	नर-व्याघ्र अब्दुल हमीद ...	२५
५.	हसनअली शिकारी ...	४३
६.	'सावो' के मनुष्य-भक्षक ...	४८
७.	आतंकपूर्ण कहानी	१०५
८.	शेर के मुँह में पन्द्रह मिनट ...	१११
९.	मेरे शिकार के अनुभव ...	११७





निजामशाह शिकारी की पहली कहानी

मैं अमीर नहीं हूँ। बहुत-कुछ समझदार भी नहीं हूँ। पर मैं परले दर्जे का मांसाहारी हूँ। मैं रोज जंगल को जाता हूँ और एक-आध हिरन मार लाता हूँ। यही मेरा रोजमर्रा का काम है।

मेरे घर में रुपये-पैसे की कमी नहीं है। मुझे कोई फिक्र भी नहीं है। इसी सबब से मैं हर रोज शिकार के पीछे पड़ा रहता हूँ। मुझे शिकार का बड़ा भारी शौक है। यहाँ तक कि मैं उसके सामने अपने माँ-बाप; पुत्र कलत्र और प्यारे प्राणों को भी कुछ चीज नहीं समझता।

आपलोग अगर मेरे कहने को झूठ समझते हों, तो आप एक दिन के शिकार का मेरा वृत्तान्त सुन लीजिये। इस वृत्तान्त को सुनकर मुझे भरोसा है, आप यह अनुमान कर सकेंगे कि मुझे शिकार ज्यादा प्यारा है या अपना प्राण। अच्छा, अब वृत्तान्त सुनिये—

मेरे यहाँ आदमियों की कमी नहीं है। अगर मैं चाहूँ तो शिकार को जाते वक्त एक ही जगह कई आदमी ले जा सकता हूँ। लेकिन मेरी आदत कुछ ऐसी पड़ गई है कि चोर की तरह अकेला ही जाना मुझे अच्छा लगता है। शिकार के हाथ लग जाने पर मुझे उतनी ही खुशी होती है जितनी चोर को मनमाना माल मिलने पर होती है।

एक दिन की बात। गर्मी का मौसम था। पल-पल पर गर्मी बढ़ती जाती थी। आदमी पानी-पानी चिल्लाकर अपने गले को और भी सुखाते जाते थे। ऐसे वक्त में मेरे गाँव के कुछ आदमी मेरे पास आये। उन्होंने कहा—"गाँव के पास एक तालाब बिलकुल सूख गया है। बीच में थोड़ा-सा पानी रह गया है। वही पानी पीकर हमलोग किसी तरह अपने प्राण बचाते हैं। पर कई दिनों से रात के वक्त एक बड़ा जंगली सूअर वहाँ आता है। वह उस कुंड से पानी भी पीता है और उसमें लोटकर बचे हुए पानी को कीचड़ कर देता है। इसलिये वह पानी हमलोगों के पीने के लायक नहीं रहता। इसका आप कुछ बन्दोबस्त कीजिये।"

यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई; क्योंकि मैं एक शौकीन शिकारी हूँ और निशाना भी बहुत अच्छा लगाता हूँ।

मैंने उनलोगों से कहा—"आज चाँदनी रात है। इसलिये आज ही मैं इस सूअर का शिकार करना चाहता हूँ; तुमलोग अभी जाकर तालाब के पास एक मचान बना दो।"

वे तो यह चाहते ही थे। उन्होंने फौरन ही एक मचान मेरे लिये तैयार कर दिया।

रात हुई। आठ बज गये। मैंने खाना खाया। अपनी मामूली शिकारी पोशाक पहनी। बंदूक हाथ में उठाई। एक भाला और एक पेशकब्ज भी हाथ में लिया।

इस तरह साज-सामान से दुरुस्त होकर मैं उस तालाब की तरफ रवाना हुआ। तालाब के पास पेड़ पर मचान देखकर मैं खुशी से फूल उठा। भाले को मचान के ठीक नीचे गाड़ दिया। फिर उसके ऊपर चढ़ आसन जमाकर बैठ गया।

वहाँ पर मैं बिलकुल अकेला था। मगर मैं बड़ा निडर हूँ। मुझे जरा भी डर न लगा। वायु मन्द-मन्द चल रही थी। उसने नींद को झटपट मेरी आँखों के सामने लाकर खड़ा कर दिया। मगर मैं उसके काबू में आनेवाला आदमी नहीं हूँ। इसीलिये उस बेचारी को मुझसे दो गज दूर ही खड़ा रहना पड़ा!

इतने में मुझे कुछ दूर पर आहट मालूम हुई। मैं समझ गया कि बराह-महाराज की सवारी आ पहुँची। मेरा यह अनुमान ठीक निकला।

तालाब के पास एक गुफा थी। वहा पर वह सूअर आकर कन्द-मूल खोद-खोद कर खाने लगा। मैंने अपनी बंदूक सँभाली।

मैं इस ताक में लगा कि वह सूअर यहाँ से और जरा आगे बढ़े तो मैं उसे अपनी गोली का शिकार बनाऊँ।

इतने में एक और अजीब घटना हुई। जिस पेड़ पर मैं था, उसपर एक बड़ा भयानक साँप चढ़ा। मैं काँप उठा। मैंने समझा, मेरी मौत आ गई। मगर मैं चिल्लाया नहीं, न उस साँप को अपने शरीर से अलग फेंक देने ही की कोशिश की। सोचा, यदि मैं चिल्लाऊँगा या इस साँप को पकड़कर जमीन पर पटकूँगा तो आवाज सुनकर सूअर भाग जायगा।

मैं पत्थर-सा हो गया। मैंने अपने आसन को जरा भी नहीं हिलाया। वह साँप पीठ से मेरे कंधे पर आया। कंधे से पेट की तरफ नीचे उतरकर अपना फन मेरे पैर के अँगूठे और उँगलियों के बीच में डाला। अब मुझसे न रहा गया। वहाँ पर मैंने उसके सिर को इस मजबूती से दबाया कि वह एक ही मिनट में फटक-फटक कर वहीं मर गया।

मेरे शिकार का पहला कांड यहाँ पर समाप्त हो गया।

शूकरराज अबतक उस गुफा के पास कन्द-मूल खोदने में ही लगे थे। इतने में तालाब के पास पानी पीने के लिये एक भयानक भालू आ पहुँचा। यदि मैं चाहता तो उसे वहीं मार गिराता; मगर सूअर के भाग जाने के डर से मैंने ऐसा करना मुनासिब न समझा।

जाम्बवान-नन्दन पानी पीकर तालाब के पास खड़ा-खड़ा दम लेने लगा। इतने में एक बहुत बड़ा शेर आता हुआ दिखाई दिया। शेर बहुत प्यासा था; इसलिये जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ आ रहा था।

रीछ रज की नजर ज्योंहा शेर पर पड़ी, आप पर क्वार के महीने की सी जूड़ी चढ़ आई ! आपको उस वक्त और कुछ न सूझा। आप काँपते हुए उसी पेड़ पर चढ़े जिसपर मैं बैठा था !

मेरे मचान के नीचे ही एक डाली थी। उसी पर वह आकर सटक गया और एक दूसरी डाल को अपने अगले पैरों से खूब मजबूती के साथ पकड़ लिया।

डर भी बुरा होता है। उस वक्त मारे डर के वह रीछ इतने जोर से काँपता था कि वह बड़ा पेड़ भी हिल रहा था। मेरा बदन भी पसीने-पसीने हो गया। मुझपर खौफ गालिब हो गया। सोचा—"यदि शोर करूँगा तो यह रीछ फौरन् ही मुझपर हमला करेगा। इसलिये साहस करके वहीं पर बैठा रहा।"

शेर तालाब पर पहुँचा। पहुँचकर उसने अच्छी तरह पानी पिया। फिर किनारे पर बैठकर अपनी मूछें सुधारने और गुर्राने लगा वह मेरे मचान के बिलकुल सामने था। उसपर वार करने के लिये मैंने अपनी बन्दूक सँभाली।

इसी बीच में वह सूअर गुफा की तरफ से चला और तालाब के पास आया। अहा ! वह सूअर था या हाथी का बच्चा ! ऊँचाई में वह कोई छः फुट का था। उसके दो दाँत हाथी के दाँतों के समान बाहर निकले हुए थे; वे इतने बड़े और मजबूत थे कि तीन-चार फुट के तनेवाले पेड़ को भी वह एक ही आघात में चीर या गिरा सकता था।

आपने शायद सुना होगा कि बड़े-बड़े जंगली सूअर शेर से नहीं डरते। सूअर के पैने-पैने प्रकाशमान दाँतों को देखकर शेर को सूअर पर हमला करने का साहस नहीं होता था।

सूअर को सामने आता देख मेरे शिकारी का जोश में उबाल आया। उस भयानक अवस्था में भी मैंने कंधे तक बन्दूक रक्खी और सूअर को लक्ष्य करके गोली छोड़ दी।

सूअर को गोली लगी। मगर उसने समझा कि सामने बैठे हुए गुर्रानेवाले शेर ने मुझपर यह चोट की है! बस एकदम शेर पर टूट पड़ा। दोनों में बड़ा भयानक युद्ध हुआ। आखिरकार वनराज को शूकराज की कराल डाढ़ों का चबेना होना पड़ा। इधर मेरी गाली के आघात से वराहजी भी स्वर्गलोक सिधारे।

यहाँ पर मेरे शिकार का दूसरा कांड भी समाप्त हुआ।

ज्योंही मेरी बन्दूक से गोली छुटी, मेरे मचान के नीचे की डाल पर बैठे हुए रीछ ने समझा कि वह उसी पर छोड़ी गई है। इससे मारे डर के उसके हाथ से वह डाल छूट गई। वह नीचे गिरा। मगर जमीन पर पहुँचने के पहले ही मचान के ठीक नीचे गड़ा हुआ मेरा भाला उसकी छाती को पार कर गया!

जरा देर में उस रीछ का भी काम तमाम हो गया और उसके साथ मेरे शिकार का तीसरा कांड भी समाप्त हुआ।

इस बहादुरी के लिये आप चाहे शाबाशी दें या मेरी सिफारिश करके गवर्नमेंट से 'विक्टोरिया क्रॉस' बहादुरी का पदक दिलावें,

मगर अब मैं कभी हाथ से बंदूक न उठाऊँगा। मैंने शिकार करना एकदम छोड़ दिया है। मैं नहीं चाहता कि मैं अपनी जान को इतने बड़े जोखों में डालूँ।



निजामशाह शिकारी की दूसरी कहानी

मैंने सचमुच शिकार खेलना बिलकुल छोड़ दिया था। उसके ठीक एक साल बाद मुझे एक साहब मिले। इनसे मेरी पहले को जान-पहचान थी। ये मुझपर बड़े मेहरवान थे। एक दिन इनके पास विलायत से इनके एक बहुत बड़े धनी मित्र की चिट्ठी आई, जिनमें लिखा था—

"मुझे शेरनी के दो बच्चे चाहिये। मैं उन्हें अपने नजर-बाग में रखना चाहता हूँ। आप किसी शिकारी से इस काम के लिये कहिये। जो शिकारी शेरनी के दो बच्चे पकड़ देगा, उसे मैं एक हजार रुपया इनाम दूँगा। आप जानते ही हैं कि मुझे अपने बाग में शेर रखने का कितना शौक है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप ही मेरे इस शौक को पूरा करेंगे।"

यह चिट्ठी मुझे साहब ने पाकिट से निकालकर दिखलाई। लेकिन साहब को यह नहीं मालूम था कि मैं भी एक नामी शिकारी हूँ। इसलिये वे मुझसे ही पूछने लगे कि क्या यहाँ कोई ऐसा आदमी मिलेगा जो शेरनी के दो बच्चे डेढ़ महीने के अन्दर पकड़ लावे। मैंने कहा—"साहब, मैं तो नहीं कह सकता कि ऐसा शिकारी आपको कहाँ मिलेगा, तलाश करा देखिये, शायद कोई मिल जाय।"

जब साहब ने वह चिट्ठी मुझे दिखलाई, तब मैं मन-ही-मन घबराने लगा कि कहीं साहब यह काम मुझे ही न सौंपे। इससे मैंने उस समय साहब के साथ बड़ी होशियारी से बातचीत की; क्योंकि मुझे डर था—कहीं साहब को यह न मालूम हो जाय कि मैं भी शिकारी हूँ।

खैर, मैं उस दिन टाल-टूल करके साहब से बिदा होकर चला आया। पर साहब के पेट में शेरनी के बच्चे कैसे मिलेंगे यह बात आकाश में बादलों के समान लगी। उस दिन से साहब के पास जो कोई जाता उससे वे यही पूछते कि तुम क्या शेर के बच्चे ला सकते हो। इस भयानक काम को सुनकर मैं भी साहब के पास बहुत कम जाने लगा।

दुनिया में सबका कोई न कोई दोस्त या दुश्मन होता ही है; सो मेरा भी एक दुश्मन निकल आया। वह साहब का मुँहलगा था। उससे भी साहब ने शेरनी के बच्चों की बात कही। उसने

झट मेरा ही नाम बतलाकर मेरी पहले की सारी कहानी साहब से कह सुनाई। तब तो साहब को इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि मैं ही उन्हें शेर के बच्चे लाकर दे सकूँगा।

उसी समय साहब ने रुक्का देकर एक चपरासी मेरे पास भेजा। रुक्के में साहब ने विनीत भाव से मुझे अपने बँगले पर आने के लिये लिखा था। उस समय मैं स्नान कर रहा था। इस कारण मुझे कुछ देर लगी। उधर साहब को यहाँ तक चटपटी पड़ी कि मैं कपड़े पहन ही रहा था और वे खुद मेरे घर के सामने 'सलाम-सलाम' कहते पहुँच गये। मैंने झट बाहर निकलकर साहब को आदर के साथ अपने कमरे में एक कुर्सी पर बैठाया।

साहब बहादुर किस काम के लिये खुद मेरे घर पर आये थे, सो मैं भली-भाँति समझ गया था। इसलिये साहब को किसी प्रकार टालने के लिये मैंने बेहद खुशामद की। पर मेरी युक्ति ने काम न दिया। दो ही तीन बातों के बाद साहब ने वही विलायत की चिट्ठी जेब से निकालकर मेरे हाथ पर रख दी। कहने लगे कि आप ही के प्रयत्न से मुझे शेरनी के बच्चे मिल सकेंगे। तब मैंने लाचार होकर यथाशक्ति इस काम के करने का वचन दिया। यह सुनकर साहब बहादुर बहुत खुश हुए। तत्काल उन्होंने सौ कारतूसों के साथ एक कीमती बंदूक मुझे दी।

इसके बाद मैंने बहुत कोशिश की कि शेर के बच्चे किसी जंगली आदमी के द्वारा मिल जायँ; पर मेरा मनोरथ सिद्ध न हुआ। बच्चे

पाने के लिये मैंने अनेक उपाय किये; परन्तु एक उपाय भी सफल न हुआ।

एक दिन एकाएक एक उपाय मुझे सूझा। मैंने मन में ठान लिया कि इस उपाय से काम लेना चाहिये। बस, सवेरा होते ही, साहब की दी हुई बंदूक और चार दिनों के लिये हल्का भोजन साथ लेकर, पूर्ववत् शिकारी पोशाक पहन, अकेला एक नदी के किनारे-किनारे चला। यह नदी पहाड़ियों को काटती हुई निकलती है।

नदी के किनारे चलते-चलते दूसरे दिन सवेरे ही मैंने रात को नदी से पानी पीकर लौटी हुई शेरनी के पद-चिह्न देखे। उन चिह्नों को देखकर मैं वहीं खड़ा हो गया। इस समय मेरे मन में विचित्र विचार पैदा होने लगे। कुछ सोच-विचारकर, बंदूक में कारतूस भर, उन्हीं पद-चिह्नों को देखता हुआ, मैं शेरनी के पीछे-पीछे चला। दिन के ठीक दस बजे मैं एक पहाड़ी के पास पहुँचा।

पहाड़ी पर शेरनी के पद के चिह्न कठिनता से मालूम होते थे। जब मैं आधी पहाड़ी पर पहुँचा तब मुझे कुछ आवाज-सी सुनाई पड़ी। आवाज सुनकर मुझे निश्चय हुआ कि यह शेरनी ही की आवाज है। तब मैं एक ऊँचे पेड़ पर चढ़कर इधर-उधर देखने लगा।

शेरनी पहाड़ी की खोह की तरफ सीधी जाती हुई देख पड़ी। उसे देखकर मुझे कुछ डर-सा लगा; क्योंकि मैं अकेला था। पर जब बंदूक को आँखों के सामने देखा, तब मेरा डर काफ़ूर हो गया। शेरनी जब नजर से गायब हो गई तब मैं पेड़ से उतरकर

फिर उसके पीछे-पीछे चला। कुछ दूर चलकर मैं फिर एक पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ से शेरनी एक खोह में, जहाँ ऊँचे-ऊँचे पत्थर और बहुत घने पेड़ थे, उतरती हुई देख पड़ी। इस समय मेरी घड़ी में शाम के साढ़े चार बज चुके थे। मैंने देखा कि शेरनी उस खोह के एक गढ़े में कूद पड़ी। तब मैंने अनुमान से समझ लिया कि इस गढ़े में शेरनी के बच्चे जरूर होंगे।

इतने में रात हुई। मैंने इसी पेड़ पर रात बिताना निश्चित किया। ठीक आठ बजे रात को आँधी आई। उसी गर्द-गुजार में मैंने सूखी रोटी खाई और तुम्बे का पानी पिया। खा-पीकर मैंने एक डाल पर जमकर बैठ गया, और डुपट्टे से बदन को डाल के साथ बाँधकर रात बिताई।

प्रातःकाल छः बजे, शेरनी गढ़े से बाहर निकलकर, उस पहाड़ी के ऊपर से जङ्गलों की ओर, शायद शिकार के लिये, चली गई। यदि शेरनी मेरी तरफ से बीस कदम भी जाती, तो मैं उसे अपनी बंदूक का निशाना बनाता; पर वह बहुत फासले से गई। उसके जाने के बाद मैं ठीक आठ बजे पेड़ से उतरा और बंदूक में कारतूस भरकर इधर-उधर देखता हुआ उस खोहवाले गढ़े के पास पहुँचा।

गढ़े के पास पहुँचकर उसके भीतर देखने से शेरनी के दो बच्चे जो बड़ी बिल्ली के बराबर थे—खेलते हुए देख पड़े। इन बच्चों को देख मुझे जो खुशी हुई, वह मैं लिख नहीं सकता। मेरा

मन प्रफुल्लित हो उठा। मैं मारे खुशी के फूला न समाया। लेकिन गढ़े में उतरकर उन बच्चों को निकालना कठिन काम था; क्योंकि गढ़ा करीब आठ हाथ गहरा था, इसके चारों तरफ सपाट पत्थर थे।

मैंने उस गढ़े में उतरने की बहुत कोशिश की; पर उतर न सका। अन्त में जब गढ़े के ऊपर की तरफ मैंने देखा तब एक पेड़ की डाल गढ़े की तरफ झुकी हुई देख पड़ी। उसी डाल को पकड़कर गढ़े में उतरना निश्चित किया। बंदूक को वहीं चट्टान पर रखकर मैं उस पेड़ पर चढ़ा। गढ़े की तरफ झुकी हुई डाल पर जाते ही वह डाल गढ़े के भीतर आधी दूर तक झुक गई। इससे मैं आसानी से उस गढ़े में उतर गया।

मेरे उतरते ही वे बच्चे मुझे अपनी माँ समझकर भीतर के एक कोने से मेरे पास चले आये। बच्चे बिलकुल अज्ञान थे। बच्चों के मेरे पास आते ही मैंने अपना कोट उतारकर उन दोनों को उसमें बाँध लिया और बाहर निकलने के लिये खड़ा हुआ।

अब जो मैं उस डाल को देखता हूँ—जिससे भीतर गया था—तो वह अपने पूर्व स्थान को चली गई थी! मेरे बोझ के कारण गढ़े की तरफ झुककर उसने मुझे गढ़े में नीचे उतार दिया और आप ऊपर चली गई—उसने मुझे धोखा दिया!

गढ़े से बाहर आने के लिये मैंने अनेक उपाय किये; पर सभी निष्फल हुए। तब मैं एकदम डर गया। यद्यपि मैं निर्भीक और पुराना शिकारी हूँ तथापि मृत्यु का स्मरण करके भला किसे डर

न लगेगा ? मेरा कलेजा दहलने लगा और दम जल्दी-जल्दी चलने लगा।

शेरनी के बच्चे बहुत छोटे थे; पर कोट में बँध जाने से वे गुर्र-गुर्र करने लगे। उन्हें छटपटाते देख मैंने उनको एक कोने में ढकेल दिया और रोकने के लिये उनके रास्ते में कोट रख दिया; क्योंकि गुर्राने के सिवा मुझे नोचने भी लगे थे।

वहीं पड़े-पड़े किसी तरह दिन के चार बजे ! इतने में कुछ आवाज-सी सुन पड़ी। मैं समझ गया कि शेरनी आ रही है। तब मैं चुपचाप बैठ रहा। शेरनी गुर्राती हुई आई। आते ही वह गढ़े के अन्दर न देख, बल्कि गढ़े की तरफ पूँछ करके ऊपर ही उस बंदूक को जिसे मैं एक पत्थर पर रख आया था—देखने और गुर्राने लगी। सूर्य की किरणों के पड़ने से बंदूक में लगे हुए चमकीले पट्टे चमक रहे थे। इसीसे वह उस बंदूक को गौर से देख रही थी और मेरी तरफ पूँछ भी हिलाती जाती थी।

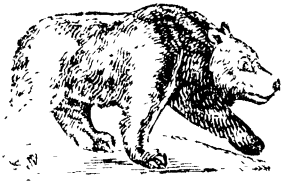
उस समय की अपनी हालत का मै वर्णन नहीं कर सकता; पाठक स्वयं उसका अनुमान कर लें। पर मैं किसी बात को देखते ही एकदम घबरानेवाला भी नहीं हूँ। उस समय मुझमें एक अद्भुत जोश आ गया। उस जोश में मैंने शेरनी की पूँछ—जो गढ़े में लटक रही थी—सावधानी के साथ खूब मजबूती से पकड़ ली। पूँछ के पकड़ते ही शेरनी घबराहट के मारे जोर से उछली। उसके उछलते ही मैं अपनी बंदूक के पास ऊपर जा गिरा। गिरते

ही झटपट उठकर और बंदूक हाथ में लेकर मैंने शेरनी पर गोली चलाई, क्योंकि वह मेरे ऊपर झपटने को ही थी।

बस, मेरी एक गोली ने ही शेरनी का काम तमाम कर दिया। शेरनी तड़पने लगी और मैं दीर्घ साँस लेता हुआ चट्टान पर बैठ गया। कुछ देर में वह मर गई तब उसे मैं वहीं छोड़कर अपने घर आया।

सवेरा होते ही मैं साहब के बँगले पर पहुँचा। साहब मुझे देखते ही दौड़ आये। साहब से मैंने अपनी कुल कहानी कह सुनायी। तब साहब बहादुर ने खुद मौके पर जाकर सब बातें देखीं और मेरी बहुत तारीफ की। शेरनी के बच्चे सीढ़ी से बाहर निकल गये। साहब ने उन्हें विलायत भेजा।

इस बहादुरी के लिये सरकार से, साहब से और उन विलायत के साहब से भी, मुझे बहुत-कुछ इनाम मिला।



बदमाश हाथी

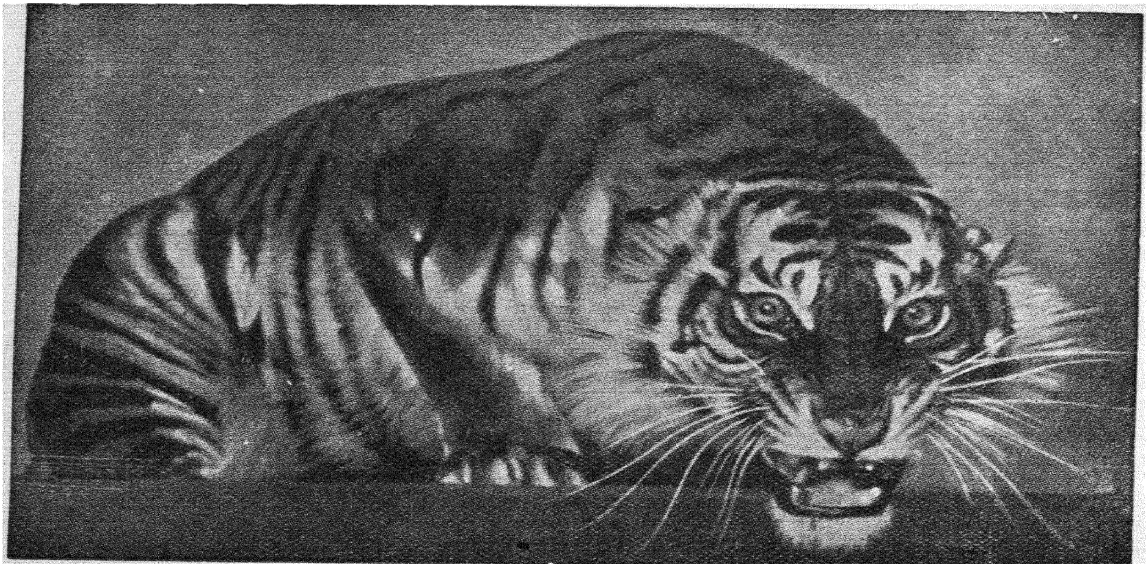
संयुक्तप्रान्त के गोरखपुर जिले से ५० मील की दूरी पर 'रामपुर' नामक एक रियासत है। कई साल पहले की बात है, मिस्टर किङ्ग नामक एक अँगरेज अफसर इस रियासत का इन्तजाम करने के लिये मैनेजर नियुक्त हुए। वे बड़े मुस्तैद आदमी थे। रियासतों के इन्तजाम का उन्हें यथेष्ट अनुभव था।

रियासत का इन्तजाम हाथ में लेते ही उन्होंने हिसाब-किताब की जाँच की। उन सब विभागों को, जिनसे रियासत की आमदनी होती थी, अच्छी तरह देखा। उनको मालूम हुआ कि रियासत को लकड़ियों के जंगल से भी बहुत बड़ी आमदना है।

इन जंगलों से हर साल उम्दा लकड़ियाँ काटी जाती थीं और हजारों आदमी इस काम पर नौकर थे। लकड़ियों को नदी किनारे ले जाने का काम हाथियों से लिया जाता था। इसी वास्ते रियासत में बहुत से हाथी रक्खे हुए थे।



बिगड़ैल बनैला हाथी



जंगल में दंगल मचानेवाला !

हाथियों के इस गिरोह में—जो लकड़ियाँ ढोने का काम करते थे—एक अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट और मोटा-ताजा हाथी भी था, जो कद में १० फुट ऊँचा था।

मिस्टर किङ्ग को मालूम हुआ कि उस हाथी से कोई काम नहीं लिया जाता और बरसों निठल्ला बैठकर उत्तम चारा खाने के कारण वह खूब मोटा-ताजा हो रहा है।

उस हाथी से काम न लिये जाने का कारण जब महावत से पूछा गया तब उसने जवाब दिया—"यह हाथी इतना बदमाश है कि इससे किसी प्रकार का काम लेना असम्भव है।"

मिस्टर किङ्ग को अक्सर रियासतों में हाथियों से काम पड़ा था। उन्हें महावत की इस बात पर विश्वास न हुआ। उन्होंने सोचा कि इस बात में स्वयं महावत की कोई शरारत है जो उस हाथी से काम नहीं लेता।

उन्होंने महावत को बहुत फटकारा और बुरा-भला कहा। लेकिन महावत उस बदमाश हाथी को काम पर लगाने के लिये किसी तरह राजी न हुआ। अतएव वह बरखास्त कर दिया गया।

उसकी जगह दूसरा फीलवान मुकर्रर हुआ। नये फीलवान ने उस हाथी को पहले ही दिन काम पर जोत दिया।

जो हाथी बरसों निठल्ला बैठकर मजे उड़ाता रहा, अब लकड़ियाँ खींचकर नदी-किनारे ले जाने लगा। इस तरह सुख के दिन बीतकर मुसीबत की घड़ियाँ उसके सिर आ पहुँचीं।

जब सब प्रबन्ध ठीक हो गया, बूढ़े शिकारी ने रामपुर आकर मैनेजर साहब को सूचित किया कि आप स्वयं चलकर सब काम देख लें—यदि हमारे प्रबन्ध में किसी प्रकार की त्रुटि रह गई होगी तो आपके शिकारी दोस्तों के पहुँचने से पहले ही दूर कर दी जायगी।

मैनेजर साहब एक हाथी पर सवार होकर तुरन्त जंगल की तरफ चल खड़े हुए और अपने डेरे पर पहुँच गये।

जिस जगह यह शिकारी-कैम्प लगाया गया था, उसके निकट ही पेड़ों से घिरे हुए एक स्थान पर रियासत के बहुत-से हाथी खड़े थे, ताकि आवश्यकता होने पर शेर के शिकार में इनसे काम लिया जाय। वह जगह, जहाँ शिकार के लिये मचान बनवाई गई थी, इस कैम्प से लगभग दो मील के फासले पर थी।

मैनेजर साहब ने मचान देखने की इच्छा प्रकट की। एक हाथी मैनेजर साहब को मचान पर पहुँचाने के लिये चुना गया। संयोग की बात, यह वही बदमाश हाथी था जो मैनेजर साहब के हुक्म से जबरदस्ती काम पर लगाया गया था! आज वह बिल-कुल बकरी के बच्चे की तरह सीधा और शान्त मालूम होता था। मैनेजर साहब के सामने झुककर खड़ा हो गया और बूढ़े शिकारी समेत तीनों आदमी उस हाथी पर सवार हो गये।

जंगल में पहुँचकर मैनेजर साहब ने मचान को देखा। बहुत खुश हुए। फिर उसी जगह वापस आये जहाँ महावत सवारी का

खुद मैनेजर साहब उस हाथी के सामने खड़े होकर महावत को हुक्म दिया करते थे कि उस हाथी से खूब काम लिया करो। वह बुद्धिमान् हाथी इस नये परिवर्त्तन का कारण अच्छी तरह समझ गया था। वह बिना किसी हुज्जत के काम पर लग जाता था।

जिस समय मैनेजर साहब उस हाथी के सामने आते, वह उन्हें क्रोध भरी दृष्टि से देखता था। ऐसा मालूम होता था कि वह एक-न-एक दिन जरूर मैनेजर साहब से इस जुल्म का बदला लेकर रहेगा।

हाथी बराबर अपने शत्रु से बदला लेने की प्रतीक्षा में रहने लगा। लेकिन बहुत दिनों तक उसकी इच्छा पूरी होने का अवसर न आया।

एक साल बाद। मार्च का महीना था। शरद-ऋतु समाप्त होकर बसन्त का आगमन हुआ था। मैनेजर साहब के कुछ अँगरेज दोस्त रियासत में शिकार खेलने के लिये आनेवाले थे। उस जंगल में शेर, चीते आदि बहुत-से हिंसक जानवर हैं। रियासत के एक बूढ़े शिकारी को हुक्म दिया गया कि यह इन अँगरेजों को शेर का शिकार खेलाने के लिये जंगल में मचान आदि बँधवाने का प्रबन्ध करे।

बूढ़े शिकारी ने जंगल में पहुँच कर इन्तजाम करना शुरू किया। एक बहुत मजबूत मचान बँधवाई। साफ सुथरी जगह पर मैनेजर साहब के लिये डेरा लगवा दिया। उससे दो सौ गज के फासले पर दूसरे अँगरेजों के लिये तम्बू खड़े किये गये।

जब सब प्रबन्ध ठीक हो गया, बूढ़े शिकारी ने रामपुर आकर मैनेजर साहब को सूचित किया कि आप स्वयं चलकर सब काम देख लें—यदि हमारे प्रबन्ध में किसी प्रकार की त्रुटि रह गई होगी तो आपके शिकारी दोस्तों के पहुँचने से पहले ही दूर कर दी जायगी।

मैनेजर साहब एक हाथी पर सवार होकर तुरन्त जंगल की तरफ चल खड़े हुए और अपने डेरे पर पहुंच गये।

जिस जगह यह शिकारी-कैम्प लगाया गया था, उसके निकट ही पेड़ों से घिरे हुए एक स्थान पर रियासत के बहुत-से हाथी खड़े थे, ताकि आवश्यकता होने पर शेर के शिकार में इनसे काम लिया जाय। वह जगह, जहाँ शिकार के लिये मचान बनवाई गई थी, इस कैम्प से लगभग दो मील के फासले पर थी।

मैनेजर साहब ने मचान देखने की इच्छा प्रकट की। एक हाथी मैनेजर साहब को मचान पर पहुंचाने के लिये चुना गया। संयोग की बात, यह वही बदमाश हाथी था जो मैनेजर साहब के हुक्म से जबरदस्ती काम पर लगाया गया था। आज वह बिलकुल बकरी के बच्चे की तरह सीधा और शान्त मालूम होता था। मैनेजर साहब के सामने झुककर खड़ा हो गया और बूढ़े शिकारी समेत तीनों आदमी उस हाथी पर सवार हो गये।

जंगल में पहुँचकर मैनेजर साहब ने मचान को देखा। बहुत खुश हुए। फिर उसी जगह वापस आये जहाँ महावत सवारी का

हाथी लिये खड़ा था। इस समय रात हो चुकी थी। मैनेजर ने महावत को हुक्म दिया कि हाथी को बैठा दो ताकि सवार होकर जल्द डेरे पर पहुँच जाय।

महावत ने हाथी को बैठाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसने इस आज्ञा की कोई भी परवा न की। उस मक्कार जानवर को सब पिछली बातें याद थीं। बदला लेने का अच्छा मौका देखकर क्रोध से भर गया, अपनी सूँड़ उठाकर मैनेजर की तरफ झपटा। उन्हें पकड़कर ऊपर उठा लिया और एक कटे हुए दरख्त की जड़ से दे मारा। फिर दाँतों से उनके शरीर पर चोटें मारने लगा। महावत ने हाथी को वश में लाने के लिये बहुत कोशिशें कीं—अंकुश-पर-अंकुश मारे; परन्तु हाथी पर कुछ भी असर न पड़ा! महावत के सब प्रयत्न निरर्थक गये।

हाथी को जब यह विश्वास हो गया कि मैनेजर मर गया है, उसने बड़ा ही भयानक रूप धारण किया। कूदता-फाँदता जंगल की ओर भाग निकला। महावत अब भी उसकी गरदन पर बैठा हुआ था; मगर उसे अपनी जान बचानी मुश्किल हो रही थी। जैसे ही हाथी एक पेड़ के नीचे से गुजरा, महावत पेड़ की एक टहनी पकड़कर ऊपर लटक गया।

बूढ़े शिकारी ने यह दुर्घटना अपनी आँखों देखी। वह मैनेजर के पास आया। उनके शरीर को गोद में रखकर होश में लाने की कोशिश करने लगा। नौकर से पानी मँगाकर उनके मुँह और सिर

पर डाला। उनके सिर और पसलियों में कड़ी चोट आई थी। एक पैर का घुटना बिलकुल टूट गया था।

मैनेजर को बहुत देर बाद कुछ होश आया। उन्होंने बड़ी कठिनता से बूढ़े शिकारी से कहा—"नौकर को डेरे पर भेजकर थोड़ी शराब और एक खाट मँगाओ, और मुझे किसी तरह डेरे पर ले चलो।"

नौकर भटकता हुआ किसी तरह डेरे पर पहुँचा। बहुत देर बाद हाथ में लालटेन लिये हुए कुछ आदमियों की सूरतें दिखाई दीं। उनके साथ एक खाट भी थी। जरा-सी ब्रांडी पिलाकर बड़ी सावधानी से साहब खाट पर लिटाये गये। फिर बड़ी मुश्किल से डेरे पर लाये गये।

मैनेजर साहब को हाथियों के स्वभाव का यथेष्ट अनुभव था। जब उन्हें फिर कुछ होश हुआ और डेरे पर पहुँचने की बात मालूम हुई, उन्होंने नौकरों से कहा—"सम्भव है, वह बदमाश हाथी फिर घटनास्थल पर पहुँचे और वहाँ मेरी लाश न पाकर फिर कैम्प की तरफ दौड़ आवे तथा मेरे ऊपर हमला करे, क्योंकि जैसा अनुभव हो चुका है—वह हाथी बड़ा बुद्धिमान और धूर्त्त है—मुझसे बदला लेने के लिये उसके हृदय में आग भड़क रही है, इस वास्ते मुझे इस डेरे में न रक्खो, बल्कि दूसरे शिकारियों के कैम्प में ले चलो, और उस डेरे पर तथा मेरे कैम्प पर पहरे का अच्छा

प्रबंध कर दो; पहरेदारों को समझा देना कि वह बदमाश हाथी यदि इस डेरे पर आवे तो तुरन्त पेड़ों पर चढ़ जायँ।"

यह कहने के बाद साहब बहादुर फिर बेहोश हो गये।

दो आदमी इस डेरे पर पहरा देने के लिये छोड़े गये। बाकी सब आदमी साहब बहादुर को लेकर दूसरे कैम्प में चले गये।

मैनेजर साहब का ख्याल ठीक निकला। इन लोगों को गये अभी दो घंटे भी नहीं हुए थे कि मस्त हाथी की भयानक गर्जना सुनाई दी। वह मैनेजर के डेरे की तरफ भागा आ रहा था। पहरेदार तुरंत पेड़ों पर चढ़ गये। हाथी ने आते ही मैनेजर के डेरे को उखाड़ना आरंभ किया और थोड़ी देर में सब चीजों को तोड़-फोड़ पैरों से रौंद डाला। फिर चिंघाड़ मारता हुआ जंगल की ओर भाग गया।

दिन निकलते ही दो घुड़सवार, डाक्टरों को बुलाने और इस दुर्घटना की सूचना देने के लिये, रामपुर भेजे गये। दस बजे के लगभग डाक्टर और रियासत के बड़े-बड़े अफसर कैम्प में पहुँचे। डाक्टर अपने काम में बड़ा चतुर था। उसने फौरन मैनेजर को बेहोशी की दवा सुँघाकर सब टूटी हुई हड्डियाँ जोड़-कर पट्टी बाँध दी; ताकत की दवा के साथ कुछ दूध भी पिलाया।

जब कुछ तकलीफ कम हुई, बेहोशी दूर हो गई और जीवन की आशा बँध गई; मैनेजर साहब जी कड़ा करके बोले—अब मुझे उम्मीद है कि आगामी घुड़दौड़ में एक बार फिर हिस्सा ले सकूँगा।

परन्तु, डाक्टर को उनके जीवन की कुछ भी आशा नहीं थी ! इन्हें मालूम था कि घायल अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा है। इन्हें तो इसी बात पर आश्चर्य था कि इतनी प्राण-घातक चोट लगने के बाद भी घायल अबतक कैसे जीवित है।

डाक्टर का खयाल ठीक निकला। अगले ही दिन शाम को मैनेजर की मृत्यु हो गई।

मैनेजर के सम्बन्धियों तथा मित्रों के पास पहले ही तार दे दिये गये थे। गोरखपुर का कलक्टर, जो मैनेजर का मित्र था, अगले दिन सुबह को पहुँच गया। लेकिन उनके बड़े भाई मिस्टर एफ० एस० यंग, जो उस समय पटने में इंजीनियर थे, अगले दिन शाम को—अपने भाई की मृत्यु के पन्द्रह मिनट बाद—पहुँचे ! इस बात का उन्हें बड़ा ही शोक हुआ। उन्होंने यह हृदय-विदारक घटना स्वयं लिखकर एक अँगरेजी मासिक पत्र में छपाई। उनका कथन है कि इसका एक-एक अक्षर सत्य है।

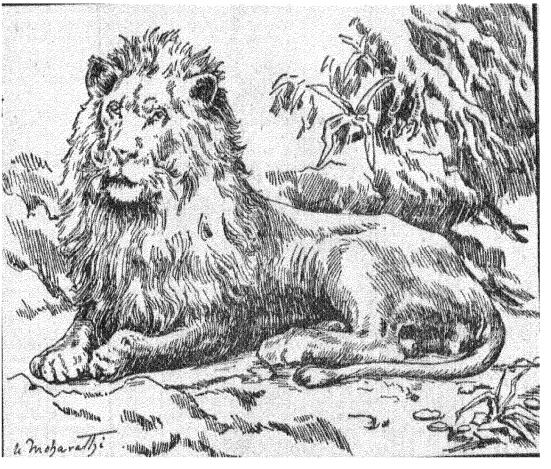
मैनेजर का मृतक शरीर गोरखपुर लाया गया और बहुत से योरोपियनों और बड़े-बड़े हिन्दुस्तानियों की मौजूदगी में योरोपियन कब्रिस्तान में दफनाया गया। इस प्रकार इस हृदय-द्रावक दृश्य का अन्त हुआ। वह कब्र अब तक गोरखपुर में मौजूद है। उसपर शिलालेख लगा हुआ है।

हाँ, हाथी कई दिनों तक कूदता-फाँदता जंगल में फिरता रहा। परन्तु, जब उसके पकड़ने के लिये बहुत ज्यादा इनाम बोला गया,

तब कुछ बहादुर महावतों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। वह जंजीरों से जकड़कर पेड़ों से बाँध दिया गया। अब यह तजवीज हुई कि उसे गोली मार दी जाय जिससे भविष्य में कोई दुर्घटना न हो; लेकिन इस काम के लिये नाबालिग राजकुमार की माता से आज्ञा लेनी जरूरी थी। जब उनसे पूछा गया, वे राजी न हुईं। बोली—"यद्यपि मुझे मिस्टर किङ्ग की मृत्यु का बड़ा ही दुःख है तथापि उस हाथी के मरवा देने में भी दिल कुढ़ता है। अभी थोड़े दिन में मेरी पुत्री का विवाह होनेवाला है। वह दहेज में दिया जायगा। इस प्रकार उसकी जान भी बच जायगी और रियासत को भी उससे छुटकारा मिल जायगा।"

उस समय तो यह हाथी बच गया, परन्तु पीछे मालूम हुआ कि राजकुमारी की ससुराल में पहुँचकर भी उसने दो आदमियों को मौत के घाट उतार दिये। वहाँ वह गोली से मार डाला गया।

———



जंगल का राजा !



नरव्याघ्र अब्दुल हमीद
[पृष्ठ २४]

नरव्याघ्र अब्दुल हमीद

अब्दुल हमीद एक बहादुर पठान हैं। वे भारतवर्ष के रहने-वाले हैं। इस समय पूर्वी अफ्रिका में सरकारी नौकरी करते हैं। उन्होंने सितम्बर, सन् १६२६ ई० तक १२० शेर मारे थे। इस बात को अब (सन् १६४२ ई० में) सोलह वर्ष हो चुके हैं। सम्भव है, इस लंबे अरसे में दस-बीस और भी मार दिये हों।

बड़ी तारीफ की बात है कि ये सब शेर हाथी या मचान पर चढ़कर नहीं मारे गये, बल्कि उन्होंने अधिकांश पैदल ही—शेरों के मुकाबले में खड़े होकर—मारे हैं। कुछ शेर तो पेड़ पर चढ़-कर, गड्ढे में बैठकर मारे हैं।

यदि कोई योरप-निवासी इतने शेर मार देता तो सारी दुनिया में धूम मच जाती; बड़े-बड़े बादशाह उससे हाथ मिलाते। पर अब्दुल हमीद का नाम कोई हिन्दुस्तान में भी नहीं जानता!

कारण यह है कि वे गुलाम देश के रहनेवाले हैं। हम गुलाम लोग अपने वीरों की कद्र करना नहीं जानते।

हिन्दीभाषा के सुप्रसिद्ध लेखक और प्रवासी भारतवासियों के हितैषी श्रीबनारसीदासजी चतुर्वेदी जिस समय भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू के साथ अफ्रिका गये थे, आपने अब्दुल हमीद साहब के साथ भेंट की थी। आपने इस सम्बन्ध में एक लेख लखनऊ की सचित्र मासिक पत्रिका 'माधुरी' में छपाया था। उसी लेख का सारांश नीचे लिखा जाता है—

'नैरोवी' ❀ (पूर्वी अफ्रिका) के एक गोआ-निवासी डाक्टर 'डि-सोजा' ने श्रीमती सरोजिनी देवी को एक भोज दिया था। डाक्टर साहब ने मांस न खानेवाले मेहमानों के लिये एक मेज अलग रखवा दी थी। इसी मेज पर एक सिक्ख महाशय के साथ मैं

❀ Nairobi—केनिया-प्रान्त की राजधानी है। युगांडा-रेलवे के किनारे, 'मोम्बासा' नगर से ३२७ मील दूर लगभग ५०० फुट ऊँची भूमि पर बसा हुआ है। जलवायु स्वास्थ्यप्रद है।

† East Africa—अफ्रिका महाद्वीप के पूर्वी भाग को 'ईस्ट अफ्रिका' कहते हैं। इसमें तीन बृटिश उपनिवेश हैं—युगांडा, जजीबार और केनिया। सन् १९१४-१८ के यूरोपीय महायुद्ध के समय 'जर्मन ईस्ट अफ्रिका' नामक प्रदेश भी जीत कर इसी में सम्मिलित कर लिया गया, जिसका नाम अब 'टंगानिका' है। पूर्वी अफ्रिका में पोर्तुगीजों का भी एक अधिकृत प्रदेश है जो किसी समय 'मोजाम्बिक' कहा जाता था।

(चतुर्वेदीजी) भी बैठा हुआ था। केनिया * की सरकार के खुफिया-विभाग से इन सिक्ख महाशय का सम्बन्ध था; पर यह थे बड़े भले आदमी।

अफ्रिका के शेरों के विषय में बातचीत चल पड़ी। मैंने उन सिक्ख सज्जन से पूछा—"क्या आपने लेफ्टिनेंट कर्नल पैटर्सन की मशहूर किताब 'सावो के मनुष्य-भक्षक' (Man eaters of Tsavo)पढ़ी है, जिसमें उन्होंने शेरों के शिकार का हाल लिखा है ?"

सिक्ख साहब ने उत्तर दिया—'ये शिकारी लोग तो अब

---

* केनिया पूर्वी अफ्रिका में एक बृटिश-रक्षित उपनिवेश है। इसका विस्तार २२४६० वर्गमील में है। भारतीय महासागर के किनारे यह ६०० मील में विस्तृत है। टंगानिका, सुडान, अबिसीनिया और इटालियन सोमाली-लैंड से इसकी सीमा लगी हुई है। यह पहाड़ी प्रदेश है। केनिया-पर्वत १७००० फुट ऊँचा है। ताना, जुमा, उम्बा आदि प्रधान नदियों के सिवा कई झीलें भी हैं। मोम्बासा सबसे बड़ा नगर है। मोम्बासा और किलिडिनी नामक दो बन्दरगाह समुद्र-तट पर हैं। विक्टोरिया-झील के तट पर भी दिसम् नामक बन्दरगाह है। जमीन उपजाऊ है। कहवा, रुई, रबर, मकई आदि की पैदावार अच्छी होती है। भेड़ और शुतुर्मुर्ग बहुत पाले जाते हैं। घने जंगल भी बहुत हैं। हिन्दुस्तानी और अरबी लोग काफी संख्या में रहते हैं। सन् १६३१ की मनुष्य गणना के अनुसार जनसंख्या ३०४०६६० है जिसमें १६८०० योरोपियन थे।

केनिया में रहे नहीं, हिन्दुस्तान को लौट गये। हाँ, एक 'अब्दुल हमीद' नाम का पठान है जिसने अकेले ही १२० शेर मारे हैं।"

मैंने कहा—"सरदारजी, आप मुझे उनसे जरूर मिलाइये। वह रहते कहाँ हैं और क्या करते हैं?"

सरदारजी बोले—"वह 'सुल्तान हमूद' नाम के स्टेशन पर इन्सपेक्टर हैं। यह स्टेशन यहाँ से कोई पाँच घंटे की रेल-यात्रा के बाद पड़ता है।"

मैंने 'सुल्तान हमूद' जाने का निश्चय कर लिया।

इस भोज के दो-तीन दिन बाद एक हृष्ट-पुष्ट आदमी मुझसे मिलने के लिये आया। नाम पूछा, तो मालूम हुआ कि आप ही अब्दुल हमीद हैं! किसी विशेष कार्य के लिये आप नैरोबी आये हुए थे और उन सिक्ख महाशय ने मेरे पास आने के लिये कह दिया था।

अब्दुल हमीद को मैंने बिठलाया और बहुत देर तक बात-चीत की। इसके बाद मैंने स्वयं 'सुल्तान हमूद'—स्टेशन की यात्रा की। लगभग एक दिन उनके साथ रहा। मैंने उनसे कहा—"आप अपना सब हाल मुझे बतलाइये। मैं हिन्दुस्तानी अखबारों में आपके बारे में लिखूँगा।"

मेरे विशेष आग्रह करने पर अब्दुल हमीद ने मेरे सवालों का जवाब देना मंजूर कर लिया। यह लेख उन्हीं जवाबों का क्रमबद्ध विवरण है।

अब्दुल हमीद का जन्म सीमांत-प्रदेश के जिले 'हजारा' के 'इच्छड़िया' नामक ग्राम में हुआ था। उस वक्त आपकी उम्र करीब चालीस साल के होगी। सन् १६०० में आप बारह रुपये महीने और खुराक पर कुलीगीरी करने के लिये पूर्वी अफ्रिका गये थे। आज आपकी तनख्वाह ३८० शिलिङ्ग माहवार है जो आपकी ईमानदारी और मिहनत का फल है।

आपमें काफी नम्रता है, घमंड तो आपको छू भी नहीं गया। अफ्रिका के सैकड़ों भयंकर जंगली जानवरों का आपने बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया; पर इन शिकारों का हाल आप इतनी सादगी से बतलाते हैं—मानों आपको इनमें कुछ परिश्रम या वीरता की आवश्यकता ही न पड़ी हो।

आपने अब तक लगभग सवा सौ अफ्रिका के सिंहों का शिकार किया है। वह कोई थोड़ी संख्या नहीं है। मुझे तो इसी बात में संदेह है कि किसी दूसरे आदमी ने इतनी कठिनाइयों का सामना करते हुए अकेले ही इतने शेर मारे होंगे।

मैंने आपसे कहा—"आप मुझे बतलाइये कि आपका पहला मुकाबला अफ्रिका के किस जंगली जानवर के साथ कैसे हुआ?"

आपने जवाब दिया—सन् १६०५ ई० की बात है। मजदूरों के साथ मैं युगांडा* रेलवे पर काम कर रहा था। इतने में एक

युगांडा—पूर्वी अफ्रिका का बृटिश उपनिवेश है। इसका विस्तार ६४२०४ वर्गमील में है। सन् १६३१ में यहाँ की जनसंख्या

'सोहाली' (अफ्रिका का आदिम निवासी) भागता हुआ आया और बोला—"सिंबा ! सिंबा !" मैं नहीं समझ सका कि वह क्या कह रहा है। वह कुछ टूटी-फूटी उर्दू भी जानता था। जब उसने उर्दू में मुझे समझाया, मैं समझ गया कि वह शेर या चीते के बारे में कुछ कह रहा है। पन्द्रह-बीस आदमियों के साथ मैं उस तरफ गया तो देखा, लाइन से पचीस-तीस गज की दूरी पर एक चीता पड़ा हुआ है और पास ही एक आधा खाया हुआ हिरन भी। पानी का गढ़ा नजदीक ही था, मेरे साथ के कुछ आदमियों ने कहा—अरे ! यह तो मरा हुआ पड़ा है। मेरे पास उस वक्त कोई हथियार भी न था। हाँ, मेरे साथियों में से किसी-किसी के पास एक-आध लकड़ी जरूर थी। इस मौके पर एक आदमी को बेवकूफी सूझी; उसने यह जानने के लिये कि चीता मरा हुआ है या जिन्दा, एक पत्थर फेंककर उसे मारा। वह भड़-भड़ाकर उठा और हमलोगों की ओर लपका। हमारी लाइन सात-आठ गज की ऊँचाई पर था। पर उसने एक ही छलाँग में इसे पार कर लिया। उसके पंजे मेरे कोट पर आकर पड़े। मेरे साथी डर के मारे पीछे भाग गये। उस वक्त मैंने एक होशियारी की। जल्दी

३५५३ ३४ थी। 'कम्पाल' यहाँ की राजधानी है। विक्टोरिया, अलबर्ट न्यांजा, रुडल्फ आदि झीलें प्रसिद्ध हैं। हाथी-दाँत, काफी, चमड़ा, रुई, रबर, ईख आदि की पैदावार अच्छी होती है। ये चीजें बाहर भी चालान की जाती हैं। खूब हराभरा प्रदेश है। जंगल अभी तक बहुत है जिनमें शेर, जेबरा, जिराफ, हाथी आदि जंगली जानवर काफी संख्या में पाये जाते हैं। शिकारियों के लिये अच्छी जगह है।

से पीछे घूमकर उस चीते की गरदन दोनों हाथों में जोर के साथ पकड़ ली। करीब आध घंटे तक हम दोनों झगड़ते रहे। पर डर के मारे मैंने उस चीते की गरदन न छोड़ी। उसने मेरे शरीर को पंजों से लहू-लुहान कर दिया। मेरे साथी सब भाग गये थे—दो-एक पास के लट्ठों पर चढ़ गये थे। आध घंटे तक मैं उसकी पीठ पर बैठा रहा। उसी वक्त एक इन्सपेक्टर रेल की लाइन पर निकला। मेरी हालत देखकर उसे ताज्जुब हुआ। उसने कहा, तुम इस चीते को छोड़ दो। मेरे मुँह से उस वक्त आवाज भी न निकला। बड़ी हिम्मत करके मैंने कहा—यह जिन्दा है, यदि मैं छोड़ दूँगा तो यह मुझे खा जायगा। इन्सपेक्टर बोला, तुम इसे छोड़कर भागो, अगर यह तुम्हारा पीछा करेगा तो मैं इसे फौरन ही बंदूक से मार दूँगा। मैं उस चीते को छोड़कर भागा। पर वह अपनी जगह से उठा ही नहीं—दम घुटकर उसकी जान निकल गई थी! इन्सपेक्टर ने मेरी पीठ ठोकी। उस वक्त मेरे सब कपड़े फटे हुए थे। मैं बिलकुल नंगा था। वह इंसपेक्टर मुझे अपने कमरे में ले गया और अपने पास से मुझे कपड़े दिये।

मैं—"आपने पहली बार शेर कब मारा था?"

अब्दुल हमीद ने कहा—"यह तो मैं आपको ठीक-ठीक नहीं बतला सकता, लेकिन इतना मुझे जरूर याद है कि उन दिनों मैं जमादार था। सवेरे सात बजे थे। करीब पचास कदम पर मेरे सामने ही लाइन पर एक शेर खड़ा था। मैंने निशाना ठीक

करके एक गोली मारी, जो उसकी छाती में लगी। वह बड़े जोर से गरज कर उछला और गिरकर मर गया।"

मैंने पूछा—"आपके पास बंदूक कौन-सी है?"

अब्दुल हमीद ने कहा—"मेरे पास ३०३ नम्बर की बंदूक है। इसे मैंने सत्रह साल पहले खरीदा था। इसकी गोली बिलकुल बारीक है। अब सरकार मुझे अच्छी बंदूक खरीदने की इजाजत न देगी; क्योंकि सरकारी अफसरों को इस बात का डर है कि कहीं ज्यादा शिकार मारकर मैं शिकार कम न कर दूँ। जब किसी साहब के पास मैं अच्छी बंदूक देखता हूँ तब कहने लगता हूँ, काश कहीं यह बंदूक मेरे पास होती!"

मैंने कहा—"आपने अबतक कितने जंगली जानवरों का शिकार किया है?"

अब्दुल हमीद ने कहा—"मैंने अबतक १२० शेर मारे हैं। इनके सिवा २५ चीते और एक हाथी भी। गैंड़ों की मैंने कोई गिनती अपने पास नहीं रक्खी। जंगली भैंसे भी बहुत से मारे हैं। पहले तो लैसंस लेने की कोई जरूरत न थी; हर आदमी मनचाहा शिकार खेल सकता था। ये सब मैंने उसी पुरानी बंदूक से, जो सामने कोने में रक्खी हुई है, मारे हैं।"

मैंने कहा—"इन शिकारों में तो आपकी जान कई बार खतरे में पड़ गई होगी?"

अब्दुल हमीद ने कहा—"हाँ, कितनी बार! एक बार तो

एक जंगली भैंसे ने मेरा काम ही तमाम कर दिया था। इतवार का दिन था। करीब बारह बजे कुछ किसान मेरे पास आकर बोले—'दो जंगली भैंसे हमारे खेतों में घुस आये हैं, उन्होंने हमारी फसल भी खराब कर दी है और हमारा मकान भी गिरा दिया है, आप ही हमें इनसे बचा सकते हैं। बस, एक योरोपियन गार्ड और कुछ अफ्रिकन आदमियों को साथ लेकर मैं वहाँ पहुँचा। देखा, तो वहाँ भैंसों के पाँवों के निशान बने हुए हैं। हमलोग उन्हीं निशानों के सहारे आगे बढ़े। नजदीक ही जंगल में एक भैंसा पड़ा हुआ था। मैंने साहब से कहा—'आप यहीं खड़े रहिये, मैं दरख्त पर चढ़कर फायर करूँगा। उसके शोर से जब वह बाहर निकले, तब उसे आप अपनी गोली का निशाना बनाइये।' जब मैं दरख्त पर चढ़ने लगा, मेरे चढ़ने की आवाज से वह भैंसा जो पास ही जंगल में पड़ा था, चौकन्ना हो गया और मैदान की तरफ भागा। मैं दरख्त से उतर पड़ा। बंदूक उठाकर उसका पीछा किया। साहब भी साथ ही थे। साहब ने उस भागते हुए भैंसे पर तीन गोलियाँ चलाईं और मैंने दो। हमारा अन्दाज था कि इन पाँच गोलियों में से एक-आध उसके जरूर ही लगी होगी। साहब ने कहा—'तुम इसके पीछे जाओ, हम एक मील आगे जाकर इसे रोकेंगे।' मैं उसके पैरों के निशानों पर आगे बढ़ा तो एक जंगल मिला। मुझे इस बात का शक था कि कहीं वह भैंसा आगे बढ़ कर, मुड़कर और घूमकर उसी जगह न पहुँच गया हो। मैं

उसके निशानों के पीछे-पीछे जा रहा था। ज्योंही मैंने झुककर देखा, वह पीछे की तरफ खड़ा था। उसने मुझपर एकाएक हमला किया। मैं फौरन् जमीन पर लोट गया; इसलिये उसका हमला खाली चला गया—वह जोर के साथ आगे निकल गया। पीछे लौटकर वह फिर आया। उस वक्त तक मैं सँभल गया था। बिलकुल नजदीक से मैंने उसको दो गोलियाँ मारी। उसने फिर भी हमला किया और मुझे गिरा दिया। फिर वह हटकर थोड़ी दूर पर खड़ा हो गया, मैं यह देखकर भागा। उसने पीछे से आकर टक्कर दी और फिर पाँव लगाकर मुझे फेंका तो मैं पास की झाड़ी में जा गिरा। मेरा सिर नीचे था और पैर ऊपर! फिर उसने अपने सिर से टक्कर दी जिससे मैं बेहोश हो गया। होश आने पर देखा तो एक तरफ मैं पड़ा हूँ और दूसरी तरफ वह भैंसा। मेरी दोनों गोलियाँ काम कर चुकी थीं। वह भैंसा मर रहा था। वह अपनी दुम हिला रहा था। वह दुम मेरी पीठ पर आकर लगती थी—इसलिये मुझे शक था कि यह अब भी उठ सकता है। मैं उठकर भागा। सामने एक पेड़ था। उसकी टक्कर लगी। मैं गिर पड़ा। थोड़ी देर में देखा तो वह भैंसा बिलकुल मरा पड़ा है।"

मैं—"आपने ज्यादा-से-ज्यादा कितने शेर एक बार मारे हैं?"

अब्दुल हमीद—"एक दिन मैंने तेरह शेर इकट्ठे ही मारे थे! मैं उस वक्त एक ठेले पर लाइन देखता जा रहा था। देखा तो कुछ दूर पर तेरह शेर एक जिराफ खा रहे है। शेर का यह कायदा है

कि वह भागता नहीं। एक के गोली लग जाय तो दूसरा उसके नजदीक देखने जाता है। मैंने इस तरह पाँच मिनट के अन्दर बारह शेर मार दिये। तेरहवीं मादा थी। उसके पेट में जब गोली लगी तब उसने सीधे मुझपर हमला किया। मैंने फिर गोली मारी लेकिन वह खाली गई! ज्योंही उसने फिर हमला किया, मैंने बंदूक उसके मुँह में डाल दी। उसके मुँह में ही गोली चल गई! वह बंदूक लेकर ही गिर पड़ी और मर गई। उसके मरने के बाद बड़ी मुश्किल से मैंने अपनी बंदूक उसके मुँह से निकाली। उसने बंदूक को खूब किचकिचाकर दाँतों से जकड़ लिया था।

"एक बार एक शेर ने मुझे खत्म ही कर दिया होता। वह जख्मी होकर जंगल में भाग गया था। मैंने उसका पीछा किया। करीब चार मील पर उसे पाया। वह एक झाड़ी में था। मुझे देखते ही उसने हमला किया। मैंने उसको गोली मारी जिससे वह जमान पर गिर पड़ा। लेकिन गिरते वक्त वह बड़े जोर से गरजा और उसका गरज से मेरा दिल दहल गया। क्योंकि वह बिलकुल नजदीक ही था। उसने दूसरी बार फिर हमला किया। मैंने फिर गोली मारी। वह फिर गिर गया। जब तीसरी बार फिर उसने हमला किया, मेरी हिम्मत बिलकुल टूट गई। पर एकाएक मेरी गोली चल गई, वह शेर को लगी। वह गिर पड़ा। मेरा दिमाग चक्कर खा रहा था। इसलिये बेहोश होकर मैं भी गिर पड़ा। होश आने पर मैंने देखा कि हम दोनों नजदीक पड़े हुए है।

फर्क इतना ही था कि मैं कुछ ऊँची जमीन पर था और वह नीचे एक गढ़े में लुढ़क गया था; पर मरा अब भी न था! मेरी गोलियाँ अपना काम कर रही थीं। हाँ, वह खिसक-खिसककर कई गज आगे जा रहा था। उठकर फिर मैंने गोली मारी और वह मर गया।"

एक बार नैरोवी के जज मिस्टर वार्टन की जिन्दगी अब्दुल हमीद ने बचाई। एक जंगली भैंसे ने उन्हें झाड़ी के नीचे दबा लिया था। अब्दुल हमीद ने उस भैंसे के कंधे में गोली मारकर उसको गिरा दिया और जज साहब की जान बचा ली।

अब्दुल हमीद ने एक साहब बहादुरके शिकार का बड़ा मनोरंजक किस्सा मुझे सुनाया-"एक अँगरेज अफसर को शिकार का शौक हुआ। उन्होंने मुझे (अब्दुल हमीद) को साथ लिया। एक गढ़ा खोदा गया। उसके नीचे वह अफसर और मैं दोनों बैठ गये। गढ़ा ढक दिया गया; पर उसमें बंदूक के लिये छेद रक्खे थे। एक मरा हुआ जानवर गढ़े के पास रख दिया गया। शेर आया; पर उसे इस बात का शक था कि शायद दुश्मन नजदीक ही होगा। इसलिये उसने उस गढ़े के छेदों पर आकर सूँघना शुरू किया। पहले तो उसने मेरे सूराख पर साँस ली। मैंने गोली नहीं चलाई, क्योंकि मैं साहब से वादा कर चुका था कि मैं तीसरी गोली चलाऊँगा पहले दो गोलियाँ आप चला देना। फिर उस शेर ने साहब के छेद के ऊपर लम्बी साँस ली। उसकी बदबू साहब को नाक के

अन्दर चली गई और वह बेहोश हो गये। मैंने उन्हें इशारा किया कि आप गोली चलायें, लेकिन उन्होंने कुछ जवाब न दिया, और खर्राटा भरने लगे। तब मैंने खुद उस शेर को गोली मारी। वह एक ही गोली लगने से मर गया। साहब को जब डेढ़ घंटे बाद होश आया, तब उन्होंने मुझसे कहा—'अगर तुम्हें कोई उज्र न हो तो मैं यह कह दूँ कि मैंने शेर मारा है।' मैंने कहा—'अगर आप मुनासिब समझें तो बेशक कह दें। मुझे कोई एतराज नहीं; क्योंकि मैंने बहुत-से शेर मारे हैं।' उस अफसर ने दूसरे दिन ही नैरोबी के एक अखबार में कई कालम का किस्सा लिखा कि मैंने इस तरह शेर मारा। पीछे जब असली बात मालूम हुई तब कई मेरे पास भी आये और बोले कि तुम इसके खिलाफ क्योंनहींअपना बयान छपवाते ? मैंने कहा, 'मैं ऐसा हरगिज नहीं कर सकता।"

एक बार अब्दुल हमीद ने एक लड़के की जान बचाई थी। उसका जिक्र करते हुए अब्दुल हमीद ने कहा—

"एक अंग्रेज अपनी मेम और पन्द्रह साल के लड़के के साथ शिकार करने के लिये अफ्रिका आया था। मुझे अपने आफिस से हुक्म मिला कि मैं दस-पन्द्रह दिनों तक उनको शिकार खेलाऊँ। कोई बारह दिनों तक मैंने उनके साथ शिकार खेला। एक दिन हम चारों घने जंगल से जा रहे थे। साहब और उसकी मेम एक तरफ से गये, मैं और वह लड़का दूसरी तरफ से। आगे हमलोगों को और भी घना जंगल मिला। वह लड़का मुझसे बोला—'मैं

इस मार्ग से जाता हूँ, तुम उस रास्ते से आओ, आगे चलकर हम दोनों मिल जायँगे। मैंने उसका कहना मान लिया। हमलोग जुदा-जुदा हो गये। मैं थोड़ी ही दूर जाने पाया था कि इतने में मुझे बंदूक की आवाज सुनाई दी और उसी के साथ लड़के की चिल्लाहट भी। मैं फौरन दौड़कर उस तरफ गया देखा कि उस लड़के को गैंड़े ने झाड़ा के नीचे डाल दिया है। मैंने उस गैंड़े के ऊपर गोली चलाई। एक ही गोली में वह गिर पड़ा। फिर मैंने झाड़ी से उस लड़के को निकाला। इस तरफ से मैं लड़के को साथ लिये जा रहा था और उस तरफ से उस लड़के के माँ-बाप गोली की आवाज सुनकर घबराये हुए चले आ रहे थे। उस लड़के ने मेरा हाथ चुमकर अपना सब हाल माँ-बाप को सुनाया और हिन्दोस्तानी भाषा में बहुत शुक्रिया अदा किया। लड़के ने कहा—'अगर अब्दुल हमीद न होते तो मेरी जान चली गई थी।'

हमलोगों की पराधीनता के क्या-क्या परिणाम होते हैं, इस बात को अब्दुल हमीद खूब अच्छी तरह जानते हैं। केनिया के गोरे लोगों के दिमाग में तो किसी हिन्दोस्तानी को इज्जत करने का ख्याल आना ही असम्भव है। पर साथ ही हमलोग भी अपने देश के आदमी का सम्मान करना नहीं जानते। पूर्वी अफ्रिका के हिन्दोस्तानियों ने आज तक अब्दुल हमीद की बहादुरी के लिये उनका कोई सम्मान नहीं किया—यद्यपि उन्होंने बीसों आदमियों की जानें बचाई हैं और बीसों बार अपनी जान को खतरे में डाला

है। हाँ, अफ्रिकन लोगों ने अवश्य ही अब्दुल हमीद को 'सिंवा-वोली' (दो शेरों की ताकत रखनेवाला) की उपाधि देकर अपनी गुण-ग्राहकता का परिचय दिया है।

पूर्वी अफ्रिका के गोरे लोगों के हृदय से न्यायप्रियता का भाव कितना अधिक जाता रहा है—इसका एक दृष्टान्त यहाँ दिया जाता है —

जनवरी, सन् १९२४ में बृटिश जहाजी बेड़े के कुछ आदमी अपने जहाजों पर अफ्रिका गये। वहाँ उन्होंने शिकार करने की ठानी। रेल-विभाग के उच्च अधिकारियों ने अब्दुल हमीद को आज्ञा दी कि तुम इनलोगों के साथ जाकर इन्हें शिकार खेला लाओ। तीन अफसर थे। वे लोग आठ बजे तो सोकर उठते थे। उस समय काफी गर्मी हो जाती थी और जानवर जंगल के भीतर की ओर अपनी-अपनी जगह पर चले जाते थे। अब्दुल हमीद ने तीन दिनों तक उनलोगों के लिये शिकार की तलाश की; पर कोई भी शिकार न मिला। इसपर उनलोगों ने केनिया-सरकार के शिकार-विभाग के अफसरों से शिकायत कर दी कि अब्दुल हमीद ने तमाम शिकार खत्म कर दिया है—इसलिये हमलोगों को शिकार नहीं मिला! वे साहब लोग थोड़ी-थोड़ी दूर चलकर हाँफ जाते थे और चाय माँगने लगते थे। तीन दिनों तक बेचारे अब्दुल हमीद को बहुत तंग होना पड़ा और भारी मुसीबत उठानी पड़ी। नतीजा यह हुआ कि उलटी उनकी शिकायत कर दी गई। शिकार-विभाग

ने अब्दुल हमीद के रेल-विभाग के अधिकारियों को लिखा। अधिकारियों ने अब्दुल हमीद से जवाब तलब किया। सौभाग्य से अब्दुल हमीद के ऊपर का अफसर 'मिस्टर क्रांसबी' एक भला अँग्रेज था। उसने अब्दुल हमीद पर अन्याय नहीं होने दिया। नहीं तो अब्दुल हमीद का तबादला हो गया होता और बंदूक का लैसेंस भी छिन गया होता!

मिस्टर क्रांसबी ने इस संबन्ध में अब्दुल हमीद का बयान लेने के बाद, शिकार-विभाग के अफसरों को जो जोरदार चिट्ठी लिखी थी उसकी नकल यहाँ दी जाती है। इससे पाठकों को केनिया के गोरों की मानसिक प्रकृति (मनोवृत्ति) का पता लग जायगा। साथ ही मिस्टर क्रांसबी की न्याय-प्रियता भी प्रकट होगी। चिट्ठी का भावार्थ यह है---

"आपकी चिट्ठी का तर्जुमा मैंने अब्दुल हमीद को सुना दिया है। उसकी तरफ से मैं यह कहना चाहता हूँ कि उसने आज तक एक भी शेर फँसाकर नहीं मारा, पिछले पन्द्रह बरसों में उसने १२० शेर मारे हैं। गत वर्ष छः शेर मारे थे। ये छः शेर पाँच या छः दिनों के अन्दर मारे गये थे। यह काम अब्दुल हमीद ने मेरे कहने और 'सिंवा' स्टेशन के नौकरों की प्रार्थना पर किया था। अब्दुल हमीद का तरीका हमेशा से यही रहा है कि वह या तो गढ़े में नीचे बैठकर या पेड़के ऊपर चढ़कर और पास में कोई मरा हुआ जानवर रखकर शिकार करता है। जिस वक्त हम 'सिंवा' स्टेशन

और २३१ वें मील के बीच में पुल बना रहे थे, उस वक्त अब्दुल हमीद ने कई दिन और रातें गढ़ों के नीचे और पेड़ों के ऊपर बिताई थीं। तब कहीं उसने छः शेर मार गिराये थे। एक बार तो उसने बाइस शेर इकट्ठे ही गिने थे। 'सिवा' स्टेशन के आस-पास जो कोई शिकार खेलता है, वह उसी तरीके से काम लेता है। मैंने सुना है, सिर्फ एक बार किसी ने मेरी लाइन पर शेर को फँसा कर मारा है। यह काम किसी गोरे अधिवासी ने किया था। मैं यह जानता हूँ कि केनानी और मैकनिन रोड के विभाग पर तेंदुए फँसाकर मारे जाते हैं, पर मेरी लाइन पर कभी ऐसा नहीं होता। अगर आप चाहते हैं कि अब्दुल हमीद को शिकार खेलने की मनाई कर दी जाय, तो मैं उसे मना कर दूँगा। तब वह अपना रुपया, जो उसने लैसेंस के लिये दिया था, वापस मँगा सकता है।

रही उसके तबादला करने की बात, सो मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं, बशर्ते कि उतना ही काबिल कोई दूसरा सब-इंसपेक्टर उसकी जगह पर काम करने के लिये मेरे पास भेज दिया जाय। मुझे खुद शिकार का कुछ भी शौक नहीं है और न मैंने कभी अब्दुल हमीद को शिकार खेलने के लिये उत्साहित किया है। यहाँ सिर्फ एक बार, जब शेर आसपास के स्टेशनों पर चक्कर मारते थे, मैंने अब्दुल हमीद से शिकार करने के लिये जरूर कहा था। यहाँ पर मैं सच कहे बिना नहीं रह सकता और सम्मान-पूर्वक मैं यह कह देना चाहता हूँ कि इस बार सी० ई० को किसी

ने गलत बातें लिख भेजी हैं। अब्दुल हमीद चाहता है कि उसे उनलोगों के नाम बतला दिये जायँ, जिन्होंने उसपर ये जुम लगाये हैं। लेकिन मैंने उससे कह दिया है कि ऐसा नामुमकिन है; क्योंकि यह मामला गोपनीय है। विश्वास है, आपको यह उत्तर संतोष-जनक मालूम होगा। मैं आपके दूसरे हुक्मों की राह देखूँगा।

आपका सेवक—
डब्ल्यू० क्रांसबो"

अगर क्रांसबी साहब ने सचाई और ईमानदारी से काम न लिया होता, तो बेचारा अब्दुल हमीद बेकसूर मारा जाता।

जब मिस्टर पैटर्सन ने आठ शेर मारे थे तब तमाम दुनिया में उनकी प्रशंसा हुई थी और उनकी बहादुरी की तारीफ अमेरिका के प्रेसिडेंट रुजवेल्ट तक ने की थी! पर १२६ शेर मारने पर भी अब्दुल हमीद को कोई नहीं पूछता! कदर करने के बजाय अक्सर लोग उनको सजा देने, लैसंस छीनने और तबादला करने की फिक्र में रहते हैं! ऐसा क्यों न हो? आखिर पैटर्सन स्वाधीन जाति का एक अँगरेज है और अब्दुल हमीद गुलाम कौम का हिन्दुस्तानी! दोनों की स्थिति में यही अन्तर है!!!

हसनअली शिकारी

पूर्वी भारतवर्ष में 'बड्ढापुर' नामक एक कस्बा है। वहाँ 'हसनअली' नामक एक शिकारी रहा करते थे। वे बड़े बहादुर और निशानेबाज थे। बड्ढापुर के आसपास एक बड़ा घना जंगल है जिसमें शेर, चीते, हिरन इत्यादि बहुत-से जानवर पाये जाते हैं। बड़े-बड़े अंगरेज यहाँ के जंगल में शिकार खेलने आते तो हसनअली को जरूर अपने पास रखते थे। बड़े दिन के अवसर पर जब कमिश्नर या लाट साहब इस जंगल में आखेट के लिये आते थे तब जिले का कलक्टर उन्हें शिकार खेलाने के लिये हसनअली को पहले ही से तैयार रखता था। अंगरेज शिकारियों की तरफ से इन्हें बड़े-बड़े इनाम मिलते थे। कुछ मासिक वेतन भी मुकर्रर था। सिवा शिकार खेलने-खेलाने के और कोई इनका काम न था। इसीसे इनका गुजर होता था।

एक बार का जिक्र है कि एक बड़े अँगरेज अफसर हसनअली को साथ लेकर इस जंगल में शिकार खेलने के लिये गये। सवारी के लिये दो तीन हाथी और बहुत-से नौकर-चाकर साथ थे। साहब बहादुर दिन-भर सैर-शिकार में लगे रहे। जब शाम के वक्त वापस लौट रहे थे, रास्ते में उन्हें एक हिरन दिखाई दिया। साहब-बहादुर ने उसपर बन्दूक चलाई; लेकिन निशाना ठीक न होने की वजह से हिरन के सिर्फ उतरते-से दो-चार ही छर्रे लगे। वह जख्मी होकर घने जंगल की तरफ भाग खड़ा हुआ। साहब-बहादुर ने हसनअली से कहा कि तुम जख्मी हिरन की तलाश में जाओ—सम्भव है; वह कहीं आगे चलकर जमीन पर गिर पड़ा हो।

हसन अली हिरन की खोज में निकले और बहुत देर तक जंगल में इधर-उधर भटकते रहे; लेकिन हिरन का कहीं पता न चला। दिन छिप चुका था। बेचारे वापस लौटे। मगर वहाँ आकर क्या देखते हैं कि न वहाँ पर साहब-बहादुर मौजूद हैं और न कोई नौकर-चाकर ही है। हसनअली के आने से पहले ही ये सब लोग इस जगह से कूच कर गये थे। बेचारे हसन-अली बहुत ही परेशान हुए।

रात का समय था। सिवा पेड़ों के और कोई चीज दिखाई नहीं देती थी। हिंसक जानवरों की भयानक आवाज दिल कँपाये देती थी। ऐसा मालूम होता था कि अब कोई शेर या चीता यहाँ

आना ही चाहता है। और कोई होता तो मारे डर के प्राण छोड़ देता, परन्तु एक तो हसनअली बड़े साहसी थे, दूसरे—उन्हें ऐसे मौके अक्सर पेश आये थे। उन्होंने हिम्मत से काम लिया। एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गये। दिन निकलने की प्रतीक्षा करने लगे।

जैसे-तैसे करके दिन निकला; मगर क्या देखते हैं कि एक बड़ा मस्त हाथी सूँड़ उठाये हुए पेड़ की तरफ भागा आ रहा है। हसनअली उसके भय से और भी अधिक ऊँची डालियों पर चढ़ गये। उनका ख्याल था कि थोड़ी देर में हाथी वहाँ से चला जायगा। मगर वह कम्बख्त ऐसा आसन मारकर बैठा कि तीन दिनों तक वहाँ से टलने का नाम न लिया।

हसनअली सोचते थे कि आखिर बात क्या है—यदि वह मुझे मारना चाहता तो पेड़ की शाखाएँ तोड़ता, या सूँड़ उठाकर मुझे पकड़ने की कोशिश करता, या मेरी तरफ लपकता—जैसा प्रायः जंगली हाथी किया करते हैं; मगर यह इस प्रकार की कोई भी हरकत नहीं करता और तीन दिनों से चुप बैठा हुआ है; सम्भव है कि इसको कोई तकलीफ हो और मेरी मदद चाहता हो।

अनिद्रा और भूख की वजह से हसनअली की बुरी दशा हो गई थी। गोली चलाने का मौका नहीं था और मृत्यु सामने खड़ी दिखाई देती थी। सिवा नीचे उतरने के और कोई चारा न था। 'मरता क्या नहीं करता'—हसनअली पेड़ से नीचे उतरने लगे।

हाथी ने उन्हें उतरते देखा तो खड़ा हो गया। वह अल्लाह

का नाम लेकर उसकी पीठ पर बैठ गये। हाथी उनको सवार करके वहाँ से चलता बना। वह पहाड़ एक घाटी में पहुँचा। वहाँ एक नाला बड़े जोर से बह रहा था। हाथी वहीं आकर बैठ गया। हसनअली ने इधर-उधर नजर दौड़ाई तो देखा कि वहाँ तीन-चार हाथी मरे हुए पड़े हैं। अब उनकी समझ में आया कि हाथियों पर जरूर कोई विपत्ति आई है, जिसे दूर कराने के लिये यह हाथी मुझे यहाँ लेकर आया है।

हसनअली ने थोड़ा पानी पिया और पत्थर पर बैठकर चारों तरफ निगाह डालने लगे। थोड़ी देर में नाले के दूसरे किनारे पर एक हाथी पानी पीने के लिये आया। जैसे ही वह सूँड़ में पानी लेना चाहता था वैसे ही करीब की एक झाड़ी में से कोई चीज झपटकर निकली और हाथी के माथे पर काटकर फिर झाड़ी में भाग गई! हाथी वहीं गिरकर तुरन्त मर गया।

यह एक अत्यन्त जहरीला, मेढ़क के बराबर बड़ा बिच्छू था। सात-आठ हाथियों को इसी प्रकार डंक मारकर मौत के घाट उतार चुका था।

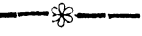
अब हसनअली ने अपनी बंदूक सँभाली और मौके की ताक में होशियार होकर बैठ गये। थोड़ी देर में एक और हाथी पानी पीने के लिये आया। फिर बिच्छू ने अपनी आदत के अनुसार कूदकर डंक मारना चाहा। इतने में हसनअली की बंदूक से गोली चली और जहरीले बिच्छू का काम तमाम हो गया।

बिच्छू को मारना था कि उस हाथी ने कृतज्ञता प्रकट करने के लिये हसनअली को अपनी सूँड़ से छूना शुरू किया और अपनी पीठ पर सवार करके उसी तरफ चला जहाँ से उन्हें लाया था।

इधर साहब बहादुर हसनअली की तलाश में मारे-मारे फिर रहे थे। रास्ते में हसनअली हाथी पर सवार नजर आये तो साहब को बड़ी खुशी हुई। हसनअली ने सब किस्सा बयान किया तो साहब-बहादुर को भी यह स्थान देखने कि प्रबल इच्छा हुई।

हसनअली भी साहब-बहादुर के हाथी पर सवार हो गये। वह जंगली हाथी रास्ता दिखाता हुआ आगे-आगे चला। मौके पर पहुँचकर साहब-बहादुर ने सब बातें अपनी आँखों देखीं। देखकर सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

साहब-बहादुर ने मुर्दा हाथियों के दाँत और हड्डियाँ निकलवाने का इन्तजाम किया। ये चीजें एक सौदागर को बेच दी गईं जिससे एक बड़ी रकम वसूल हुई। हसनअली को साहब बहादुर ने खूब इनाम दिया।

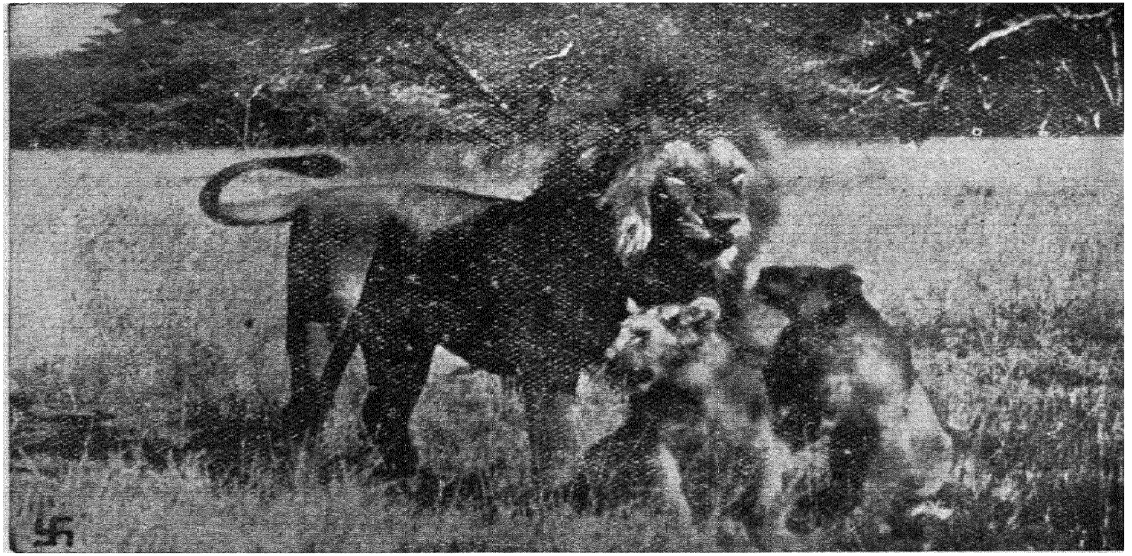


'सावो' के मनुष्य-भक्षक

समस्त अफ्रिका* किसी समय घने जंगलों से भरा हुआ था। शेर, चीते आदि हिंसक जानवर कुत्ते-बिल्लियों की तरह घूमते थे; दिन-दहाड़े लोगों को उठाकर ले जाते और चट कर जाते थे। इस समय भी वहाँ ऐसे जानवर बहुत पाये जाते हैं; पर पहले से बहुत कम हैं।

---

*अफ्रिका--संसार के महाद्वीपों में अफ्रिका बहुत प्रसिद्ध है। 'स्वेज' नामक स्थल-डमरू-मध्य इसे एशिया महाद्वीप से जोड़ता है। इसके पश्चिम में अटलांटिक महासागर और पूर्व में भारतीय महासागर है। भूमध्यसागर उत्तरी सीमा पर है और रक्त सागर उत्तर-पूर्व कोने पर। उत्तर से दक्खिन तक पाँच हजार मील और पूरब से पच्छिम तक चार हजार मील विस्तृत है इसका कुल विस्तार ११५००००० वर्गमील में है। संसार का सबसे बड़ा मरुस्थल 'सहारा' इसीमें है, जो ३५००००० वर्गमील में फैला हुआ है। विक्टोरिया, चाड, टंगानिका, न्यासा, एडवर्ट आदि बड़ी-बड़ी झीलें इसमें हैं। नील, कोंगो, नाइजर, जाम्बेजी आदि बड़ी-बड़ी नदियाँ भी इसे उपजाऊ बनाती हैं। जंगल और पहाड़ भी खूब हैं। 'किलिमंजारो' की चोटी बीस हजार फुट



अफ्रिका के जंगल में वनराज 'सिंह' अपने बच्चों के साथ !



पूर्व-अफ्रिका के जंगलों में नौजवान सिंहों का दल !

जब यूरोपियन लोग अफ्रिका में पहुँचे तब उन्होंने विदेशी मजदूरों की सहायता से जंगलों को साफ कराकर रहने योग्य स्थान बनाये तथा सड़कें और रेलवे लाइनें बनानी शुरू कीं। यद्यपि इस काम में हजारों विदेशियों की जानें गईं और सैकड़ों आदमी हिंसक पशुओं द्वारा मार डाले गये, तथापि अफ्रिका का जो हिस्सा एक समय घने जंगलों से भरा हुआ था, आज एक बड़ी सुन्दर आबादी के रूप में दिखाई देता है।

अंग्रेजी सरकार ने अफ्रिका के उस हिस्से में, जो बृटिश पूर्वी अफ्रिका के नाम से प्रसिद्ध है और बृटिश साम्राज्य के अन्तर्गत है, सन् १८९८ ई० में युगांडा रेलवे नामक रेल की लाइन बनानी आरम्भ की। मशहूर इंजीनियर कर्नल जे० एच० पैटर्सन इस काम की निगरानी के लिये भेजे गये। इस लाइन पर अधिकतर भारतीय मजदूर ही काम करते थे।

ऊँची है। यहीं सबसे ऊँचा पहाड़ और बुझा हुआ ज्वालामुखी है। शेर, गैंडा, हाथी, चीता, बाघ, जिराफ, जेबरा आदि जंगली जन्तु प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। ट्रान्सवाला प्रान्त में सोने की जगत्प्रसिद्ध खानें हैं और रोडेशिया-प्रान्त में ताँबे की। इसकी ४६५०००० वर्गमील भूमि पर बृटिश जाति का अधिकार है और फ्रांस का तो इससे भी अधिक। इटली, पुर्तगाल, स्पेन, बेलजियम आदि यूरोपीय राष्ट्रों के भी उपनिवेश यहाँ हैं। मिस्र ही अब यहाँ का एक-मात्र स्वतंत्र राष्ट्र है जिसकी प्राचीन सभ्यता का इतिहास में बड़ा गौरव है। अफ्रिका के घने जंगलों में शिकार खेलने के लिये अनेक सुदूर देशों से शिकारियों के दल आते हैं। बहुत-से भारतीय देशी नरेश भी वहाँ प्रायः शिकार खेलने जाया करते हैं।

कर्नल पैटर्सन १ मार्च (सन् १८९८) को पूर्वी अफ्रिका के प्रसिद्ध नगर 'मोम्बासा' * में उतरे और एक-दो दिन ही के भीतर 'सावो' (Tsavo) पहुँच गये, जहाँ उस समय रेलवे-लाइन बनाने का काम जारी था।

रेलवे-लाइन बनाते समय कर्नल पैटर्सन और दूसरे कर्मचारियों तथा कुलियों को शेरों ने बहुत परेशान किया। आये दिन वे किसी-न-किसी आदमी को उठा ले जाते थे और लाइन बनाने का काम बार-बार बन्द हो जाता था। कर्नल पैटर्सन ने बड़ी बहादुरी से बहुत-से शेरों का शिकार करके अपने काम में सफलता प्राप्त की।

इस काम से वे सारे यूरोप में मशहूर हो गये। जिस समय स्वदेश पहुँचे, उनका बड़ा सम्मान किया गया। उन्होंने अपने शिकार का हाल अपनी प्रसिद्ध अँगरेजी पुस्तक 'Man-Eaters of Tsavo' (सावो के मनुष्य-भक्षक) में लिखा है। बड़ी ही मनोरंजक पुस्तक है। इसी पुस्तक का सार भाग यहाँ दिया जाता है—

---

*मोम्बासा—यह केनिया-प्रान्त का बन्दरगाह है। यह 'मोम्बासा' नामक टापू पर बसा हुआ बहुत बड़ा नगर है। इस महानगर की जन-संख्या लगभग साठ हजार है। यहीं से प्रान्त-भर में रेलवे-लाइन फैली है। युगांडा-रेलवे का प्रमुख केन्द्र यहीं है।

मनुष्य-भक्षक के प्रथम दर्शन

'सावो' पहुँचकर मैं (कर्नल पैटर्सन) ने अपने काम का चार्ज लिया। पर शेरों के उपद्रव के कारण रेलवे-लाइन बनाने का काम बहुत दिनों तक 'सावो' के इलाके में आगे न बढ़ सका। सन १८९८ ई० के दिसम्बर में तीन सप्ताहों के लिये काम बिलकुल बन्द हो गया। शुरू-शुरू में शेर अपना शिकार ले जाने में सफल नहीं होते थे; किन्तु बाद को वे इतने चालाक हो गये थे कि ठीक समय पर और ठीक स्थान पर हमला करते थे, और किसी-न-किसी आदमी को अवश्य उठाकर ले जाते थे। बेचारे भोले-भाले कुली आकर मुझसे कहते थे—"साहब, ये शेर नहीं हैं, बल्कि भूत-प्रेत हैं।" यहाँ के निवासियों की दो प्रेतात्माएँ सिंह के रूप में घूमती हैं और रेलवे काम में बाधा डालकर अपने अपमान का बदला चुकाती हैं।

पहले-पहल मुझे कुलियों की बातों पर बिलकुल विश्वास नहीं होता था। इनके भोलापन पर मुझे हँसी आती थी। मेरा विश्वास था कि ये लोग आपस में ही एक दूसरे को मारकर रुपया ले लेते होंगे; क्योंकि इस प्रकार रात को गायब हो जानेवाले लोगों में कितने ही अच्छे कारीगर थे, जिन्होंने मेहनत और होशियारी से काफी रुपया पैदा कर लिया था; किन्तु थोड़े ही दिनों में मेरा यह शक जाता रहा।

एक सुबह को खबर मिली कि जमादार अंगन सिंह को शेर उठाकर ले गये। मैं फौरन ही उस स्थान पर गया। वहाँ शेर के

पैरों के निशान साफ दिखाई दिये। मुझे पूरा विश्वास हो गया। मैं एक दूसरे अफसर 'कप्तान हैसलम' को साथ लेकर उसी तरफ बढ़ा, जिधर खून के गिरने के निशान मिलते थे। उस रास्ते में कुछ दूर जाकर जमादार अंगन सिंह का सिर और कुछ हड्डियाँ मिलीं। अंगन सिंह के पास सोनेवाले आदमी से इस दुखदायी घटना की करुण-कथा सुनकर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यहाँ शेर हैं—और अवश्य हैं। वहीं पर मैंने यह प्रण किया कि इस स्थान को शेरों से खाली कर दूँगा, चाहे मुझे इस काम में अपनी जान से हाथ क्यों न धोने पड़ें।

रात की चौकीदारी

उसी रात को मैं जमादार अंगन सिंह के तम्बू के पास दुनाली बन्दूक लेकर पेड़ पर चढ़ गया। बहुत से कुली भी पेड़ पर मेरे साथ बैठ गये। दूसरे सब लोग अपने-अपने मकान के दरवाजे बंद करके सो गये। थोरी देर बाद शेरों की गर्जना सुनाई दी। मुझे आशा हुई कि अब निशाना लगाने के लिये उपयुक्त अवसर मिलेगा। कोई दो घंटे तक बिलकुल सुनसान रहा; क्योंकि शेर अपने शिकार को बहुत चुपचाप ढूँढ़ते थे। परन्तु थोड़ी देर बाद आधे मील के फासले पर, बहुत शोर-गुल सुनाई दिया। सुबह होने पर मालूम हुआ कि एक सोते हुए कुली को शेर ले गया।

दूसरी रात को भी मैं इसी तम्बू के पास पेड़ पर बैठा। उसी

पेड़ से एक बकरी को भी बाँध दिया—इस विचार से कि शेर इसे देखकर अवश्य हमला करेगा। किन्तु शेर ने फिर धोखा दिया—दूसरी जगह अपना शिकार जा मारा।

'सावो' में चारो तरफ, लगभग आठ मील के घेरे, में तम्बू पड़े हुए थे, पर शेर बड़े समझदार मालूम होते थे। हमारे इरादे को वे पहले ही समझ जाते थे।

यद्यपि मैं बहुत सोच-विचार कर शिकार करने का स्थान नियत करता था तथापि शेर बराबर उससे कहीं दूर अपना शिकार मार ले जाते थे। दिन में वे ऐसे घने जंगल में जा छिपते थे, जहाँ उनका मिलना बिलकुल कठिन था; क्योंकि ऐसी जगह में प्रत्येक बात शिकारी के प्रतिकूल होती है। पेड़ की एक टहनी भी भयंकर हो जाती है। तिसपर भी मैं बराबर उनकी माँद की खोज में रहा। समय पाकर मैं बराबर उस जंगल में घूमता था।

कभी-कभी बन्दूक थामनेवाला मुझे झाड़ियों के काँटों से छुड़ाता था। बहुधा बड़े मैदान में, नदी के पास, शेरों के निशान मिलते थे। किन्तु आगे कुछ पता नहीं चलता था, क्योंकि पहाड़ी स्थान होने के कारण पेड़ नहीं मिलते थे। शेरों ने बड़ी होशियारी से पहाड़ी के दूसरे पार अपनी थलियाँ (माँदें) बना रक्खी थीं।

बनिये का अनुभव

एक बार एक बनिया कुछ रात बीते अपने गधे पर चढ़ा आ रहा था। शेर ने दोनों (मनुष्य और पशु) पर हमला किया।

पहले गधे को जख्मी कर डाला। फिर बनिये पर हमला किया ही चाहता था कि उसके पंजे टिन के कनस्तर से बँधी हुई रस्सी में उलझ गये। टिन बजने से ऐसा शोर हुआ कि शेर तुरन्त वहाँ से भाग निकला। इस प्रकार बनिये की जान बच गई। वह तमाम रात वहीं एक पेड़ पर चढ़ा काँपता रहा।

इसी प्रकार एक यूनानी ठेकेदार भी बच गया। वह सो रहा था, शेर आया। जिस चटाई पर वह सो रहा था उसीको लेकर शेर भाग गया! यही आदमी बाद को पशु खरीदकर रेल पर सीधे रास्ते से आते वक्त प्यासा मर गया।

इसी प्रकार एक बार चौदह कुली सो रहे थे। शेर तम्बू में कूदा। आदमी के धोखे से झट चावलों का बोरा लेकर भाग गया। कुछ दूर जा अपनी गलती समझकर चावल के बोरे को छोड़ दिया।

इन घटनाओं के बाद शेर फिर कभी न चूका। वह अदबदाकर मनुष्य का ही शिकार करता था। यहाँ तक कि गोली से भी नहीं डरता था।

झाड़ियों की बाड़

मेरा तम्बू खुले मैदान में था। एक रात को कुछ आहट हुई। लालटेन से देखने पर कुछ नहीं मिला; किन्तु सुबह में शेर के पैर के निशान मिले। उसके बाद चारों ओर बाड़ (घेरा या रुकावट) लगाने का इरादा किया। 'डाक्टर ब्रुक' के साथ मिलकर एक

झोपड़ी बनाई। सत्तर गजवाले व्यास से घेरा लगाया गया। रातभर आग जलती थी। अच्छी तरह प्रबन्ध किया गया था। तिसपर भी, लगभग प्रत्येक रात को, किसी-न-किसी को शेर बाड़ (घेरा) तोड़कर उठा ले जाता था!

दो हजार आदमी जबतक रहे तबतक तो कुछ अधिक चिन्ता नहीं थी; किन्तु उनके चले जाने के बाद काम बिलकुल बन्द कर दिया गया। बाड़ें (रुकावटें) लगाई गईं। चौकीदारी और रोशनी का पूरा इन्तजाम किया गया। शेर को भगाने के लिये रात-भर कनस्तर (टीन के पीपे) बजाये जाते थे। परन्तु इतनी सावधानी रखने पर भी कोई-न-कोई आदमी अवश्य गायब हो जाता था।

अस्पताल पर हमला

लाइन पर काम करनेवालों का एक बड़ा दल आगे चला गया। अस्पताल मेरे तम्बू से तीन मील के फासले पर था। चारों ओर अच्छी बाड़ लगी हुई थी। किन्तु इतने पर भी शेरों के हमले नहीं रुकते थे। इन दुष्ट जानवरों के मुकाबले में इस प्रकार की बाड़ कुछ काम नहीं देती थी।

दैवयोग से एक रात को अस्पताल का डाक्टर खूब बचा। शेर की आवाज सुनकर उसने दरवाजा खोला। परन्तु शेर को दस कदम के फासले पर खड़ा देखकर पीछे हट गया। इस हरकत से दवाओं का सन्दूक उलट गया। शीशियों के टूटने के शोर से

शेर ऐसा डरा कि तुरन्त वहाँ से भाग गया, फिर पीछे मुड़कर भी नहीं देखा ! परन्तु, रास्ते में एक तम्बू में सोते हुए आठ रोगियों में से दो को लेकर भाग गया। वह पास की झोपड़ियोंमें छिप गया। दूसरे दिन दोनों रोगी तम्बू के नीचे दबे पाये गये। उसी दिन शाम तक दूसरी जगह चुनकर खूब अच्छी तरह बाड़ लगाई गई। इसी नये स्थान में रोगियों की जगह बदल दी गई। पहले अस्पताल की जगह पर कई जानवर रक्खे गये; क्योंकि खाली स्थान में शेर जरूर आता है—इस खयाल से मैं इस स्थान की चौकसी के लिये एक पेड़ पर बैठ गया। किन्तु शेर ने फिर धोखा दिया—अस्पताल के एक भिश्ती को उठाकर ले गया। दूसरे दिन थोड़ी दूर पर उस भिश्ती की कुछ हड्डियाँ, मांस के टुकड़े और एक हाथ की उँगलियाँ मिलीं। उनमें से एक उँगली में अँगूठी भी थी, जो उस भिश्ती की विधवा स्त्री के पास भारतवर्ष में भेजी गई।

दूसरे दिन अस्पताल एक अच्छी जगह बदल दिया गया। चारों ओर बाड़ का भी अच्छा प्रबन्ध किया गया। समीप ही एक मालगाड़ी खड़ी करके मैं और 'डाक्टर ब्रुक' उसमें तमाम रात शेर की चौकसी में बैठे रहे। पहलेवाले अस्पताल की जगह कुछ जानवर भी शेर को आकृष्ट करने के लिये बाँधे गये। परन्तु शेर ने उन जानवरों पर हमला न करके, कोई चार मील के फासले पर रेल की पटरी पर जाते हुए एक मुसाफिर पर हमला करने की कोशिश की। भाग्यवश वह बचकर एक पेड़ पर चढ़ गया।

दूसरी शाम को, जिस समय 'डाक्टर ब्रुक' अस्पताल से लौट रहे थे, कुछ आदमियों ने देखा कि शेर उनकी खोज में लगा हुआ था।

मालगाड़ी पर हमला

भोजन के बाद मैं और डाक्टर ब्रुक दोनों मालगाड़ी में बैठे। यह कोई एक मील के फासले पर खड़ी हुई थी। हम इसमें रात के दस बजे दाखिल हुए। उजड़े हुए अस्पताल के घेरे में शेर को लुभाने के लिये पशु बाँध दिये गये थे। लगभग दो घंटे तक तो बिलकुल निस्तब्धता रही। फिर कुछ टहनियों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। कोई बड़ी चीज कूदती भी दिखाई दी। मैंने समझा कि शेर है; क्योंकि अंधेरी रात में कुछ दिखाई नहीं देता था।

कुछ देर बाद मैंने डाक्टर ब्रुक से कहा—मैं जमीन पर लेट जाता हूँ; क्योंकि शेर शिकार लेकर इसी मार्ग से आयेगा।

डाक्डर ब्रुक ने मुझे ऐसा करने से मना किया। उनकी सलाह मेरे लिये बहुत अच्छी साबित हुई; क्योंकि उस समय शेर बाहर ही हमारी खोज में था। उसी समय मैंने एक भारी चीज को अपनी ओर आते देखा। बस, उसने एकाएक हमपर हमला किया। हम दोनों ने भी एक साथ ही बन्दूकें छोड़ीं। उनकी आवाज से वह पीछे की तरफ कूदकर भाग गया। उस दिन अगर हम सावधान न होते, तो शेर हमपर जरूर हमला करता। यह समझना चाहिये कि उस दिन हम बाल-बाल बच गये।

जिस रोज मैंने और डाक्टर ब्रुक ने मालगाड़ी पर से गोली चलाई थी, उस रोज से शेर कुछ ऐसे डरे कि बहुत दिनों तक उधर नहीं फटके। किन्तु, इस अवसर पर मेरे दिल में यह विचार उत्पन्न हुआ कि शायद दुबारा हमला शुरू करे, इसलिये हमें एक जाल ऐसा बनाना चाहिये जिसमें दो भाग हों—एक भाग में शेर को आकृष्ट करने के लिये आदमी बैठ जायँ और दूसरा हिस्सा शेर के लिये रक्खा जाय।

मैंने स्लीपरों (रेल की पटरियों) और तारों की सहायता से एक बड़ा मजबूत जाल बनाया। उसमें मनुष्यों वाले भाग का दरवाजा फिसलनेवाला रक्खा। किन्तु शेर के लिये जो हिस्सा रक्खा गया था, उसका दरवाजा बहुत बड़ा था और उसके किवाड़ ऊपर दो रेलों के बीच में, एक तार-द्वारा जाल के नीचे के भाग में से लगाये गये थे। वह इस प्रकार बनाया गया था कि ज्योंही शेर कूदकर उसमें दाखिल होगा त्योंही उसके दबाव से तार उतर जायगा और किवाड़ दोनों रेलों के बीच में आकर सट जायगा।

जाल बनाते समय छेद करने में बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई। मैंने बन्दूक की गोली से उसमें छेद किये। जाल के ऊपर मैंने शेरों को धोखा देने के लिये तम्बू लगाया। शुरू के कई रोज मैं उसमें सोया; किन्तु कोई घटना नहीं हुई। मुझे रात-रात भर जागना

पड़ता था; क्योंकि मच्छरों की अधिकता से नींद नहीं आती थी। पर, मैं शेर पकड़ने की धुन में इन तकलीफों की परवा नहीं करता था।

भय का राज्य

यद्यपि शेरों के आक्रमण, आस-पास के स्थानों में, मालगाड़ी में, हमारे बैठने के दिन से थोड़े ही दिन बाद, शुरू हो गये थे, तथापि 'सावो' पर उन्होंने लगभग एक मास बाद हमला किया। एक आदमी को जख्मी किया और दूसरे को उठाकर ले गये। यह जख्मी आदमी भी थोड़े ही दिन बाद मर गया। 'सावो' में काम करनेवाले कुलियों ने यह समझ लिया था कि शैतान ने उस जगह को छोड़ दिया है, इस वास्ते सब लोग निर्भय होकर बाहर सोते थे। परन्तु एक रात को फिर शेर की गर्जना सुनाई दी। बस, सब लोग जागकर होशियार हो गये। जिस समय शेर 'बाड़' लाँघकर कैम्प में आ गया, लोगों ने ईंट-पत्थरों से उसपर हमला किया; परन्तु शेर पर इस मार का कुछ असर न हुआ। वह एक आदमी को पकड़कर भाग ही निकला। वहाँ से केवल बीस ही गज के फासले पर ले जाकर इस आदमी को खा ही डाला—उसकी हड्डियाँ सुबह पड़ी पाई गईं।

मैंने इस खयाल से कि इन हड्डियों की वजह से शेर शायद फिर आवें, उन्हें वहीं पड़े रहने दिया। मैं करीब ही एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। कई रात बराबर ऐसे ही बैठता रहा; लेकिन

शेर नहीं आया। यद्यपि यह काम बहुत कठिन और थकावट पैदा करनेवाला था तथापि दूसरा कोई चारा न था। सब मुझको ही अपनी रक्षा का आधार समझते थे। मेरा भी उनकी रक्षा करना धर्म था। मुझे अपनी सारी उम्र में अगर कोई चीज भयानक मालूम हुई है तो वह सिंहों का गर्जन ही है, जो समीप होने पर हृदय हिलानेवाला मालूम होता था। सबलोग एकदम चिल्ला उठते थे—भाइयो सावधान ! शैतान आ रहा है !

सिंह का गंभीर गर्जन उस वक्त तो और भी भयानक मालूम होता था जब शेर लोगों के चिल्लाने की कुछ भी परवा न करके बाड़ के अन्दर चला जाता था। एक-न-एक कोई अवश्य ही उसकी बलि चढ़ जाता था।

शेर निडर होते जाते थे

इस प्रकार बार-बार हार खाते-खाते मैं स्वभावतः निराश हो गया। मैंने विचारा कि जरूर यह भूत है, जैसा यहाँ के लोगों का खयाल है। अब मुझे कोई उपाय नहीं सूझता था। मैं हैरान था कि क्या करूँ। घने जंगलों में भी खूब घूमा; परन्तु कोई सन्तोष-जनक परिणाम न हुआ। ऐसे अवसरों पर शेर उलटा हमारे ही आदमियों में से किसी को मार डालते थे; क्योंकि परिस्थिति हमारे प्रतिकूल और शेरों से अनुकूल थी।

समुद्र किनारे से फौजी सहायता भी पहुँच गई थी। हम

रात-भर बराबर जागते भी रहते थे। तब भी शेर दूसरी जगह कहीं-न-कहीं हमला करते और किसी-न-किसी को उठा ले जाते थे। पहले तो केवल एक शेर हमला करता और दूसरे बाहर खड़े रहते थे; किन्तु नवम्बर के पिछले सप्ताह में दो शेर दो कुम्हारों को उठा ले गये। एक को उन्होंने खा लिया, दूसरा आदमी खूब चिल्ला रहा था। हम तुरन्त सहायता के लिये पहुँचे। वह इस तरह झाड़ियों में अटक रहा था कि अस्पताल पहुँचने के पूर्व यमलोक सिधार गया। रात को तो शेर प्रायः हमारे निकट ही अपने शिकार को खाते थे; परन्तु ऐसी काली रात में बाहर खोज करना बड़ा ही बीहड़ प्रश्न था।

कुलियों ने हड़ताल कर दी

उक्त कुम्हार की मृत्यु की घटना के कुछ ही दिनों बाद, 'सावो' स्टेशन के समीप ही दो बार हमले हुए—एक बहुत बड़े बाड़े पर, जो इन्सपेक्टर की मजबूत टीन की झोपड़ी के समीप था और बहुत ही सुदृढ़ समझा जाता था। रात को बड़ा शोर हुआ। शेर फिर भी शिकार लेकर भाग गया। भागा क्यों, बड़ी बेपरवाही के साथ वहीं पास बैठा शिकार खाता रहा! जबतक उसका पूरा भोजन समाप्त न हो गया, इन्सपेक्टर ने कोई चालीस गोलियाँ चलाई होंगी।

इन्सपेक्टर को पूरा भरोसा था कि एक टाँग में जरूर गोली लगी है; क्योंकि आगे बढ़कर देखने पर शेर के टाँग घसीटने का चिह्न भी मालूम होता था। हम निशान के साथ-साथ जंगल में

बढ़ते गये। आगे चलकर चमकीली आँखें दिखाई दीं। हमने सोचा, यह शेर ही है। लेकिन ध्यान-पूर्वक देखने से पता चला कि यह उस गरीब कुली का खाया हुआ अंग है जिसे शेर उठाकर ले गया था। उसी के घिसटे हुए हाथ का वह निशान था, जिसे हम शेर की टाँग का चिह्न समझ रहे थे!

हम निराश हो वापस लौट आये। कैम्प में आकर मालूम हुआ कि कुलियों ने हड़ताल कर दी है। मैंने उन्हें बुलाया। उन्होंने आकर कहा—"साहब, हमें भारत सरकार ने काम करने के लिये भेजा है—शेर या शैतान से खिलवाने के लिये नहीं।"

बहुत-से तो पहली ही रेलगाड़ी से जाने को तैयार हो गये और काम छोड़ दिया। जो जरा बहादुर थे वे कहने-सुनने से रुक गये।

बहुत सोच-विचार के बाद मजबूत बाड़ और मजबूत मकान बनाने शुरू किये गये। बहुत लोगों ने तो यहाँ तक किया कि झोपड़ी में गढ़ा खोद लिया। उसीमें छिपकर सो जाते और गढ़े के मुँह पर स्लीपर रख लेते थे। आसपास जितने पेड़ थे उनपर मचान बाँध लिये गये। एक रात को एक वृक्ष पर इतने आदमी चढ़ गये कि टहनी टूटने पर गिर पड़ी। पास ही शेर एक दूसरे आदमी को खा रहा था—उसने पेड़ टूटने पर ध्यान ही नहीं दिया।

जिलाधीश बाल-बाल बचा

कुलियों की हड़ताल से कुछ पूर्व मैंने जिले के कलक्टर को

लिखा था कि वह इन धोखेबाज शत्रुओं की लड़ाई में मेरी सहायता करे—यदि हो सके तो अपने साथ सिपाही भी लेता आये। उन्होंने दूसरी सितम्बर नियत की। उस वक्त हड़ताल थी। मैंने दो तारीख की शाम को उनका सामान लेने के लिये अपना नौकर भेजा। थोड़ी देर में नौकर ने लौटकर खबर दी कि 'सावो' स्टेशन पर एक शेर खड़ा है—न गाड़ी है और न स्टेशन मास्टर या झंडीवाला! कोई भी वहाँ मौजूद नहीं है!

मैंने नौकर का विश्वास नहीं किया, क्योंकि साधारणतः नौकर भी डरपोक होते थे और एक कुत्ते को झाड़ी में देखकर उसे शेर समझ लेते थे!

मैंने कुछ देर इन्तजार करके अकेले ही भोजन किया जैसा हमेशा करता था। भोजन करके स्लीपरों की झोपड़ी पर जाकर बैठा। मुझे विश्वास था कि शेर इस जगह अवश्य आयेगा। कोई शोर तो सुनाई नहीं दिया, किन्तु समीप ही कुछ दाँत कड़कड़ाने की आवाज आई। आम तौर पर जब शेर किसी को उठाता तो खूब शोर होता था। मैंने सोचा, शायद कोई देहाती मुसाफिर मारा गया है। जरा आँखें फाड़कर देखा तो थोड़ी दूर पर शेर की आँखें साफ चमकती दिखाई दीं।

मैंने कोई चालीस गोलियाँ चलाईं। शेर कुछ ऊपर जाकर शिकार खाने लगा। जिधर से शेर की आवाज आ रही थी, सुबह मैं उसी तरफ गया। कलक्टर को उधर से आते देखकर

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, आप रात क्यों नहींआये! उन्होंने कहा शेर मिल गया था। मैंने कहा—शेर क्या कुछ और मिल गया होगा। किन्तु जब उन्होंने पीठ के फटे हुए कपड़े पर दाँतों के निशान दिखाये तब मुझे विश्वास हुआ। मैं उन्हें तुरन्त तम्बू में ले गया। अच्छी तरह मरहम-पट्टी की। उन्होंने तब रात की बीती कथा मुझे सुनाई। अब मुझे अपने नौकर की बात सच माननी पड़ी।

अब्दुल्ला की बदकिस्मती

कलक्टर 'मिस्टर ह्वाइट हैड' के साथ रात को यह बीती कि उनकी गाड़ी जरा लेट हो गई थी। 'सावो स्टेशन' पर वह देर से पहुँची। मेरे तम्बू तक आने के लिये घने जंगल में होकर आना पड़ता था। ज्योंही वे चले, अब्दुल्ला लालटेन लिये हुए पीछे-पीछे चला। आधी दूर तक कोई घटना नहीं हुई। उसके बाद एकाएक शेर झपटा। मिस्टर 'ह्वाइट हैड' ने तुरन्त गोली चलाई। गोली की आवाज से वह तुरन्त अलग हट गया। 'ह्वाइट हैड' की कमर पर थोड़ा-सा जख्म आ गया था। परन्तु उनसे हटकर वह अब्दुल्ला पर टूट पड़ा। उसे उठाकर ले ही भागा। अब्दुल्ला ने केवल इतने शब्द कहे—मालिक, शेर है! 'ह्वाइट हैड' ने फिर कई गोलियाँ चलाईं; किन्तु कोई परिणाम नहीं हुआ।

'ह्वाइट हैड' तो दैवयोग से बच गये। उनका जख्म भारी

नहीं था। थोड़े दिनों में घाव अच्छा हो गया कि तु तीन दिसम्बर को वे फिर वहीं पहुँचे जहाँ शेर का हमला हुआ था। उस वक्त इत्तफाक से जिला सुपरिंटेंडेंट भी तीस सिपाहियों के साथ अड़ गया। रात के समय उसने सबको उक्त स्थान पर नियत कर दिया। मैं और 'ह्वाइट हैड' दोनों एक झोपड़ी पर थे। एक जाल भी हमने ठीक कर लिया था। शेर को आकृष्ट करने के लिये दो सिपाही भी जाल में बैठा दिये थे—उनके पास लालटेन और बन्दूकें थीं—उनको यह हुक्म दिया गया था कि सावधानी से बैठे रहें और शेर के आते ही फौरन गोली चलावें।

आधी रात के बाद शेर आया! जाल के दरवाजे के पास ही पहुँच गया। किन्तु सिपाही इतने डर गये कि ठीक गोली न चला सके। सुबह मालूम हुआ कि शेर नहीं मरा। केवल कुछ रक्त पिंजड़े के पास पड़ा था। हमें फिर भी निराशा नहीं हुई। जिसकी हम मृत्यु चाहते थे, कम-से-कम उसका रक्त तो जरूर मिला।

सुबह हम पुनः शिकार के लिये चले। जंगलों में शेरों की गर्जना साफ सुनाई देती थी। केवल एक आदमी ही ने शेर को देखा। इसके बाद सब लोग दूसरी तरफ चले गये। मैं फिर अकेला रह गया।

सब लोगों के चले जाने पर ६ दिसम्बर को प्रातःकाल ज्यों ही मैं बिस्तर से उठकर बाहर जा रहा था, एक आदमी चिल्लाता हुआ आया कि शेर है। मैंने उससे दरियाफ्त किया कि कहाँ है?

वह जवाब देने भी नहीं पाया था कि शेर झपटता हुआ दिखाई दिया। इत्तफाक से वह आदमी तो साफ बच गया, केवल एक गधा उसकी पकड़ में आगया। शेर उसे थोड़ी दूर पर ले जाकर खाने लगा। मैं तुरन्त बन्दूक लेकर उसकी तरफ बढ़ा। हमसब चुपके-चुपके जा रहे थे; किन्तु मेरे नौकर का पैर एक टहनी में फँस गया। आहट पाते ही शेर चलता बना--घने जंगल में जा छिपा।

मैं घर आया। सब कुलियों को हुक्म दिया कि कनस्तर लेकर चलो और एक घेरा बना लो—ज्यों ही मैं सामने आऊँ, एकदम कनस्तर बजाने लगना।

जब मैं एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ शेर को भागते समय अवश्य मैदान पार करना पड़ता, तब जमादार ने फौरन् बाजा बजाने का हुक्म दिया। शेर निकलकर आहिस्ता-आहिस्ता चारो ओर देखता हुआ चल रहा था। मैं एक टीले के पीछे छिपा पड़ा था। शेर का ध्यान उधर नहीं था, वरन् वह मुझे देख लेता। जब वह मुझसे २४ गज के फासले पर आ गया तब मैंने गोलियों का बौछार शुरू कर दी। वह मुझे करीब देखकर बड़ा चकित हुआ। पिछले पैरों पर खड़ा होकर हमला किया ही चाहता था कि मैंने उसके सिर को गोलियों से पाट दिया।

मैं गोलियाँ चलाते-चलाते दाईं नली चलाना भूल गया और बाईं नली में फिर गोली डालने लगा। तबतक बाजे की आवाज

से फिर शेर भागा। मैंने फिर गोली मारी। वह गुर्राया। मालूम हुआ कि उसके गोली जरूर लगी है। परन्तु वह फिर भी बच गया। मुझे अपनी हार पर बड़ा क्रोध आया। बन्दूक बनानेवाले को खूब ही कोसा।

दूसरी रात का पहरा

इस भयंकर भूल के बाद घर लौटने के सिवा और कोई चारा न था। घर आकर पहले उस गधे को देखा। वह थोड़ा-सा दुम की तरफ से खाया गया था। साधारणतः देखा जाता है कि शेर अपने शिकार को दुम की ओर से सिर तक खाता है। मैंने गधे को तारों में बाँधकर रख दिया ताकि बन्दूक का निशाना लगते ही शेर फौरन् ही न भाग जाय। चार खम्भे लगाकर बारह फुट ऊँचा एक मचान बनाया। उसपर अकेला ही बैठ गया। अपने नौकर 'माहिना' को भी साथ नहीं लिया; क्योंकि उसे खाँसी उठती थी और खाँसी की वजह से मुझे अपने काम में विघ्न पड़ने का अन्देशा था।

मैं कुछ रात गये मचान पर गया। थोड़ी देर बाद जंगल में आवाज हुई। शेर की आँखें अँधेरे में चमकती हुई दिखाई दीं। उसने मुझे देख लिया। मुझे बड़ा भय हुआ—खम्भों की ऊँचाई बहुत कम थी—यदि चाहता तो शेर उछलकर ऊपर आ सकता था! मैं पछताया कि ऐसी गलती क्यों की—खम्भे बड़े न लगाये, जान-बूझकर अपनी जान जोखों में डाल दी!

इसी समय मेरी पीठ पर कोई चीज आकर लगी। मारे भय के मैं तुरन्त एक क्षण के लिये बेहोश हो गया जब जरा चेतना आई तब मुझे पता लगा कि एक उल्लू मुझे वृक्ष की टहनी समझ कर मेरे ऊपर ही बैठ गया है! मैं फिर सँभला। निशाना ठीक करके फिर गोली चलाई। शेर फिर जोर से गुर्राया।

पहले मनुष्य-भक्षक की मृत्यु

उसके बाद मैं कुछ देर के लिये आश्चर्य-चकित-सा रह गया। शेर चुपके-चुपके मेरी ओर बढ़ रहा था। यह देखकर मैंने फिर गोली मारी। शेर फिर भयंकर गर्जना करता हुआ जंगल में घुस गया। मैं बराबर गोलियाँ चलाता ही रहा। आखिर थोड़ी देर बाद शेर की आवाज बिल्कुल बन्द हो गई। मैंने समझ लिया कि शेर मर गया। फौरन् चारो ओर से आवाज आई कि क्या हाल है। मैंने उत्तर दिया कि मैं अच्छी तरह हूँ और शेर मर गया है। चारों ओर से धन्यवाद के नारे लगने लगे। लोग कनस्तर बजाते हुए दौड़े। मुझे बार-बार सलाम करने लगे। सबने बड़ी कृतज्ञता प्रकट की। मैंने कहा, अपने डेरों में चले जाओ। तब सब लौट आये। उन्होंने वापस आकर बड़ी खुशियाँ मनाईं। यहाँ तक कि अफ्रिका के निवासी तो नाचने लगे।

बाकी तमाम रात इसी तरह गुजरी। मैं बहुत सवेरे फिर उसकी खोज में चला। रास्ते ही में खून के निशान मिले। थोड़े फासले पर शेर भी बैठा दिखाई दिया। ऐसा मालूम होता था कि

फिर हमला करेगा। मैं करीब गया तो मालूम हुआ कि बिलकुल मुर्दा है। वह नाक से पूँछ तक ९ फुट ८ इंच लम्बा और ३ फुट ६ इंच ऊँचा था। वह इतना भारी था कि आठ आदमियों से कम उसे नहीं उठा सकते थे।

शेर की मृत्यु का यह समाचार बहुत जल्द दूर-दूर फैल गया। चारों तरफ से मुबारकबादी के तार आने लगे। सारे इलाके में खुशियाँ मनाई गईं कि चलो—एक मनुष्य-भक्षक का तो अन्त हुआ।

इन्सपेक्टर के बँगले के करीब चक्कर

यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि इस एक ही शेर की मृत्यु से हमारे कष्टों का अन्त न हुआ। 'सावो' में तो शेरों की खान थी। अगले ही दिन इस शेर का दूसरा साथी इन्सपेक्टर के बँगले पर चक्कर काटने लगा। एक रात शेर बाहर गुर्रा रहा था।

उस समय इन्सपेक्टर शराब पिये हुआ था। कुत्ते आवाज पहचान गया। वह अंदर से ही बोला—भाग जाओ। यह अच्छा हुआ कि इन्सपेक्टर ने किवाड़ न खोले। शेर बरामदे में बँधी हुई बकरी को लेकर भाग गया।

दूसरे दिन रात को, मैं शेर की ताक में इन्सपेक्टर के बँगले के पास ही लोहे की आलमारी में बैठ गया। गोली चलाने के लिये आलमारी में एक सुराख कर लिया। शेर का मन लुभाने के लिये दो-तीन बकरियाँ भी पास ही बाँध ली। सारी

रात तो कोई घटना नहीं हुई, पर कोई चार बजे सुबह में शेर आया। उस समय अँधेरा अधिक था। आहट पाते ही मैंने गोली चलाई। पर उस समय यह मालूम न हो सका कि निशाना ठीक लगा कि नहीं। दिन निकलने पर मालूम हुआ कि शेर साफ बच गया और गोली एक बकरी को लगी !

मैं कई आदमी साथ लेकर शेर की तलाश में चला। थोड़ी दूर जाने पर झाड़ियों में शेर बकरियों को खाता दिखाई दिया। हमें देखकर बहुत गुर्राया और हमला करने को झपटा। मैं और मेरे नौकर 'माहिना' के अतिरिक्त सब आदमी भाग गये ; पर शेर शिकार को छोड़कर जंगल में छिप गया। तब यह विचार करके कि शिकार को लेने के लिये शेर फिर रात में जरूर आवेगा, मैं 'माहिना' को साथ लेकर करीब के एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया; पर थकावट के कारण मुझे शीघ्र नींद आने लगी। मैंने 'माहिना' से कहा कि होशियारी के साथ बैठे रहो—जिस समय शेर की आहट मालूम हो, मुझे फौरन् जगा देना। थोड़ी देर के बाद मुझे उसने हाथ के इशारे से बताया कि शेर आ गया है। मैंने फौरन् दो गोलियाँ चलाईं; परन्तु जैसे ही मैं दूसरी बन्दूक उठाना चाहता था, शेर झाड़ियों में छिप गया। मैं उधर को ही गोलियाँ मारता रहा। सुबह देखा तो एक मील तक रक्त का चिह्न मिलता रहा; किन्तु आगे पहाड़ और घना जंगल था। वहाँ शेर का कुछ पता न चला कि वह किस तरफ गया है।

शेर घायल हुआ

इसके बाद कोई दस दिन तक कोई शेर दिखाई न दिया। फिर भी हम रातको चौकन्ना रहते थे। २७ दिसम्बर की रात में मेरे दस्ते के एक आदमी ने मुझे जगाया कि शेर हमपर हमला करना चाहता है। ये लोग मेरे मकान की चहार-दीवारी के बाहर एक पेड़ पर सो रहे थे। उस समय अँधेरा था। इस वास्ते बाहर जाना खतरे से खाली नहीं था। शेर को डराने के लिये उसी ओर मैंने तीन-चार फायर किये। वह भाग गया।

सुबह उठकर देखा कि रात शेर सब जगह घूमा था। उक्त पेड़ के उसने कई चक्कर लगाये थे। उसके पैरों के निशानों से साफ पता चल रहा था।

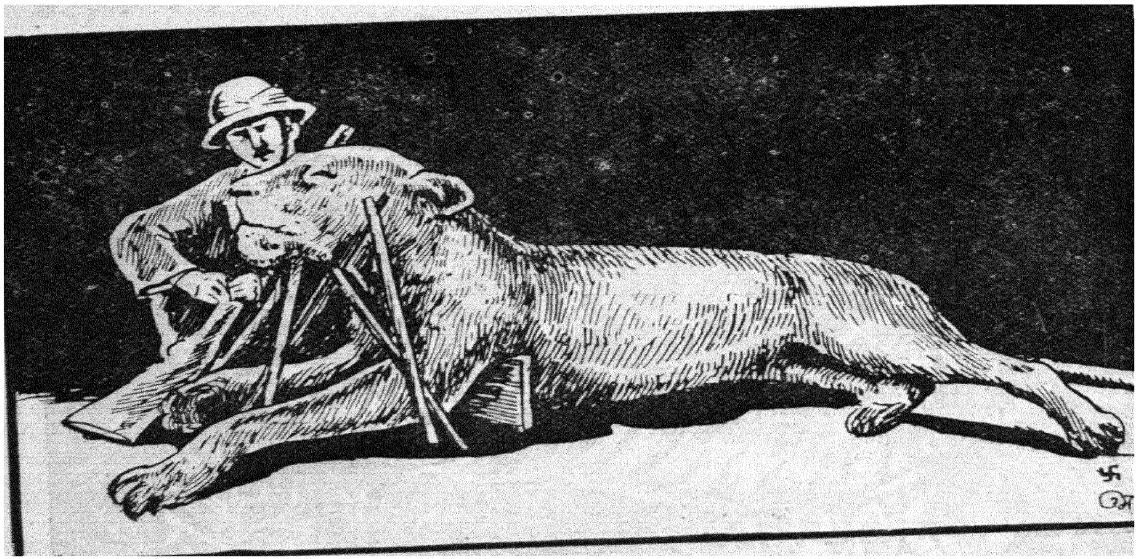
दूसरी रात को मैं इस विचार से कि आज भी शेर जरूर आयेगा, 'माहिना' को साथ लेकर फिर उसी पेड़ पर जा बैठा। दो बजे रात तक जागता रहा; पर कोई घटना नहीं हुई। मैंने 'माहिना' को जगाया। उसे जगाते रहने का हुक्म देकर मैं सो गया। कोई एक घंटा भी न होने पाया था कि आवाज सुनाई दी। मैं अचानक उठा तो ऐसा मालूम हुआ कि करीब में कोई चीज जरूर है। मैंने इधर-उधर देखा। कुछ पता न चला। मैं लौटने ही को था कि फिर कोई चीज करीब की झाड़ियों में दिखाई दी। मैंने गौर से देखा तो मालूम हुआ कि वास्तव में

शेर है। मैंने तुरन्त गोली चलाई। वह गरजता हुआ भागा। तीन गोलियाँ मैंने और छोड़ीं। पिछली बार वह फिर गुर्राया। परन्तु, फिर कुछ पता न चला कि किधर भाग गया।

सुबह होने पर 'माहिना' को साथ लेकर मैं फिर शेर की तलाश में चला। खून की बूँदों को देखते हुए हम आगे बढ़े। कोई एक मील भी न गये होंगे कि शेर दिखाई दिया। हमें देखकर वह बड़ा गुर्राया। मैंने गोली चलाई। शेर झपटा। मैंने दूसरी गोली मारी; पर उसका कोई असर न हुआ। शेर लँगड़ाता हुआ तुरंत मेरी ओर दौड़ा। मेरे कारतूस खत्म हो चुके थे। 'माहिना' के पास गोलियों से भरी दूसरी बन्दूक थी। मैंने उसे लेने के लिये हाथ बढ़ाया; पर वह तो पहले ही शेर के भय से पेड़ पर चढ़ गया था! मेरी गोली से शेर एक टाँग का बिलकुल लँगड़ा हो गया था। इसलिये जोर से नहीं झपट सकता था। यह देखकर मैं जल्दी से उस पेड़ की तरफ चला, जिसपर 'माहिना' चढ़ा हुआ था।

दूसरे मनुष्य-भक्षक की मृत्यु

मुझे दूसरी ओर जाता देखकर शेर लँगड़ाता हुआ जंगल में चल दिया। मैंने भी बड़ी फुर्ती से 'माहिना' की बन्दूक ले ली। गोली चलाई तो निशाना ऐसा बैठा कि शेर जमीन पर गिर पड़ा। वह बिना किसी हरकत के लेट गया। मैंने समझा, शेर मर गया। मैं फौरन् पेड़ से कूद आया; लेकिन यह मेरी मूर्खता थी।



वह नाक से पूँछ तक ६ फुट ८ इंच लम्बा और ३ फुट ६ इंच ऊँचा था। [पृष्ठ ६६]



मैं लौटने ही को था कि फिर कोई चीज करीब की झाड़ियों में दिखाई दी। मन गार स
देखा वो मालूम हुआ कि वास्तव में शेर है। [पृष्ठ ७१]

शेर भड़भड़ाकर हमले के लिये उठा। मैंने सिर और छाती में झट गोली मारी। बस, शेर सदा के लिये सो गया।

लोग दौड़े हुए आये। मुर्दा शेर को देखकर बड़े खुश हुए। इस शेर से उन्हें ऐसी दुश्मनी थी कि वे इसके मृतक शरीर के टुकड़े-टुकड़े करने पर उतारू हो गये। मैंने बड़ी कठिनाई से उन्हें रोका। अफ्रिका निवासी तो खुशी के मारे नाचने लगे। शेर की लम्बाई ९ फुट ६ इंच, ऊँचाई ३ फुट ११॥ इंच थी। मैं इसे अपने तम्बू में उठवा लाया। इसकी खाल भी पहले की तरह झाड़ों ने खराब कर रक्खी थी। इसके छः गोलियाँ लगी थीं। पहली गोली छाती पर केवल मांस में लगी पाई गई, जो मैंने इसके दस रोज पहले मारी थी और जिसे खाकर यह भाग गया था।

शेर के मरने की खबर दूर-दूर फैल गई। लोग देखने के लिये रेल से आने लगे। मुझे लोग 'शैतान के मारनेवाले' के नाम से पुकारने लगे। अच्छे-अच्छे कारीगर, जो इस स्थान—अर्थात् 'सावो' को छोड़कर चले गये थे, अपने काम पर वापस आ गये। जो लोग एक दिन मुझे मारना चाहते थे, अब सब मेरे खैरख्वाह हो गये। उन्होंने मुझे एक अभिनन्दन-पत्र और एक चाँदी की तश्तरी भेंट की। यह भी कहा कि ये चीजें हम आपको उस वीरता के उपलक्ष में भेंट करते हैं जो आपने जान जोखिम में डालकर दो शेर मारने में दिखाई है—ये शेर हमें हमेशा तंग करते थे—हमारे बहुत-से भाई भी इन्होंने खाये

थे—हम ईश्वर से प्रार्थना करने हैं कि वे आपको ऐश्वर्यशील और दीर्घायु बनावें।

मनुष्य-भक्षक की माँद थी

'सावो' के दक्षिण-पश्चिम कोण पर एक पहाड़ी थी। उसकी सैर करने की मेरा बड़ी इच्छा थी। एक दिन सामान की कमी से काम बन्द था। मैं और 'माहिना' दोनों एक पंजाबी कुली को साथ लेकर चले। अब मुझे जंगल में चलने का अच्छा अभ्यास हो गया था। नदी पार करके हम एक घने जंगल में बराबर चलते रहे। कुछ दूर जाकर डालियों के नीचे कोई चीज चमकती हुई दिखाई दी। मैंने समझा कि शायद मोती है। चाकू से खोदना शुरू किया। एक चमकोली चीज निकल आई। उसको मैंने अपनी घड़ी के शीशे पर घिसकर देखा तो मालूम हुआ कि यह कोई ऐसी चीज है जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी।

हम आगे बढ़े। वहाँ पर कुछ ऊँची पहाड़ी सामने आई। हम उसपर चढ़ गये। उसके दूसरी ओर एक बड़ा भयानक दृश्य दिखाई दिया। वहाँ एक शेर की माँद थी। उसके मुँह के समीप और इधर-उधर कुछ गहने—जैसे अफ्रिकावाले पहनते हैं—और हड्डियाँ पड़ी हुई थीं। मैंने समझ लिया कि यह शेर की माँद है, हम जाकर उसके समीप बैठ गये। बैठते ही एक गोली चलाई—इस खयाल से कि शायद कोई शेरनी या उसके बच्चे उसमें हों।

परन्तु चमगादड़ों के सिवा उसमें कुछ भी न था। मैंने उसका चित्र लिया। ईश्वर को धन्यवाद दिया कि अब उसमें शेर नहीं रहते।

जल की असफल खोज

थोड़े दिनों बाद मुझे रेल की लाइन बनाने का काम मिला। रेल ऐसे स्थान से होकर जाती थी जहाँ छोटी-छोटी सूखी हुई नदियाँ बहुत थीं। उनके किनारे पेड़ों के झुंड थे। सूरज की गर्मी बहुत कड़ी थी। इसके आगे मैदान था। पानी आगे नदी में मिल सकता था, जो दूर थी। अब तो पानी की बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई! कारण, मनुष्यों के लिये इतनी दूर से पानी लाना कठिन था। पानी न पहुँचने पर दुष्परिणाम भी हो सकता था। दूसरी बात यह कि सामान न आने के कारण भी बड़ी गड़बड़ी रहती थी। बहुत-सा समय तो तालाबों से पानी भरने और पानी बाँटने में लग जाता था। पानी बाँटते समय बड़ा झगड़ा होता था; क्योंकि कुली लड़ते थे, और हरएक कुली सबसे पहले पानी लेने की चेष्टा करता था। रोजाना दो गाड़ी पानी भरकर आता था। एक बार रात को भी इन गाड़ियों का प्रबन्ध किया गया।

एक रात को, जिस समय तालाब से कुली पानी भर रहे थे, एक शेर ने उनपर हमला किया। इसलिये रात को पानी भरना बन्द कर दिया गया—फिर दिन को लाने लगे। इस बात ने मुझे परेशान कर रक्खा था। कई साहसी कुली पानी खोजने गये;

क्योंकि आखिर जानवर भी तो कहीं से पानी पीते थे। कुलियों ने विचार किया कि पानी कहीं जरूर समीप है। इनमें से तीन आदमियों का, आजतक पता नहीं, क्या हुआ।

एक दिन एक अफ्रिका-वासी मेरे पास आया। सलाम करके बैठ गया। पूछने पर कि क्या काम है, उत्तर मिला कि तालाब बताने के लिये आया हूँ। मुझे बड़ी खुशी हुई। हमने सुबह ही चलने का विचार किया। मैं, माहिना और एक कुली—जो हमारे लिये खाना-पानी लिये हुए था—तीनों साथ चले। अफ्रिका-वासी का नाम 'लंगो' था। वह हमारा पथ-प्रदर्शक हुआ। हमें रास्ते में कोई कष्ट न हुआ, क्योंकि वह सब रास्ते जानता था। बहुत दूर जाकर हम एक सूखे तालाब पर आये। लंगो इसे देखकर दुखी हुआ। उसने अपनी भाषा में बड़ा खेद प्रकट किया।

'अथी' के मैदान में शेर

ज्योंही हम घर की ओर लौटे, मैंने कुली और दूसरे लोगों को वापस कर दिया। केवल 'माहिना'को साथ लेकर मैंने आखेट में अपने भाग्य की परीक्षा करनी चाही। हम दोनों लकर काट-कर लम्बी घास में होकर जा रहे थे कि बहुत दूर एक लाल चीज चमकती देखी। मैंने 'माहिना' से पूछा कि उसे कुछ दिखाई दिया? उसने कहा, कुछ तो नहीं। मैंने दूरबीन लगाकर देखा, किन्तु कुछ दिखाई न दिया; क्योंकि घास बहुत लम्बी थी। हम आगे

चल पड़े। 'माहिना' ने मेरे कान में कहा—देखिये, सामने शेर दिखाई दे रहा है! सचमुच शेर कोई दस गज के फासले पर था। मैंने उससे चुप रहने के लिये कहा। मैं भी चुपके-चुपके तिरछी नजर से शेर को देखता हुआ चला। शेर भी हमको बराबर देखता था और बार-बार अपने भारी सिर को घास से ऊपर उठाता था। वह सावधान हो गया। इस वक्त हम उससे दस गज के फासले पर होंगे। मैं बराबर ताक में था—कोई जगह ऐसी मिले कि गोली मारूँ। मैंने 'माहिना' से साथ देने के लिये पूछा। उसने 'हाँ' जवाब दिया।

ऐसे मैदान में, जो बिल्कुल समतल हो, शेर पर गोली चलाना बहुत ही बड़ी मूर्खता का काम था; किन्तु मुझे तो इसका चाव था। मैंने गोली शेर के सिर में मारी, पर वार खाली गया—शेर उसी तरह खड़ा रहा! फिर गोली चलाई तो वह अपनी पूँछ के बल पीछे की ओर गिरा। मैंने समझा, काम तमाम हुआ। किन्तु वह फौरन् ही कूदकर खड़ा हो गया। उसके साथ एक शेरनी भी थी जिसका ह[illegible] बिल्कुल गुमान न था।

तीसरे मनुष्य-भक्षक की मृत्यु

दोनों ने इरादा करके हमला किया। 'माहिना' ने कहा—मालिक, शेर आ रहे हैं। मैंने कहा—चुपचाप खड़ा रह। वे दोनों कुछ दूर तक दौड़ते हुए आये। किन्तु, शेर जब खड़ा हुआ,

लड़खड़ाकर गिर पड़ा। शेरनी ने कई छलाँगें आगे मारीं, किन्तु अपने साथी को न देख ठहर गई और फिर पीछे उसके पास चली गई। शेर फिर खड़ा हुआ। दोनों हमारी ओर खड़े गर्जन कर रहे थे। बिलकुल सामने ही थे।

किन्तु, अब मुझमें गोली मारने का साहस न रहा। मैं तो यही चाहता था किसी प्रकार ये लौट जायँ। इसलिये गोली मारकर उन्हें अधिक नाराज करना नहीं चाहता था।

शेर फिर दस कदम लोटा और फिर गिर पड़ा। फिर खड़ा हुआ और फिर दोनों ही जंगल में वापस चल दिये। इनके दूर पहुँच जाने पर मेरे दम-में-दम आया। जिस वक्त शेरनी वापस जा रही थी, मैंने कई गोलियाँ मारीं; किन्तु शायद ही कोई उसके लगी हो। वे वहीं जाकर बैठ गये जहाँ से आये थे, किन्तु शेर अभी तक जीवित था; क्योंकि उसकी साँस चलती सुनाई देती थी। वह मेरी ओर पीठ करके बैठा हुआ था।

मैंने हिम्मत करके एक गोली उसकी कमर में मारी। बस, शेर सदा के लिये सो गया। किन्तु मेरा उसके पास जाने का साहस न हुआ। 'माहिना' ने जब पत्थर फेंककर यह निश्चय कर लिया कि शेर मर गया है। तब हम दोनों उसके पास गये। हमलोग उसकी चमकीली आँखों और बड़े पंजों की तारीफ करने लगे। वह नौजवान था। उसकी लम्बाई ६ फुट ८॥ इंच थी। गोली उसके दिमाग में होकर जीभ के पास निकल गई थी। मैंने

उसकी जीभ निकाली कि इसे सुखाकर रक्खूँगा; किन्तु ज्योंही मैंने मुँह फेरा, गिद्ध उठाकर ले उड़ा!

शेर की खाल उतारना

जिस वक्त मैंने गोली चलाई, शेर लड़खड़ाकर गिरा। कोई एक मिनट का समय लगा होगा; किन्तु 'माहिना' ने उस दिन बड़ी बहादुरी दिखलाई। अगर वह ऐसा न करता तो बहुत बुरा होता। जैसा इस घटना के थोड़े दिनों बाद ही, इसी जंगल में, एक बन्दूक थामनेवाले लड़के के भागने से शेर उसके मालिक पर टूट पड़ा था और मार डाला था।

मैंने 'माहिना' को आदमियों को बुलाने के लिये भेजा। मैंने पहले शेरनी को देखा जो एक मील के फासले पर चुगते हुए हिरनों के पास बैठी थी; पर हिरनों को उसका कोई ध्यान न था। दिल में आया कि शेरनी को चलकर मारूँ; परन्तु इस खयाल से कि गिद्ध शेर की खाल को खराब कर देंगे, मैंने यह विचार छोड़ दिया और फिर खाल उतारने लगा। किन्तु इसमें बहुत चर्बी थी। मैंने सोचा, सारी खाल खराब हो जायगी, 'माहिना' इससे बहुत रुपये कमायेगा; क्योंकि हिन्दुस्तान में शेर की चर्बी बड़ी कीमत पर बिकती है। आम-बात की बीमारी तथा दूसरे रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है।

ऐसे सुनसान जंगल में एक मरे हुए शेर के पास बैठना जिस-पर गिद्ध मँड़राते हों और चारों ओर जंगली जानवर फिरते हों,

बड़े साहस का काम था; परन्तु कुछ देर बाद जब 'माहिना' को लगभग आधे दर्जन मनुष्यों के साथ आते देखा तब जान-में-जान आई। हम फौरन् चल पड़े। दिन छिपते ही घर पर पहुँच गये। मैंने खाल उतारकर सुखा दी। उसके लिये पहले ही से ढाँचा बना हुआ था।

उस रात को तम्बुओं में बड़ी रोशनी हुई। 'माहिना' ने बहुत-से श्रोताओं के बीच बैठकर शेर मारने का दिलचस्प किस्सा सुनाया। रात-भर गाना-बजाना होता रहा।

एक दिन सुबह मैं काम से बहुत थक गया था। विचार किया कि आज टट्टू पर चढ़कर शिकार को चलूँगा। साधरणतः मैं रोजाना पैदल ही जाया करता था। मैं बहुत शीघ्र ही भोजन से निबटकर 'माहिना' और छः अफ्रिका-निवासियों को साथ लेकर चल पड़ा। मैं कोई छः मील पैदल चला; क्योंकि एक तो जमीन पथरीली थी—दूसरे, इस बात का भी भय था कि शायद शेर किसी वक्त ढोल पीटनेवालों के सामने न कूद पड़े; किन्तु कोई ऐसी घटना नहीं हुई।

मैं टट्टू पर सवार हो गया। ढोलवाले मुझसे १०० कदम के फासले पर थे। वे चिल्लाते हुए चलते थे। आगे चलकर कुछ घना जंगल आया तो कुछ आहट हुई। एक शेरनी कूदकर मैदान को पार करती हुई दूसरे जंगल में चली गई। इसके बाद दूसरी दिखलाई दी।

मैं टट्टू से उतरा। अपनी बन्दूक ठीक की। मैंने कोशिश की कि दूसरी शेरनी के निशाना मारूँ; परन्तु मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जब मैंने देखा कि उसके पीछे एक और शेर निकला। मैंने भागते शेर पर गोली चलाई। उसने कुछ आवाज की! मैंने समझ लिया कि निशाना लग गया है और शेर जख्मी होकर आगे बढ़ गया है।

हम उनके पद-चिह्न देखते हुए आगे बढ़े। थोड़ी ही दूर तक निशान दिखाई दिये। शेर नदी के पार चले गये थे। फिर भी हम बराबर चलते रहे। तबतक घास में कोई चीज दिखाई दी। मैंने और-और लोगों को पीछे रोक दिया, और 'माहिना' को लेकर फिर आगे बढ़ा। हम चुपके-चुपके बहुत समीप पहुँच गये। मैंने एक ऐसा निशाना मारा कि शेर के सिर पर मानों बिजली गिरी हो। वह तुरन्त लेट गया। मैंने सब लोगों को पुकारा कि शेर मर गया। वे सब भागे आये और मेरे बहुत मना करने पर भी शेर के पास पहुँच गये। वे लोग उसकी खाल उतारने लगे। मैंने 'माहिना' को वहीं छोड़ जल्दी के साथ आगे बढ़ने का इरादा किया, ताकि कोई और शिकार हाथ लगे। जबतक 'माहिना' खाल उतारने में लगा रहा, मैं लगभग नदी के मुँह तक पहुँच गया; किन्तु कोई शेर न मिला। देर हो रही थी, इसलिये जल्दी-जल्दी वापस लौटा; किन्तु 'माहिना' को वहाँ न पाकर बड़ा निराश हुआ। मैंने एक-दो फायर किये और खूब जोर से चिल्लाया; किन्तु कुछ परिणाम न निकला। मैं बहुत रात गये घर आया।

वहाँ आकर देखा तो 'माहिना' खाल सुखा रहा था। मैंने उससे कुछ भी नहीं कहा। अगले दिन मैं रेल की लाइन पर काम करने चला गया।

डाक्टर ब्रुक के साथ शिकार पर

रेलवे-लाइन का काम नदी तक पहुँच गया। काम बहुत-कुछ समाप्त हो गया था। केवल थोड़ा-सा काम बाकी था। इस वजह से कुछ दिन इस जगह और ठहरना था।

थोड़े दिनों के बाद मेरे दोस्त डाक्टर ब्रुक आये। उन्होंने शिकार खेलने की इच्छा प्रकट की; क्योंकि मेरे साथ 'सावो' पर मालगाड़ी में इनके ऊपर भी हमला हो गया था; पर इन्हें शेर पर गोली चलाने का कोई अवसर न मिला था।

हमने शीघ्र चलने के लिये एक दिन नियत किया। उसके लिये सब प्रबन्ध भी कर लिया। पानी, चाय, मछली, बन्दूकें और काफी बारूद साथ ले ली। 'माहिना' से कहा कि कुछ आदमी तैयार करो जो बहुत सवेरे ही हमारे साथ शिकार पर चलें। यह कहकर मैं भी शीघ्र सो गया; क्योंकि सुबह जल्दी ही उठने का इरादा था। इतने में रौशन खाँ ने कहा—साहब, मैं भी चलूँगा। मैंने कहा, चलना। रौशन खाँ बीस बरस का तगड़ा जवान था। उसका रंग काला था। उसका मुझे पूरा विश्वास था।

सुबह हमने बत्ती जलाकर भोजन किया और फौरन् चल दिये,

क्योंकि जहाँ पर शेर बहुधा मिलते हैं वह जगह हमारे कैम्प से दूर थी। हमारा यह इरादा था कि जिस वक्त शेर रात को घूमकर वापस आवे, हम सूरज निकलते ही वहाँ पहुँच जायँ।

हम दो भागों में बँट गये। डाक्टर ब्रुक को ऐसे स्थान में रक्खा कि शेर पर निशाना लगाने के लिये अच्छा मौका मिले। मैं और रौशन खाँ, जो मेरे पीछे-पीछे खाने का सामान ला रहा था, दोनों दूसरी ओर चलते रहे। हम घनी जंगली घास की झाड़ियों में बड़ी सावधानी से चलते थे; क्योंकि वह ऐसी जगह थी जहाँ शेरों के छिपे रहने का सन्देह था। परन्तु कोई भी शेर दिखाई न दिया। आखिर चलते-चलते हम एक ऐसे मैदान में पहुँच गये जहाँ तेंदुओं का एक झुंड चर रहा था।

डाक्टर ब्रुक को तेंदुए के शिकार का भी शौक था। मैंने सीटी बजाई और तेंदुओं की ओर इशारा किया। डाक्टर ब्रुक उनकी ओर चले। मैं बैठ गया और गोली की आवाज सुनने का इंतजार करने लगा।

बहुत देर हो गई; पर गोली की आवाज सुनाई न दी। बड़ी चिन्ता हुई कि आखिर हुआ क्या। मैं उनकी खोज में चलने लगा तो रौशन खाँ अचानक चिल्लाया—साहब, हब्शी आ रहे हैं। मैंने पीछे फिरकर देखा तो लम्बे-तगड़े काले रंग के पाँच आदमी दिखाई दिये। उनके हाथों में छः-छः फुट लम्बे भाले थे। उनके सरदार ने मुझसे आते ही पूछा—सरकार, आप क्या

चाहते हैं ? मैंने उत्तर दिया कि हम शेर की तलाश में हैं। उन्होंने कहा कि चलिये, शेर हम दिखावेंगे। मैंने पूछा, कितनी दूर है। उत्तर मिला, समीप ही है।

हम उनके पीछे-पीछे चल दिये। जब हमलोग लगभग दो मील चल चुके, मैंने फिर पूछा—कितनी दूर और है ? उनमें से कोई कुछ नहीं बोला। वे बराबर चलते रहे। आगे जाकर सरदार ने अचानक आवाज दी—देखो, शेर आ गये। उसने तुरन्त एक तरफ इशारा किया। मैंने देखा, वास्तव में एक शेरनी आ रही है; पर वह तो शायद हमें देख झाड़ियों में भागकर छिप गई। तबतक एक पेड़ के पास कुछ सन्देहजनक चीज दीखाई दी। मैंने विचार किया, पेड़ ही में कोई चीज उगी है; परन्तु फिर ध्यानपूर्वक देखने से कोई चीज हरकत करती मालूम हुई। अब मैंने समझा कि वह शेर का सिर है; किन्तु वह इस प्रकार पेड़ के पीछे छिपा पड़ा था कि उसका शरीर नहीं दिखाता था। जब वह गुर्राया तब मुझे पक्का विश्वास हुआ कि वह शेर है। जरा देर में ही वह भी गरजता हुआ शेरनियों के पीछे भाग गया। इस स्थान पर गोली चलाने का भी ठीक मौका नहीं था। अतएव मैं भी दौड़कर ऐसे स्थान पर आया, जहाँ से गोली अच्छी तरह चलाई जा सके।

एकबारगी छः शेर

अबतक मैं इस आश्चर्य में था कि शेर किधर चले जाते हैं, परन्तु मैं अचानक रुक गया। मैंने चार शेरनियाँ और देखीं,

जिनमें से तीन तो अपने स्वामी के साथ भाग गईं और एक खड़ी रही। मैंने उसकी पीठ में ऐसी गोली मारी कि वह एकदम चीख उठी। मैंने समझ लिया कि निशाना ठीक बैठ गया। उसके पास दूसरे आदमियों को छोड़कर मैं शेर की तलाश में आगे बढ़ा।

मैं बहुत जल्द दौड़कर एक ऊँचे स्थान पर चढ़ गया वहाँ कोई साठ गज पर एक शेर को खुले मैदान में एक पेड़ के पीछे देखा। वहाँ दूसरा कोई पेड़ नहीं था, वरन् मैं उसपर कूदकर चढ़ जाता। उस शेर की ओर देखने की मेरी तो हिम्मत नहीं होती थी; परन्तु वह बराबर मेरी ओर ताक रहा था। इस वक्त सिवा गोली चलाने के और कोई चारा न था; पर जब मैं सोचता था कि निशाना न लगने को दशा में क्या परिणाम होगा, मेरा तो दिल काँप जाता था।

खैर, मैंने साहस करके गोली चलाई। बस, तुरन्त ही उसका सिर नीचे को लटकता दिखाई दिया। साथ ही, वह जोर से चीखा भी। मैंने उसी स्थान पर, जहाँ से चीख आई थी आधा दर्जन गोलियाँ दनादन चला डालीं। शेर निर्जीव होकर वहीं गिर पड़ा। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि अब वह जरूर मर गया है। मैं एक आदमी को वहाँ छोड़कर आगे बढ़ा, ताकि उस शेरनी पर वार करूँ जो अब भी आँखों से ओझल नहीं हुई थी।

एक घायल शेर का भयंकर हमला

इस वक्त मेरे साथ तीस के लगभग आदमी हो गये थे; क्योंकि ऐसे अवसर पर शिकार का भाग बाँटने के लिये अफ्रिका

निवासी अक्सर आ जाया करते हैं। मैंने इनको इशारे से एक कतार में खड़ा होने के लिये और शेरनी को अपनी जगह से हटाने के लिये इशारा किया; इतने में वह भागी। मेरे लिये उस समय निशाना मारने का बहुत अच्छा अवसर था, परन्तु दैवयोग से मेरे और उसके बीच कुछ आदमी आ गये थे, इस लिये मैं निशाना न मार सका! वह भाग ही गई।

मैंने विचार किया कि डाक्टर ब्रुक के आने तक हमें इन्तजार करना चाहिये, और इस बीच में हम शेर की तलाश करें; क्योंकि जो आदमी शिकार तलाशने के लिये नियुक्त किया गया था वह डर के मारे हमें छोड़कर पहले ही भाग आया था। हमने प्रत्येक झाड़ी को पीटा और आसपास का सारा जंगल अच्छी तरह छान डाला। अधिक पेड़ कँटीली केतकी के थे, इसलिये शेरनी को तलाशना बड़ा कठिन था। बहुत खोज के बाद वह एक जगह पड़ी दिखाई दी। बस, सब लोगों ने उसे घेर लिया; कहने लगे—अब यह अवश्य मर गई है। मैं भी उसके पास गया। सोचा, अब इसमें उठने की हिम्मत नहीं। मैं उसके चारों ओर घूमा। जब उसके मुँह के सामने आया तो चिंघार मारकर खड़ा हो गया! वह तो शेरनी नहीं, शेर था! उस वक्त मुझमें और उसमें केवल तीन कदम का फासला था।

रौशन खाँ बाल-बाल बचा

शेर को गरजकर उठते देखते ही मेरे सब साथी भागकर समीप

के पेड़ों पर चढ़ गये; परन्तु ज्यों ही मैं अचानक पीछे को हटा, रौशन खाँ मेरी लपेट में आ गया; किन्तु, तुरन्त सँभल भी गया। मैंने चट शेर पर एक फायर किया; लेकिन निशाना चूक गया। शेर मेरी तरफ बढ़ा। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि अबकी बार मुझे जरूर मार डालेगा; क्योंकि मैं उसके पंजों के पास ही था—मृत्यु सिर पर नाच रही थी; पर ईश्वर ने मेरी रक्षा की।

जैसे ही रौशन खाँ सँभलकर भागा, शेर भी मेरी तरफ मुड़कर उसका पीछा करने लगा। मुझे फिर गोली चलाने का अवसर मिल गया। मैंने अपने नौकर रौशन खाँ को बचाने के लिये फिर गोली छोड़ी; पर वार खाली गया। इस समय इत्तफाक से रौशन खाँ एक तरफ मुड़ गया और शेर ठीक मेरे सामने आ पहुँचा। मैंने फिर निशाना ठीक करके गोली छोड़ी। अबकी बार यह शैतान सदा के लिये सो गया और रौशन खाँ काल के गाल में जाने से बाल बाल बचा। उसकी पगड़ी झाड़ियों में उलझ रही थी और कपड़े फट गये थे। उसे इस बात का कुछ पता न था कि उसके पीछे क्या हो रहा है। वह बराबर पेड़ पर चढ़ा चला जा रहा था। उसे देखकर मुझे बड़ी हँसी आई। मैंने बड़ी मुश्किल से उसे नीचे उतारा। बेचारा बहुत ही भयभीत हो रहा था। बड़ी देर में उसे होश आया।

अब हमारे दूसरे साथी, जो पहले ही भाग गये थे, शेर के मारे जाने पर अपनी-अपनी जगहों से उतरकर मेरे चारों ओर

जमा हो गये। वे खुशियाँ मनाने लगे। उन्होंने वहाँ जंगल में इस घटना का नाटक खेलना शुरू किया। उनमें से एक शेर बना, और हमला किया। दूसरा ठाँ-ठाँ करता हुआ पीछे हटा, जिस प्रकार मैं हटा था। तब पहले ने, जो शेर का पार्ट कर रहा था, फिर हमला किया। तीसरा आदमी रौशन खाँ की तरह पेड़ पर चढ़ गया। इसी प्रकार वे सब हँसी-दिल्लगी कर रहे थे और बड़े आनन्द में थे।

मैंने विचार किया कि अब शेरनी को मारना चाहिये, जिसको पहले गोली लगी थी और जिसे मैं मरी हुई समझता था। मैं बड़ी खोज करता हुआ उसके पास पहुँचा। 'माहिना' भी साथ था। करीब से देखने पर पता चला कि वह जीवित है। मैंने एक पेड़ की ओट में होकर निशाना लगाया। निशाना ठीक लगा। वह तुरन्त मर गई। मैंने 'महिमा' को हुक्म दिया कि तुम दोनों पशुओं की खाल उतारो—मैं और आदमियों को साथ लेकर शेरनी की तलाश में जाता हूँ।

हमने बहुत ढूँढ़ा, पर दूसरी शेरनी न मिली। निराश होकर हम घर लौट आये। आज के शिकार से सब लोग बहुत प्रसन्न थे; पर रौशन खाँ बहुत शर्मिन्दा मालूम होता था। आज की घटना से वह इतना डरा कि आगे जब कभी मैं उसके शिकार में साथ चलने के लिये कहता, वह बड़ी गम्भीरता से दबी जबान में उत्तर देता—"नहीं हुजूर, मैं नहीं चलूँगा।"

शेर और गीदड़

नदी का पुल तैयार हो जाने के बाद काम बहुत जोरों से शुरू हुआ। सब लोग सुबह से शाम तक मिहनत से काम करते थे। मैं सुबह ही से किनारे, रास्ते और अस्थायी पुलों को देखता फिरता था। एक दिन सूरज बहुत तेज था। मैं कोई तीन बजे घर लौटा और आरामकुर्सी पर लेट गया। समीप ही स्टेशन था। एक छोटा इंजन, सामान ले जाने के लिये, तैयार किया गया। मैं इसके प्रबंध में ऐसा संलग्न था कि मुझे अपने आस-पास की भी कुछ खबर न थी।

मैंने नजर उठाकर देखा तो सामने एक दुबला-पतला आदमी कंधे पर खाल डाले नजर आया। उसने मुझे सलाम किया और कहा—'साहब, दो शेर हैं; उन्होंने अभी एक पशु को मारा है और उसे खा रहे हैं!' मैंने पूछा—'दोनों शेर हैं या एक शेर है, दूसरी शेरनी' और कितनी दूर हैं? उसने दूसरे अफ्रिका-वासियों की तरह और कुछ न कहकर केवल यही उत्तर दिया कि समीप ही हैं।

मैंने खच्चर पर जीन खिंचवाया। उस अफ्रिकन तथा अपने नौकर 'माहिना' को साथ लेकर तुरन्त शिकार के लिये चल पड़ा। फिर यह सोचकर कि शायद मैं दोनों शेरों के मारने में कामयाब हो जाऊँ, एक दूसरे कुली को भी खाल लाने के वास्ते साथ ले लिया। जिला-इंजिनियर 'मिस्टर स्पूनर' उस कैम्प में मौजूद नहीं थे। मैंने एक आदमी से कह दिया कि जिस समय

आवें, हमारे शिकार में जाने की सूचना दे देना और यह भी कह देना कि हमलोग दिन छिपे बाद लौटेंगे।

मार्ग में हमें और भी अफ्रिका-वासी मिले, जिनके साथ हमारे पथ-प्रदर्शक की खूब लड़ाई हुई; क्योंकि वह उन्हें—इस खयाल से कि कदाचित् यह भी शिकार के मांस में हिस्सा बटावें—साथ चलने के लिये मना करता था। मैंने उससे कहा कि झगड़ा न करो, मैं तुम्हारा खयाल रक्खूँगा।

हम लगभग दो मील चले गये। एक छोटी पहाड़ी पर चढ़कर उस अफ्रिकन ने इशारा किया कि साहब, शेर मौजूद हैं। मैंने दूरबीन लगाकर देखा तो उसकी बात ठीक मालूम हुई। वास्तव में दो शेर एक जंगली घोड़े को खा रहे थे और एक गीदड़ भी वहीं मौजूद था—जो कभी-कभी मांस का टुकड़ा ले भागता था। जब-जब शेर गीदड़ की तरफ झपटते, वह पीछे हटकर भाग जाता, पर जब शेर फिर शिकार खाने लग जाते, गीदड़ वहीं आ जाता! यह तमाशा देखकर मुझे बड़ा आनन्द आया।

अफ्रिका-निवासियों ने मुझे बताया कि शेर सब जानवरों का मांस खा लेते हैं, पर गीदड़ को मांस कभी नहीं खाते।

शेरनी की मृत्यु

जब मैं यह तमाशा देख रहा था, अफ्रिकन लोग कूदकर मेरे पास आ गये। उसी समय शेर-शेरनी के जोड़े ने हमारी तरफ देखा। वहाँ से निशाना लगाना असम्भव था। अतएव मैं किनारे-

किनारे एक ओर को बढ़ा। जब लगभग दो सौ गज के फासले पर पहुँच गया, शेरनी भाग गई और शेर भी धीरे-धीरे पीछे चला। अफ्रिकन लोग तो जंगली घोड़े के मांस पर झगड़ा करने लगे और मैं 'माहिना' को साथ लेकर खच्चर पर चढ़ आगे बढ़ा।

मैं एक पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया। शेर-शेरनी दोनों बराबर मुझे दिखाई देते थे। शेरनी लम्बी घासों में छिप गई। अब भी वे मुझसे लगभग दो सौ गज के फासले पर थे। बीच में एक गढ़ा था। मैंने अच्छा अवसर समझ निशाना लगाया। निशाना ठीक बैठा। शेरनी बहुत उछली-कूदी। बाद को चुपचाप लेट गई। सदा के लिये वह सो गई।

इसके बाद मैंने अपना ध्यान शेर की तरफ किया। इस वक्त कई आदमी, जिनको जंगली घोड़े का शिकार नहीं मिला था, दौड़कर मेरे पास आ गये। मुझे विश्वास था कि अब हमलोग शेर का पता जल्द लगा लेंगे।

कुछ दूर जाकर घास में कुछ काली चीज दिखाई दी। ध्यान-पूर्वक देखने से शेर साफ दिखाई देने लगा। मैंने निशाना मारा; किन्तु वह चूक गया। मैंने फिर दुबारा निशाना मारा; किन्तु फिर चूक गया। दैवयोग से शेर बिल्कुल चुपचाप पड़ा रहा, हमपर हमला नहीं किया!

अब मैंने वही चाल चली, जिस चाल से मैंने 'कपाटी' के मैदान में एक शेर को मारा था। मैंने कहा कि अर्धगोलाकार

दल बनाकर तुमलोग खच्चरों के साथ चलो। मैं यहीं पर लेटता हूँ। वे लोग इसी प्रकार चले। शेर बराबर उनकी ओर को मुँह करता जाता था। जब उसका मुँह दूसरी ओर को फिरा, मैंने अवसर पाकर निशाना मारा वह बहुत उछला-कूदा। एक बार खड़ा भी हुआ, किन्तु गिर पड़ा। मैंने दौड़कर एक जोर का निशाना और मारा। बस, उसका काम तमाम हो गया।

सब लोग आकर उसकी खाल उतारने लगे। शेरनी की खाल के लिये उन्होंने यह निश्चित किया कि कल उतारेंगे; क्योंकि अंधेरा हो गया था। इसलिये खाल उतारना खतरनाक था।

इसी समय कई आदमियों ने आकर मुझसे कहा कि साहब, दो शेर और हैं। मगर बहुत देर हो गई थी, हम जल्दी खाल लेकर तेजी से कैम्प की ओर चले। कैम्प कोई सात मील दूर था। हम रास्ता भूल गये। उसी वक्त बन्दूक की आवाज आई। मैंने समझा, इंजीनियर 'स्पूनर' आ रहा है; क्योंकि देर होने से उसने समझा होगा कि शायद कोई दुर्घटना हो गई हो।

सचमुच 'स्पूनर' हमें कोई एक मील पर कई आदमियों के साथ मिला। हमको खाल के साथ देखकर बड़ा खुश हुआ। सब लोग बहुत रात बीते डेरों पर सकुशल पहुँचे। भोजन के बाद मेरी और स्पूनर की बातचीत हुई। मैंने बतलाया कि जिस वक्त हमलोग खाल उतार रहे थे, दो और शेर हमारी ताक में थे।

इस तरह मैंने शिकार के लिये उसे उत्साहित किया। उसने दूसरे दिन चलने का वादा किया।

मेरे और स्पूनर के बीच शेरों के विषय में, बड़े मजेदार बातें होती थीं। उसका खयाल था कि चीता शेर से अधिक भयंकर होता है! मैं इस बात को मानता था; पर मेरी यह भी धारणा थी कि चीता भले ही अपने दुश्मन को छोड़ दे; किन्तु वार होने पर शेर या तो स्वयं मर जायगा या अपने शत्रु को मार देगा। वह भी मेरी इस राय से सहमत था। इसी बातचीत के दूसरे दिन एक बड़ी भयंकर दुर्घटना हुई।

मेरे साथ 'स्पूनर' शिकार को चला

उस दिन तमाम रात हमारे चारों ओर शेरों का चिंघाड़ सुनाई देता रहा। पिंजड़े के अन्दर शेर का चिंघाड़ और ही किस्म का होता है; लेकिन जिस समय वह जंगल में स्वतन्त्र रूप से गरजता है, सुननेवालों का दिल थर्रा जाता है।

हम बहुत सवेरे उठे। सारा सामान तैयार किया। किन्तु जब सब तैयारी हो गई तब स्पूनर मेरे साथ चलने से इनकार करने लगा। कहा—मेरे पास छोटी बन्दूक है, बड़े शिकार में छोटी बन्दूक से जरूर दुर्घटना हो सकती है। लेकिन मुझे उसपर बड़ा भरोसा था। मैं दूसरे की बन्दूक लेना नहीं चाहता था; क्योंकि दूसरे की बन्दूक की अपेक्षा अपनी बन्दूक ही समय पर काम देती है। लेकिन, जब किसी प्रकार स्पूनर ने न माना तब

मैंने उससे समझौता किया। उसकी बन्दूक 'माहिना' को दे दी, ताकि समय पर काम लिया जा सके।

स्पूनर के ताँगे में बैठकर हमलोग चले। हमारी पार्टी में छः आदमी थे—मैं, स्पूनर और उसको शिकार खिलानेवाला हिन्दुस्तानी शिकारी 'भूटा', मेरा नौकर 'माहिना', कोचवान इमामुद्दीन और छठा आदमी कोतल घोड़ा लिये हुए था।

जहाँ पिछली रात को हमने शेर देखे थे वहीं हमलोग गये; किन्तु कोई पता न चला। तब हम और आगे बढ़े। एक कोई चीज दिखाई दी, जो शेरनी ही थी। हमें देखकर चली। उसी समय एक शेर भी नजर आया। शेरनी के पीछे-पीछे शेर चलता हुआ हमारी ओर भी देखता था। हम उस वक्त पैदल थे। हमने सोचा कि ताँगे से पहाड़ी की दूसरी ओर चलें, पैदल तो पकड़ना बड़ा कठिन है।

हम शीघ्र ही पहाड़ो के दूसरी ओर पहुँचे; लेकिन कोई पता न चला। तब हम पहाड़ी के ऊपर चढ़े। अब दूर से यह जोड़ा दिखाई दिया; पर हमें यह उम्मीद न थी कि हम उनके और भी समीप पहुँच सकते हैं। इसलिये मैंने वहीं से शेरनी पर वार किया। वह जमीन पर गिरकर बहुत देर तक तड़पती रही, पर बहुत घायल होने पर भी हिम्मत करके खड़ी हो गई। वह अब शेर के पीछे-पीछे चलने लगी। शेर के साथ ही बड़ी-बड़ी घासों में छिप गई—जहाँ से उनको निकालना मुश्किल था।

शेरों ने हमारा पीछा किया

इस समय बहुत देर हो गई थी। हमने सोचा कि दूसरे दिन सबेरे आकर शिकार करेंगे। मैं घोड़ा पर चढ़ा आगे-आगे आ रहा था, स्पूनर पीछे ताँगे में था। अचानक घोड़ा रुका और काँपने लगा। मैंने इधर-उधर देखा तो दो शेर नज़र आये। ये शेर बिल्कुल वे थे जिनकी तलाश में हम आये थे। मैंने स्पूनर को पुकारा कि ये वे ही शेर हैं जिनको हमने रात देखा था। स्पूनर भी आ गया।

शेर हमसे दो सौ गज के फासले पर थे। स्पूनर दाहिनी ओर, मैं बाईं ओर था। हम निशाना मारने के लिये साठ गज के फासले पर जमीन पर बैठे। यह देख शेर छलाँग मारकर भागे। मैंने भागते हुए को गोली मारी। वह बहुत ही गुर्राया। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि हमला करेगा; परन्तु ईश्वर की कृपा हुई, वह फिर अपने साथी के साथ भागा। मैं फिर उसके पीछे-पीछे चला।

इस वक्त तक स्पूनर भी मेरे पास आ गया था। हम दोनों ने विचार किया कि पहले दूसरे शेर को गोली मारकर अपंग बनाना चाहिये। स्पूनर ने भी इस तजबीज को पसन्द किया। करीब तीन सौ गज के फासले से गोली चलाई गई। निशाना ठीक लगा। शेर तड़प कर जमीन पर गिर पड़ा। उसके बाद

दूसरे शेर का, जिसको पहले ही गोली मारी थी, मैंने काम तमाम करने का विचार किया। वह सामने ही दो सौ गज के फासले पर हमारी ताक में था। करीब पहुँचने पर वह हमपर हमला करना चाहता था; लेकिन हमने उसे यह मौका नहीं दिया।

स्पूनर ने इसी समय दूर ही से गोली चलाई। गोली शेर के दिल पर लगी। वह जमीन पर गिरा और सदा के लिये सो गया। इस वक्त शाम हो गई थी। इसलिये, यह सोचकर कि अब दूसरे शेर को मारना चाहिये, हम दाहिनी ओर को बढ़े।

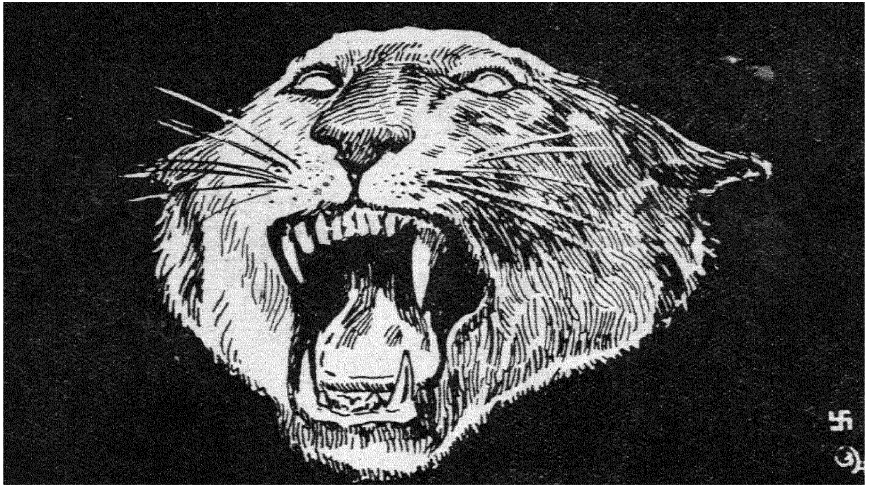
शेर घासों में पड़ा हुआ बराबर हमारी तरफ देख रहा था। वह बहुत ही भयंकर दिखाई देता था। मुझे विश्वास हो गया कि यदि दूर ही से इसका काम न तमाम किया तो यह अवश्य हमपर हमला करेगा।

बेचारा 'भूटा'!

हमने लगभग अस्सी गज दूर से निशाना लगाने का विचार किया। बाईं ओर मैं पाँच गज आगे था। 'भूटा' दाहिनी ओर स्पूनर से पाँच गज के फासले पर था। शेर बहुत गुर्रा रहा था। अपनी पूँछ से वह धूल उड़ा रहा था। ज्योंही मैं अपने घुटने के बल बैठा, स्पूनर ने तुरत शेर को गोली मारी। वह छलाँग मारता हुआ मेरी ओर आया। जिस वक्त वह पचास गज पर था, मैंने भी गोली मारी; परन्तु वार खाली गया। अब शेर मुझसे केवल पचीस गज के फासले पर रह गया था। मैंने फिर गोली मारी;



बेचारा 'भूटा' !
[पृष्ठ ९६]



भूटावाले शेर के शरीर को हानि नहीं पहुँची थी। उसका सिर इस दुर्घटना की यादगार के तौर पर अबतक मेरे पास मौजूद है। [पृष्ठ ९८]

पर वह भी चूक गई। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि शेर अब जरूर मुझपर हमला करेगा; पर भगवान् की दया से वह मुड़ गया।

हमें छोड़कर शेर 'भूटा' पर टूट पड़ा। उसकी टाँग पकड़कर खूब घसीटा और रगड़ा! फिर उसकी गरदन पकड़ने की कोशिश की; किन्तु 'भूटा' ने अपना हाथ उसके मुँह में घुसेड़ दिया था। इस घटना में कोई दो सेकंड लगे होंगे। इसी समय 'इमामुद्दीन' ने मेरे हाथ में कारतूस दी। मैं 'भूटा' की सहायता के लिये दौड़ा; किन्तु मुझसे पहले स्पूनर पहुँच गया था। वह शेर को एक ओर हटाना चाहता था; किन्तु सफल नहीं हुआ। शेर तो 'भूटा' की बाँह चबाने में लगा हुआ था; इसलिये उसने स्पूनर की ओर कुछ ध्यान नहीं दिया। उसकी आखें मेरी ओर थीं।

जैसे ही मैं पहुँचा, उसने 'भूटा' की बाँह चबाना बन्द कर दिया। फिर भी वह बाँह को अपने मुँह में ही थामे हुए था। अब वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर हमले के लिये तैयार हो गया। उसने अपने होंठ सिकोड़कर भयंकर दाँत दिखलाये। मैंने तुरन्त गोली मारी; पर वार खाली गया। इस समय मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरे दिल की हरकत बन्द होना चाहती है—मेरी मृत्यु निकट है; क्योंकि शेर अब गोली चलाने का अवसर भी न देगा।

पर हिम्मत बँध आई, मैं एक कदम और पीछे हटा।

शेर की आँखें लाल हो रही थीं। जिस वक्त मैं तीसरा कदम पीछे रख रहा था, शेर हमले के लिये तैयार हो गया। अचानक मेरे ध्यान में आया कि यह दूसरे की बन्दूक है—अबतक मैंने इसे अपनी बे-घोड़े की बन्दूक समझकर घोड़ा नहीं दबाया, इसी वास्ते गोली नहीं चली और मैंने पूरा धोखा खाया। जो बन्दूक मेरे पास उस समय थी वह घोड़ेवाली थी। मैंने तुरन्त घोड़ा खींचा। गोली लगते ही शेर भूटा के सिर पर जा गिरा और उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

भूटा की मृत्यु

हमने तुरत भूटा को शेर के नीचे से निकाला। शेर का जबड़ा फाड़कर उसकी बाँह शेर के मुँह से बाहर खींची। देखने पर मालूम हुआ कि दायाँ पैर और बायाँ हाथ शेर ने चबा लिया है तथा दाहिना पैर तोड़ डाला है। भूटा इस वक्त बेहोश था। मैंने उसे शराब पिलाई, ताँगे में बैठाकर अस्पताल ले चला; किन्तु दोनों मरे हुए शेरों को वहीं छोड़ दिया।

दूसरे दिन सुबह को जब उन मरे हुए शेरों को लाने के लिये वहाँ पहुँचे, देखा कि दो और शेर उन मरे हुए शेरों को खा रहे थे! पर भूटावाले शेर के शरीर को हानि नहीं पहुँची थी—उसका सिर इस दुर्घटना की यादगार के तौरपर अबतक मेरे पास मौजूद है।

जिस समय हम अस्पताल पहुँचे, सौभाग्य से डाक्टर मौजूद

थे। उन्होंने बड़ी सावधानी से जख्मी को धोया और दवा लगाकर पँट्टी बाँध दी। पीने की दवा भी दी, जिससे 'भूटा' को तुरन्त नींद आ गई। वह शान्ति के साथ पड़ा रहा।

डाक्टर 'विन्सटन' ने बड़ी होशियारी से आपरेशन (चीर-फाड़) करके टाँग काट डाली। बूढ़े शिकारी (भूटा) ने इस तकलीफ को बड़ी बहादुरी से बरदाश्त किया। जख्म अच्छे होने लगे। 'भूटा' की जिन्दगी बचने की आशा बँध चली। 'भूटा' अपनी आप-बीती बड़े गर्व से सुनाता था। आराम होने पर सारे शेरों से बदला लेने का स्वप्न देखा करता था। पर जब उसे मालूम हुआ कि उसके एक ही टाँग रह गई है तब उसे बड़ा शोक हुआ। हालत फिर खराब हो चली! उसके जीवन की आशा न रही। आखिर सन् १८९८ ई० में १९ जुलाई को वह बूढ़ा और बहादुर शिकारी चल बसा।

यह पहला ही अवसर था जब खुले मैदान में शेरों से मुठभेड़ हुई थी और इसका परिणाम ऐसा दुःखदायी हुआ था कि सारी जिन्दगी याद रहेगा। इसके बाद काम अधिक होने के कारण फिर कभी शिकार के लिये बाहर जाने का मौका नहीं मिला।

रेलगाड़ी में शेर

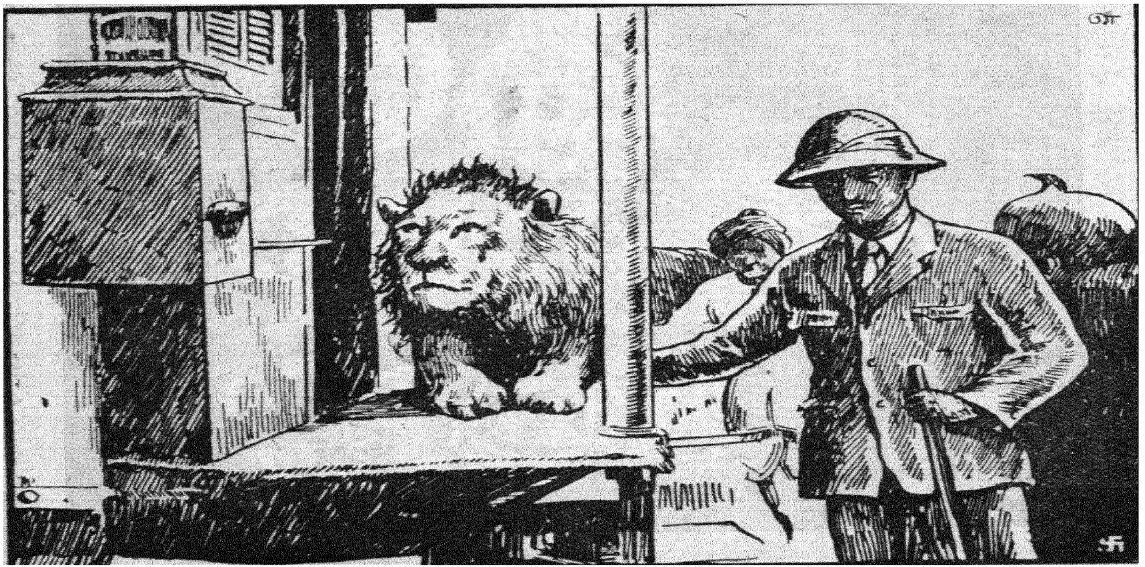
बृटिश पूर्वी अफ्रिका से आने के कुछ दिन पहले एक दिन पुलिस-सुपरिंटेंडेंट 'मिस्टर रायल' ने अपनी रेलगाड़ी ही में मेरी दावत की। उसी गाड़ी पर वे मुआयना (मुलाहजा) करने जाया

करते थे। कितने दुःख की बात है कुछ दिन बाद आखिर इसी गाड़ी में उनकी मृत्यु हुई! एक शेर स्टेशनपर परक गया। मनुष्य के खून का उसे ऐसा चसका लगा कि बिना किसी खौफ के स्टेशन मास्टर आदि रेलवे-स्टाफ के आदमियों को उठाकर ले जाता था।

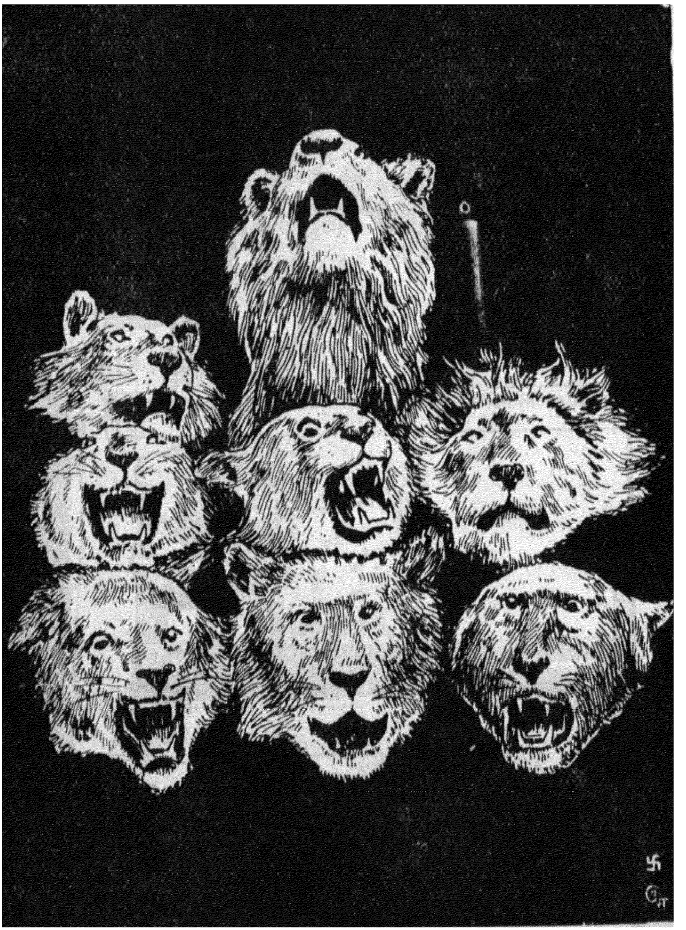
एक दिन वह शेर शिकार के लिये स्टेशन की छत पर चढ़ गया। वहाँ लोहे की चद्दर को काटने की कोशिश करने लगा। तारबाबू ने तुरन्त तार-द्वारा सूचना दी कि शेर स्टेशन पर आक्रमण कर रहा है—यथासम्भव सहायता करो। उस समय यह अच्छा हुआ कि उसके पंजे लोहा काटने की वजह से जख्मी हो गये और वह वहाँ से भाग गया; लेकिन दूसरे दिन फिर एक अफ्रिकन इंजिन-ड्राइवर को लेकर भाग गया।

एक दिन एक ड्राइवर उक्त शेर का शिकार करने के लिये लोहे के कुँए में छिपकर बैठ गया। उस कुँए में शेर पर निशाना मारने के लिये सूराख भी था। शेर आधी रात के करीब आया। कूदकर वह कुँए के ऊपर चढ़ गया। जिस सूराख से वह ड्राइवर कुँए के अन्दर घुसा था, उसी सूराख से ड्राइवर को बाहर खींचने की कोशिश करने लगा; पर कुँआ बहुत गहरा था। उसकी तह तक, जहाँ ड्राइवर बैठा था, शेर नहीं पहुच सकता था। ड्राइवर इतना डर गया कि गोली चलाना भी भूल गया; पर आखिर उसने सँभलकर गोली चलाई, जिसके भय से शेर भाग गया।

६ जून, सन् १९०० ई० की घटना है 'मिस्टर रायल' अपने



मैंने उसके सुन्दर विजय-स्मारक के पास खड़े होकर उसका चित्र लिया ! [पृष्ठ १०४]



कर्नल जे० ए० पैटर्सन द्वारा शिकार किये हुए आठ शेरों के चेहरे

दो अँगरेज मित्रों के साथ, अपनी तहकीकात करने की रेलगाड़ी में 'मैकिङु' से 'नैरोबी' जा रहे थे। जब वे 'किम्मा' स्टेशन पर पहुँचे, जो 'मोम्बासा' से ढाई मील दूर है, वहाँ के लोगों ने उन्हें बताया कि उनके आने से थोड़ी ही देर पहले एक शेर स्टेशन के निकट घूम रहा था। मिस्टर रायल ने रात को वहीं रहकर उस शेर का शिकार करने का इरादा किया! उनकी गाड़ी बराबर की लाइन पर खड़ी कर दी गई।

मिस्टर रॉयल और उनके मित्र शेर की तलाश में निकले। पर जब शेर न मिला, तब भोजन करने के लिये अपनी गाड़ी में लौट आये। खाना खाने के बाद वहीं गाड़ी में बैठकर शेर की बाट जोहने लगे, थोड़ी देर में उन्हें कोई चमकीली चीज दिखाई दी। उन्होंने समझा कि शायद शेर की आँखें हैं; मगर फिर कुछ पता न चला। रात बहुत बीत चुकी थी। मिस्टर रॉयल ने अपने मित्रों से सो जाने के लिये कहा और स्वयं पहरा देने की इच्छा प्रकट की। उनका एक मित्र तो ऊँची सेज पर सो गया और दूसरा मित्र नीचे गाड़ी में दरवाजे की तरफ पैर करके लेट गया। मिस्टर रॉयल पहरा देने लगे।

कुछ देर अच्छी तरह पहरा देने के बाद उन्होंने सोचा कि आज शेर नहीं आयेगा, इसलिये जाकर दूसरे तख्ते पर सो गये, पर शेर वहीं लगा हुआ था। उसने जब देखा कि सब लोग सो गये हैं, वह स्टेशन की बाड़ लाँघकर गाड़ी में चढ़ गया। दरवाजे

में सोये हुए मित्र के ऊपर पर रखकर 'रायल साहब' पर हमला किया। उन्हें अपने पंजों के बीच दबोच लिया। उनके शोर मचाने से उनके दूसरे मित्र की आँखें खुलीं तो क्या देखता है कि एक बड़ा शेर दरवाजे के पासवाले साहब के ऊपर पैर रक्खे हुए रायल साहब को पंजों में दाबे हुए है। वह बहुत डरा। इस समय जान बचाने का केवल यही उपाय था कि वह दूसरे दरवाजे से भाग निकले, जो नौकरों की कोठरी में होकर गुजरता था। परन्तु ऐसा करने में उसे शेर की पीठ पर होकर जाना पड़ता; क्योंकि शेर उसी दरवाजे से लगा खड़ा था। पर मरता क्या नहीं करता, वह एकाएक शेर कीपीठ के ऊपर से छलाँग मारकर निकल गया! शेर अपनी धुन में मस्त था। उसने कुछ ध्यान नहीं दिया।

कुलियों ने शोर सुनकर दरवाजा बन्द कर लिया था। आखिर बहुत कहने-सुनने से दरवाजा खोला। शेर से बचकर भागे हुए साहब को अन्दर लेकर फौरन दरवाजा बन्द कर लिया। इसी समय शेर भी रायल साहब को लेकर गाड़ी से बाहर कूदा और भाग गया। पैर के नीचेवाले साहब बाल-बाल बच गये! बेचारे भागकर स्टेशन में जा छिपे। सुबह तलाश करने पर आध मील दूर रायल साहब की हड्डियाँ मिलीं, जो 'नैरोबी' में ले जाकर दफनाई गईं!

खुशी की बात है कि कुछ दिनों बाद वह शेर भी एक जाल में फँसा लिया गया। थोड़े दिन जाल में रखकर फिर उसे गोली मार दी गई।

इंगलैंड को मेरी विदाई

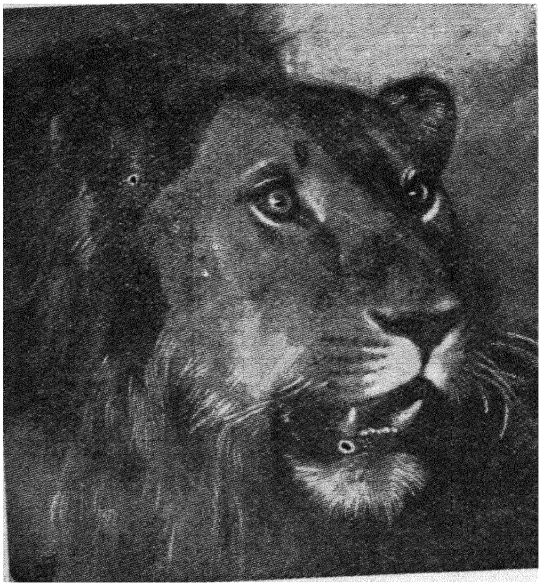
जिस रोज मैंने 'भूटा' को मारनेवाले शेर का शिकार किया था, उसके बाद मुझे और कभी शेर मारने का मौका नहीं मिला; यद्यपि उसके बाद भी कई बार मैंने शेर देखा था।

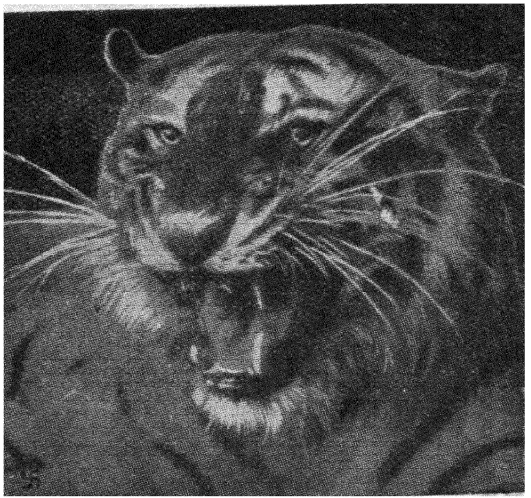
एक रोज 'डाक्टर मैक' के साथ रेल से जा रहा था। वे अपने भाग्य को बहुत कोस रहे थे कि उन्हें कभी शेर मारने का अवसर नहीं मिला। उन्होंने कहा, मैं शीघ्र ही घर जानेवाला हूँ, यदि इंगलैंड जाने के पूर्व मुझे शेर मारने का मौका मिले तो मुझे बड़ी खुशी होगी। मैंने कहा कि जिस समय आप जंगल में जाते हैं—उनकी तलाश नहीं करते—इसलिये शेर आपको नहीं मिलते। उन्होंने उत्तर दिया कि नहीं, मैं शेर की खोज तो करता हूँ; पर भाग्य में शेर का शिकार नहीं बदा है—इस वास्ते मुझे नहीं मिलते।

संयोग की बात, उसी समय दो शेर सामने ही दिखाई दिये। मैंने इंजिन-ड्राइवर 'सुलताना' से कहा कि इंजिन रोको। उसने फौरन् रोक दिया। मैंने डाक्टर साहब से कहा कि देखिये। सामने वे शेर हैं। उन्होंने देखा, दो शेर एक ताजा मारे हुए तेंदुए को खा रहे थे। डाक्टर साहब फौरन् रेल से उतरे। बंदूक सँभाली; किन्तु एक शेर तुरन्त भाग गया। मैंने कहा कि शीघ्र गोली चलाइये, नहीं तो दूसरा भी भाग जायगा। उन्होंने तुरन्त गोली मारी। शेर मर गया। वे बहुत खुश हुए। हमलोग उसे

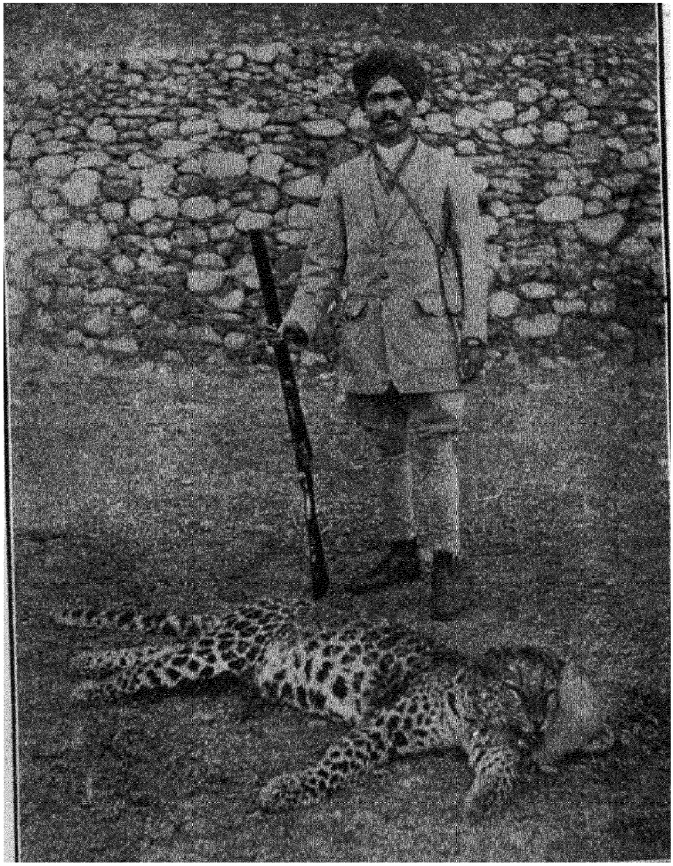
गाड़ी में रखने के लिये उठवा लाये। मैंने उसके सुन्दर विजय-स्मारक के पास खड़े होकर उसका चित्र लिया।

सन् १९९९ के अन्त में मैंने अपने देश इंगलैंड के लिये प्रस्थान किया। मेरे नीचे काम करनेवाले बहुत से लोगों ने मेरे साथ चलने की इच्छा प्रकट की; क्योंकि ये लोग मुझसे अधिक स्नेह करने लगे थे। परन्तु मैंने इन्हें समझा-बुझाकर मना कर दिया। मेरा बफादार नौकर 'माहिना' 'चौकीदार मीयाँ', 'रौशन खाँ' और दूसरे लोग—जो अर्से तक मेरे साथ रहे थे, मुझे बिदा करने के लिये बन्दरगाह तक आये। मुझसे जुदा होते वक्त उन्हें बड़ा दुःख हुआ। जहाज में मेरे सवार होने से एक दिन पहले ये लोग भी हिन्दुस्तान के लिये प्रस्थान कर गये।





पशुराज महाराज क्रोध के आवेश में !



सुप्रसिद्ध शिकारी श्रीराम शर्मा, बी. ए.

[पृष्ठ १०५]

आतंकपूर्ण कहानी

समस्त हिन्दी-ससार में पंडित श्रीरामशर्मा बी० ए० के अतिरिक्त दूसरा कोई ऐसा प्रसिद्ध साहित्यसेवी नहीं है जो शिकार खेलने में बहादुर हो। हिन्दी-पत्र-पत्रिकाओं में आपके शिकार-सम्बन्धी लेख प्रायः छपते रहते हैं। शिकार-विषयक सजीव लेख लिखनेवाले हिन्दी-जगत् में केवल आप ही एक हैं। आपकी भाषा भी कुशल शिकारी के अचूक निशाने की तरह पाठकों के चित्त पर सीधी चोट करती है। आप जैसे प्रसिद्ध शिकारी हैं वैसे ही तेजस्वी लेखक भी। आपकी लिखी हुई 'शिकार' नामक पुस्तक हिन्दी में अबतक अपने ढंग की बिलकुल अकेली चीज है—उसकी ओजस्विनी भाषा स्पष्ट ही बतलाती है कि आप कलम और बंदूक चलाने में समान रूप से सिद्धहस्त हैं। आप युक्त प्रान्त की कांग्रेसी सरकार के ग्रामोद्धार विभाग के प्रधान अध्यक्ष रह चुके हैं। आजकल आप 'विशालभारत' कलकत्ता के सम्पादक-मंडल में हैं। आप मैनपुरी जिले के 'किरथरा' ग्राम (पो० मक्खनपुर) के निवासी हैं। आपका लिखा हुआ एक शिकार विषयक वृत्तान्त यहाँ दिया जाता है—

हमारा एक दल सूअर का शिकार खेलने गया। मध्याह्न के समय मैं अपने साथियों से अलग हो गया। मैंने एक खूँख्वार बड़े सूअर का पीछा किया था और उसका पीछा करते-करते मैं एक गहरी घाटी में जा पहुँचा था। वहाँ पहुँचकर उसने मुझे ऐसा झाँसा दिया कि उसको मारने की कोई सूरत न देखकर, और यह सन्तोष करके कि वह हाथ नहीं लगेगा, मैं लौट पड़ा। मैं कुछ ही दूर गया हूँगा कि मेरे सामने मार्ग पर, झाड़ियों में से निकलकर, एक हिरन भाग निकला और एक क्षण पीछे एक बाघिन भी झाड़ी से निकल पड़ी।

मैंने सोचा, शिकार का इससे अच्छा और कौन-सा अवसर होगा, और यदि कहीं बघेरा हाथ लग गया, तो सूअर के शिकार के अभाव की कुछ पूर्त्ति होगी। इसी विचार से मैंने अपना घोड़ा बाघिन के पीछे डाल दिया। लगभग आधमील की दौड़ के उपरान्त वह अकस्मात् मुड़ी और एक झाड़ी की ओर को भागी; उसने हिरन का पीछा करना छोड़ दिया।

ज्योंही बाघिन को मुड़ते देखा त्योंही मैंने दाहिनी ओर से उसका रास्ता काटा और जिस झाड़ी की ओर वह जा रही थी, उसके समीप पहले पहुँचकर अपनी रायफल से उसके एक गोली झोंक दी। गोली खाकर वह तीन-चार बार उलट-पुलट होकर लुढ़की और फिर झाड़ी की ओर चली। मैं घोड़े पर सवार था, इसलिये मैंने आगे बढ़कर उसकी बगल से उसको एक गोली और

मारी। वह बड़े क्रोध से गरजी। अपनी मृत्यु-वेदना में उसने एक बार फिर पैरों पर खड़े होने का प्रयत्न किया; पर गिरकर मर गई।

मैं घोड़े से उसकी खाल निकालने के लिये उतरनेवाला ही था कि किसी असाधारण शब्द के सुनने का मुझे भान-सा हुआ। पीछे जो मुड़ा तो एक भीमकाय नर-बाघ को झाड़ी से निकलते देखा। अब मुझे मालूम हुआ कि नर के आकर्षण से ही बाघिन ने हिरण का पीछा छोड़ दिया था। मैंने अपनी रायफल से नर पर निशान लेना चाहा। पर वह मुझसे अधिक तेज निकला। उसका खयाल था कि मैंने उसे उसकी सहगामिनी से वंचित किया है; इसलिये बदले का भाव उसमें जागृत हो गया। एक ही छलाँग में वह मेरे घोड़े की पीठ पर आ गया और मेरी जीन के पीछे बैठ गया, उसका एक पंजा मेरे बायें कन्धे मे गड़ा हुआ था!

ज्योंही घोड़े ने बाघ के तेज नाखून अपनी पीठ में महसूस किये, त्योंही वह विद्युत्-वेग से आगे को भागा। वह घाटी में बेतहाश वायु के समान जाने लगा। मेरी रायफल मुझसे गिर गई और मैं अपनी जान से भी हाथ धोनेवाला था; पर दैव की गति मैं घोड़े की पीठ पर जमा रहा और लगाम को खूब थामे रहा। मेरी यह स्थिति थी—बाघ घोड़े पर मेरे पीछे चिपका हुआ बैठा था उसका बायाँ पंजा मेरे कन्धे में गड़ा हुआ था और दायाँ पंजा जीन के कम्बल में; उसके पिछले पंजों के नख घोड़े के मांस में चुभे थे।

बाघ घोड़े की सवारी का अभ्यस्त थोड़े ही था, इसलिये उसकी शक्ति अपना आसन जमाने में ही लगी हुई थी। पर जब मेरा घोड़ा थक जायगा, तब क्या होगा—यह सोचकर मेरे होश उड़ जाते थे। यह निश्चय ही था कि घोड़ा अधिक न चल सकता था। सूअर और बाघिन के पीछे दौड़ते-दौड़ते वह पहले ही थक चुका था और मैं जानता था कि घोर आतंक और तेज नाखूनों की पीड़ा से वह पागल की भाँति भागा जा रहा था। मैं यह भी महसूस कर रहा था कि घोड़े की शक्ति क्षीण हो रही है, और जब घोड़ा ही जवाब दे देगा तब फिर चंचल बाघ अपनी मनमानी करने से कब चूकेगा।

दूसरी बात, जिससे मेरी शक्ति और साहस का ह्रास हुआ, यह था कि बाघ के पैने नख मेरे कंधे में घुसे हुए थे, जिससे मेरी शरीर में असह्य पीड़ा हो रही थी।

मेरे पास पेटी में बँधे हुए खोल में फौजी तमंचा था। मेरी आशा उसी पर अवलम्बित था। मैंने रास को बायें हाथ में थामकर तमंचा निकाला। तमंचा निकाला ही होगा कि मेरा घोड़ा काँपा—मानों उसके फेफड़े काम बन्द करनेवाले हों। एकक्षण की देरी करना मेरे लिये घातक था।

मैं बाघ की गरम साँस अपनी गरदन पर महसूस कर रहा था और उसके खूँख्वार नख मेरी गरदन से छः इंच दूर थे। यदि मैं उसके कहीं गोली मार सकता था तो उसके सिरमें ही; क्योंकि मैं

उसके सिर तक ही पहुँच सकता था; पर ऐसा करना भी सरल नहीं था; क्योंकि मैं अपनी जीन पर मुड़ नहीं सकता था और साथ ही पीछे देखने की मुझमें हिम्मत न थी। मेरी केवल एक ही आशा थी—वह भी अचूक नहीं। मैंने उसको प्रयोग में लाने का निश्चय किया और तमंचे की नाल अपने सीधे कन्धे के पीछे की ओर की। बाघ गुर्राया और अपने मुँह से तमंचे को पकड़ना चाहा। ज्योंही उसके दाँत तमंचे की नाल से लगे, मैंने घोड़ा दाब दिया। आवाज से मेरा सीधा कान सुन्न पड़ गया और मुझे यह प्रतीत हुआ मानों मेरे बाल झुलस गये हों; पर बाघ को और भी कटु अनुभव हुआ।

गोली खाकर बाघ ने ऐसी गर्जना की कि जिससे तमंचे की आवाज भी दब गई। बाघ पीछे कूद पड़ा और साथ में मेरे कंधे से मेरी जाकट का सब कपड़ा और मांस नोचकर ले गया। शीघ्र ही मेरा घोड़ा रुक गया, लड़खड़ाया और गिर गया। मैं बहुत ही कमजोर हो गया था। ज्योंही घोड़ा गिरा, मैं अपने पैर रकाबों से निकाल सका!

मेरा पहला विचार बाघ देखने का हुआ। बाघ कुछ दूरी पर अन्तिम साँस ले रहा था। गोली उसके माथे में लगी थी, निशाना पक्का पड़ा था; पर यह केवल अवसर की बात थी।

जब मुझे यह विश्वास हो गया कि बाघ मर चुका है, मैंने अपने घाव की मरहम-पट्टी की। मैंने अपनी कमीज फाड़ी और

ज्योंही पट्टी बाँधना चाहता था त्योंही मुझे कमजोरी और मूर्च्छा मालूम हुई। मेरी आँखों के सामने अंधेरा हो गया।

जब मुझे होश आया, तब मैंने अपने-आपको घर पाया। मेरे साथी मेरे घाव की मरहम-पट्टी कर रहे थे। उन्होंने बाघिन को भी ढूँढ़ लिया था और मेरी खोज लेते हुए वहाँ पर आये थे जहाँ मैं बेहोश पड़ा था।

—:❀:—

शेर के मुँह में पन्द्रह मिनट

कई साल गुजरे, मैंने एक जंगल का ठेका लिया था। मेरे साथ मेरा दोस्त धनीराम भी था। यह जंगल नेपाल की तराई में था। हमने वहाँ डेरे डाल दिये थे और मजदूरों से लकड़ियाँ कटवाया करते थे। कभी-कभी दिल बहलाने के लिये शिकार खेलने भी निकल जाते थे।

एक दिन मैं और धनीराम दोनों शिकार खेलकर लौटे तो बहुत अँधेरा हो गया था। मैं जब धनीराम को उसके खेमे में पहुँचाकर अपने खेमे की तरफ चला, रास्ता नजर न आता था। एक तो अँधेरे पाख की रात, दूसरे तराई का जंगल। बड़ी मुश्किल से मैं अपने खेमे में पहुँचा। चिराग जलाया और लेट रहा। उस वक्त ग्यारह बजे थे।

मैं कितनी देर तक सोया, कुछ खबर नहीं। एकाएक आँख खुली तो मालूम हुआ कि कोई मुझे नीचे से ढकेल रहा है। मैं चित लेटा हुआ था। झुककर चारपाई के नीचे देखा तो होश उड़ गये—एक शेर दुबका हुआ बैठा था!

उस वक्त मेरी क्या हालत हुई, बयान नहीं कर सकता। दिल में खयाल आया कि जरा देर में शेर मुझे उठा ले जायगा और किसी को खबर भी न होगी। मेरे रोयें खड़े हो गये। मैंने चिल्लाना चाहा, मगर ऐसा मालूम हुआ कि किसीने जोर से मेरा गला घोंट रक्खा है।

मैंने कई बार किताबों में पढ़ा था कि शेर जब अपने शिकार को नोचता है, तब शिकार को जरा भी दर्द नहीं मालूम होता; लेकिन इस खयाल से दिल को तसल्ली न हुई। मैं इसी हालत में सोचने लगा कि क्या सचमुच मुझे यह खा जायगा? मेरी हालत का कुछ अन्दाज वही आदमी कर सकता है, जो पानी में डुबकी लगाकर उभरने की कोशिश करने पर भी न उभर सके।

अभी पन्द्रह-बीस सेकंड भी न गुजरे थे कि शेर चारपाई के नीचे से निकलकर दोनों पैरों के बल खड़ा हो गया और अगले पैर चारपाई पर रखकर मेरे पीले चेहरे को देखने लगा।

उसकी चमकती हुई आँखें देखकर मेरा खून सर्द हो गया। कुछ देर तक मेरी सूरत देखने के बाद वह अपना मुँह मेरे मुँह के पास ले आया और सूँघने लगा। उसकी मूँछों के बाल मेरी नाक में घुस गये, इसलिये मुझे जोर से छींक आ गई! मेरे छींकते ही वह उलझकर हट गया और आहिस्ता से गुर्राया।

जरा देर तक वह कुछ सोचता रहा। फिर मेरे पास आया। मुझे चारपाई से नीचे गिरा दिया और सामने के दोनों पंजे मेरी

छाती पर रखकर बैठ गया। उफ! उसका शरीर कितना भारी था। ऐसा मालूम होता था कि मेरी छाती पर कोई चट्टान पड़ी हुई है। इस हालत में दो-तीन मिनट गुजर गये। शेर बाहर की तरफ कान लगाये कुछ आहट-सी ले रहा था। वह फिर आहिस्ता से गुर्राया।

बाहर उस वक्त भी लोग बोल रहे थे। मुझे सुनाई दिया, कोई कुलियों को पुकारकर कह रहा है—अरे! जल्दी बत्ती तो लाओ। यह धनीराम की आवाज थी। धनीराम अंधेरे में टटोलता हुआ मेरे खेमे की तरफ आने लगा। उसने कुछ दूर ही से चिल्लाकर पुकारा—तुम सोते हो या जागते? तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारे खेमे से कैसी आवाजें आ रही हैं।

मैं क्या जवाब देता? मेरे मुँह से आवाज भी न निकली!

आप समझते होंगे कि आदमी की आहट पाकर शेर भाग गया होगा। पर ऐसा नहीं हुआ! वह गुर्राने लगा - जैसे आनेवाले को खबरदार कर रहा हो कि यहाँ मेरी अमलदारी है, इधर मत आना! उसके मुँह से ऐसी बदबू आ रही थी कि मुझे मिचली होने लगी।

धनीराम शेर का गुर्राना सुनकर ठिठक गया। उधर शेर ने अपने दाँतों से मेरा एक टाँग पकड़ ली, और मेरा खून पीने लगा। उसके बाद दूसरी टाँग का खून पिया। इसी तरह उसने सिवा गले के मेरे बदन के हर हिस्से से खून चूसा।

उसका एक दाँत कम-से-कम इंच-भर लम्बा तो जरूर ही

था। उसके दाँत इतने मजबूत थे कि वह आसानी से मोटी-से-मोटी हड्डी चबा सकता था; मगर उसने मेरी एक भी हड्डी नहीं तोड़ी और न गोस्त खाया!

मैंने सुना था कि शेर के नोचने से उसके शिकार को तकलीफ नहीं होती। इस समय मुझे इसका अनुभव हो गया। यद्यपि मेरे बदन का सारा खून पिया जा चुका था—शेर के लम्बे-लम्बे नुकीले दाँत बदन के हरएक हिस्से में चुभ चुके थे, तथापि मुझे जरा भी दर्द नहीं मालूम हो रहा था, न जलन थी, न टीस थी!

मेरी यह हालत थी कि शायद मेरा तमाम बदन सुन्न हो गया था। मैं समझ रहा था कि जख्मी हो रहा हूँ, फिर भी मुझे विश्वास था कि मरूँगा नहीं। हाँ, खून ज्यों-ज्यों कम होता जाता था, मुझमें कमजोरी आती जाती थी। फिर ऐसा मालूम होने लगा. जैसे किसी ने मेरी आँखों के सामने काला परदा डाल दिया हो।

धनीराम अब मेरे खेमे के सामने आ गया था। उसकी आहट पाते ही शेर ने मेरे बदन से मुँह हटाकर दरवाजे की तरफ देखा। उसके मुँह से गरम-गरम बूँदें मेरे ऊपर टपकने लगीं। एकाएक शेर फिर गरजा और मुझे उठाकर बाहर ले चला। लेकिन मुझे लेकर वह जंगल में न घुसा, बल्कि पास ही एक बड़े पेड़ के नीचे मुझे डालकर फिर मेरी छाती को दोनों पंजों से दबाकर बैठ गया।

इतने में मैंने धनीराम और कई आदमियों को रोशनी लिये

आते देखा। अबतक मुझे शेर की आँखों की चमक ही नजर आ रही थी, मगर अब मेरी आँखें उन आदमियों की तरफ लग गई। आश्चर्य तो यह था कि शेर ने दुबारा मेरे बदन में दाँत नहीं चुभाये। मालूम होता था कि रोशनी देखकर वह भी कुछ डर गया था।

धनीराम ज्योंही करीब आया, मैंने उससे कहा—'देखना, निशाना न चूकने पावे।' मुझे जिन्दा देखकर धनीराम को तसल्ली हुई। उसने शेर के सिर पर गोली चलानी चाही, मगर बन्दूक चली ही नहीं! धनीराम घबरा गया। उसने बन्दूक उठा ली और इसके कुन्दे से शेर पर हमला किया। बन्दूक भी टूट गई। मगर शेर अभी चुपचाप बैठा यह समझने की कोशिश कर रहा था कि मामला क्या है!

धनीराम दौड़ता हुआ मेरे खेमे में पहुँचा और भरी हुई बन्दूक लेकर हवा की तरह आ मौजूद हुआ। उस वक्त शेर मजदूरों की तरफ देखकर गुर्रा रहा था। धनीराम ने शेर के पास आकर उसके सिर पर गोली मारी। गोली लगते ही शेर का भेजा निकल आया और वह उछलकर गिर पड़ा। मैंने बाद को सुना कि शेर के गिरते ही मैं वहाँ से उठकर बीस-पचीस गज तक भागा और बेहोश होकर गिर पड़ा।

धनीराम मुझे वहाँ से उठाकर खेमे में ले आया, और गर्म पानी के टब में डाल दिया। अब मुझे जलन मालूम हुई। मैं

चिल्लाने लगा। जख्मों में जब गर्म पानी लगता था तब ऐसी जलन होती थी, जैसे कोई गर्म लोहा बदन में चुभा रहा हो और ऐसा मालूम होता था कि अब जान निकल जायगी। मर जाना इस तरह तड़पने से कहीं अच्छा था। जी चाहता था कि तमंचा मिल जाय तो फौरन् अपना काम तमाम कर लूँ।

जंगल से चालीस मील की दूरी पर एक कस्बा था। वहाँ एक डाक्टर रहता था। बैलगाड़ी पर बैठकर वहाँ तक जाने में तीन दिन से कम न लगते, और यहाँ मुझे एक-एक मिनट पहाड़ हो रहा था। मगर धनीराम मुझे वहाँ ले जाने के लिये तैयारियाँ कर रहा था। मुझे यह नहीं मालूम कि मैं किस तरह डाक्टर के पास पहुँचा। होश आने पर मैंने डाक्टर को अपने सामने खड़ा देखा। डाक्टर मेरी हालत देखकर बहुत घबराया। मेरे जख्मों से इतनी बदबू आ रही थी कि मैं बस्ती से बाहर एक खेमे में रक्खा गया!

मैं तो समझता था कि शायद एक-दो दिन का मेहमान और हूँ। मगर जिन्दगी के दिन बाकी थे; घाव सूखने लगे और दो महीने में मैं अच्छा हो गया। लेकिन दिल में इतना डर समा गया था कि उस रात की घटना को सपने में देखकर चिल्ला पड़ता और सारा बदन पसीने-पसीने हो जाता। मेरे बदन में अब भी जख्मों के दाग हैं। इसके सिवा मैं पूरा तन्दुरुस्त हूँ।

मैं शेर के मुँह में कोई पन्द्रह मिनट रहा था!

—:❀:—



श्रीमान् कुमार कृष्णानन्दसिंह बहादुर

[पृष्ठ ११८]



अनन्य आखेटानुरागी
स्वर्गीय राजा कीर्त्यानन्दसिंह बहादुर, बी. ए.
[पृष्ठ ११७]

मेरे शिकार के अनुभव

बिहार-प्रान्त के 'पूर्णिया' जिले में 'बनली' एक मशहूर रियासत है। यह राज्य बहुत प्राचीन और विस्तृत है। यहाँ के राजा बड़े प्रतिष्ठित मैथिल ब्राह्मण हैं। इस राज्य की सीमा नेपाल की तराई से मिली हुई है। राज्य की भूमि में जंगलों और पहाड़ों की कमी नहीं है। यहाँ के जंगलों में नेपाल के जंगलों से भी जंगली जानवर आया करते हैं। इसलिये इस राज्य के स्वामी और कर्मचारी प्रायः शिकार खेलने में बड़े अभ्यस्त हैं। स्वर्गीय राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुर बी० ए० बड़े दबंग और नामी शिकारी थे। * अपने जीवन में उन्होंने अनेक बाघ, शेर, चीते, भैंसे,

---

* श्रीमान् बनैली-नरेश राजा बहादुर का देहान्त ५५ वर्ष की आयु में काशी में, सन् १९३६ ई० में १९ जनवरी को हुआ था। आप भारत-प्रसिद्ध शिकारी थे। आप अँगरेजी, संस्कृत, हिन्दी, बँगला आदि भाषाओं के पंडित थे। शिकार ही की तरह शिक्षा-प्रचार और साहित्यानुराग भी आपके प्रिय व्यसन थे। भागलपुर के कालेज को छः लाख और काशी के हिन्दू-विश्वविद्यालय को आपने एक लाख रुपया दान दिया था। अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन

सूअर, मगर, गैंड़े आदि मारे थे। उन्होंने शिकार पर अँगरेजी में एक सुन्दर पुस्तक भी लिखी है। वे हिन्दी के भी बड़े प्रेमी और अच्छे लेखक थे। अपने शिकार के कुछ अनुभव उन्होंने हिन्दी में भी लिखे हैं। यहाँ पर उन्हीं के शब्दों में उनके आखेट-सम्बन्धी अनुभवों का वर्णन दिया जा रहा है—

मेरा पहला शिकार—एक चीता

सन् १६०१ ई० की घटना है। मैं इलाहाबाद के 'म्योर सेंट्रल' कालेज में पढ़ता था। गर्मी की छुट्टियों में घर आया था। खबर मिली कि मेरे गढ़ से करीब दो मील की दूरी पर एक चीता दीख पड़ा है—उसने सबेरे दो आदमियों को घायल कर दिया है, जिनमें से एक पूर्णिया के अस्पताल में भेजा गया है।

खबर पाते ही मैं अपने दल के साथ हाथी पर चला। एक

(भागलपुर) के आप ही स्वागताध्यक्ष थे। बिहार-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भी आप सभापति हो चुके थे। आपके सुपुत्र कुमार श्यामानन्द सिंह बहादुर ने प्रान्तीय-साहित्य-सम्मेलन को आपकी स्मृति में पटना में भवन बनवाने के लिये दस हजार रुपये दिये हैं। आप ही के भ्रातुष्पुत्र कुमार कृष्णानन्द सिंह बहादुर ने भागलपुर (सुलतानगंज) से 'गंगा' नामक सचित्र हिन्दी-मासिक पत्रिका निकाली थी। ये कुमार बहादुर भी बड़े सिद्धहस्त शिकारी हैं। इन्होंने ११ फुट की दूरी से रॉयल-बंगाल-टाइगर को पैदल ही मारा था।

गाँव की बस्ती से बाहर चीता एक घनी झाड़ी में छिपा हुआ था। झाड़ी को अँधेरे में उसकी आँखें चमक रही थीं। मैंने तुरन्त गोली चलाई, जो उसके कन्धे में लगी, जिससे उसका अगला पैर टूट गया। मगर इतनी चोट से भी वह पस्त न हुआ, बल्कि क्रोधसे भरकर मेरे हाथी पर झपटा। मेरे जोश का भी पारा चढ़ गया। मैं दनादन गोलियाँ छोड़ता चला गया। चीता तो हाथी तक पहुँचने से पहले ही ढेर हो गया, मगर उसकी सुन्दर खाल एकदम खराब हो गई। उसमें चालीस से भी ज्यादा छेद हो गये; क्योंकि उसके बदन में मैंने तीन दर्जन से भी ज्यादा जगहों में गोलियों के घाव कर दिये थे!

सबसे पहला बाघ

जंगल में हाथियों पर मेरे साथी शिकारियों का दल बाघ की तलाश में घूम रहा था। 'झौवा-घास' का जंगल इतना घना था कि एक जगह पाँच फुट गहरे गढ़े में एक हाथी का पैर पड़ जाने से हाथी एकदम उलट गया, जिससे महावत और हौदे के साथ सवार भी अलग दूर जा गिरे। पर ईश्वर की कृपा से किसी को गहरी चोट न आई। वह गढ़ा घनी घासों से ढका होने के कारण दीख न पड़ा। घास इतनी लम्बी और ऊँची थी कि कहीं-कहीं हौदा समेत हाथी डूब जाता था। कहीं रास्ते का कुछ पता न था।

एक जगह एक हाथी घोर दलदल में फँस गया। दिन-भर उसीको बाहर निकालने में लग गया। पछवा हवा इतनी तेज थी

कि खेमे उखड़ गये थे। कैम्प उखड़ जाने से खाने पीने का कोई ठिकाना न रहा। एक रात बिना भोजन और बिछौने के ही एक पेड़ के नीचे कटी—मजा यह कि वर्षा भी होती रही!

दस दिन हिरनों और सूअरों के शिकार में ही बीत गये। इसी निराशा में सूचना मिली कि 'कोशी' नदी के उस पार एक बाघ है। दस बजे रात को उसका गंभीर गर्जन सुन पड़ा। हाथियों के दल में खलबली मच गई। उसे लुभाने के लिये जंगल में एक भैंसा भी बाँध दिया गया था। नदी पार कर हमलोगों ने जंगल रौंद डाला; पर बाघ न मिला।

दूसरे दिन मैंने उसके पंजों के निशान देखे। जान पड़ा कि वह पानी पीने रात को आया था। इसी उत्सुकता में खबर मिली कि गौओं के बथान से रात में एक बछड़े को बाघ उठा ले गया है। हमलोगों को बड़ा हर्ष हुआ। ज्योंही हमलोग उसके नजदीक पहुँचे; वह गुर्राया। मगर सिर्फ गुर्राहट ही सुन पड़ी, वह खुद नजर न आया। मैं हाथी पर खड़े होकर चारों ओर देखने लगा। फिर हौदे के बक्स पर खड़ा होकर देखा--इस खतरे के काम का उस वक्त कुछ खयाल ही न रहा; पर कहीं किसी तरफ बाघ न दीख पड़ा।

जो हाथी शिकारमें अभ्यस्त न थे वे बाघ की गंध पाकर भाग चले। इसी बीच बाघ नदीमें कूदकर उस पार तैर चला। मैंने उसी हालत में उसे गोली मारी। उसके पुश्त पर गोली लगी। वह तुरत पीछे की ओर मुड़कर लपका। मैंने फिर उसे पानी में ही

गोली मारी, ताकि वह मेरे हाथी के पास न पहुँच सके। पर वह मरा नहीं, नदी से निकलकर घनघोर जंगल में घुस गया। अब उसको ललकारना कठिन था; क्योंकि शिकार में शोख हाथी भी न आगे बढ़ते थे और न भागते ही थे। फिर भी हम पाँच हाथियों के साथ आगे बढ़े और उसे मारने में सफल हुए। वह नौ फुट आठ इंच लम्बा था। आज भी उसकी भुसी-भरी मूर्त्ति मेरे महल के बरामदे में खड़ी है।

बाघ के इस पहले शिकार के साथ ही ग्यारह जंगली भैंसों का शिकार करके हमलोग घर लौटे।

मेरे गढ़ के पास एक बाघ

अगस्त, १६०४ में बाढ़ का जमाना था। अचानक एक दिन सुबह में खबर मिली कि बस्ती के नजदीक बाघ आया है। गाँव वाले दौड़े हुए गढ़ में आये। जिस हलवाहे ने बाघ देखा था,वह खेत छोड़कर गाँव में भाग गया। बाघ एक आम्रकुञ्ज में घुस गया. जिसके चारों ओर पटुए के ऊँचे घने पौधों से भरे खेत थे। गढ़ के सभी हाथी चारा काटने बाहर चले गये थे, इसलिये घुड़-सवार भेजे गये कि उन्हें शीघ्र लौटा लावें। करीब तीन बजे दिन तक सभी हाथी लौट आये। उनके आते ही हमलोग चल पड़े।

आम के बाग के पास पहुँचकर हमलोगों ने बाघ के पंजों के निशान देखे। शीघ्र ही पटुए के पौधे रौंद डाले गये। तब वह नजर आया और तुरत उसपर गोली चलाई गई, जो उसके

अगले पैर में लगी। वह क्रुद्ध होकर झपटा और एक हाथी के मस्तक तक उछलकर सिर और सूँढ़ को नोच लिया; मगर हाथी ने उसे इतने जोर से झकझोरकर झटका दिया कि वह आम की बारी में जा गिरा और झाड़ी में छिप रहा।

हाथी तो दस थे; पर चार ही निडर थे। अब डेढ़ घंटे के अन्दर ही सूरज डूबनेवाला था। इसलिये चार शोख हाथियों को लेकर हमलोगों ने दस-बारह बार बगीचे में चक्कर लगाया; पर कहीं बाघ का पता न लगा। आम के बड़े-बड़े पेड़ों पर कँटीली लताएँ छा रही थीं, इसलिये हाथियों के साथ-साथ हमलोगों के शरीर भी लहू-लुहान हो गये तथा कपड़े भी फट गये। गर्मी तीखी थी। हमलोग थक गये।

बाग से बाहर आधा घंटा विश्राम करने के बाद फिर हमलोगों ने चढ़ाई की। इस धावे में हमारे एक हाथी ने रास्ते की एक बड़ी झाड़ी की टहनियों को ज्योंही हटाया त्योंही बाघ उसके अन्दर से निकल पड़ा। मैंने दो गोलियाँ चलाईं; पर वह गिरा नहीं, बल्कि गुर्राकर घूम पड़ा, और मेरी दाहिनी ओर के एक हाथी पर हमला किया। हाथी डरकर पीछे की ओर मुड़ा, और ज्योंही भागना चाहा, बाघ ने उसका पिछला दाहिना पाँव पकड़ लिया। बेचारा हाथी भाग न सका। बाघ ने ऐसा भँभोरा कि उसके पाँव में बड़ा गहरा घाव हो गया।

मैं दुविधा में पड़ गया। हाथी के मोह से बाघ पर गोली न

चला सका। किन्तु हवाई फायर करने से बाघ ने डरकर हाथी को छोड़ दिया। इस समय तक बाघ की देह से खून बह रहा था। फिर भी वह हाथी को छोड़ते ही मेरी बाईं ओर की हथनी पर झपटा। वह बेचारी बहुत छोटी थी, तुरत गिर पड़ी; क्योंकि बाघ ने उसके पिछले पाँव को अच्छी तरह भँभोर लिया। कुछ क्षण वह बाघ के पंजों से दबी अचेत सी पड़ी रही। महावत और सवार जान बचाकर भागे, इसलिये सुयोग पाकर मैंने एक ही गोली में बाघ का काम तमाम कर दिया। उस समय अँधेरा हो चला था।

जब बाघ मरकर गिर पड़ा, हथनी उठ खड़ी हुई। बेचारी बहुत घायल हो गई थी। हमलोगों के अनेक उपचार करने पर भी दो महीनों के बाद चल बसी। इस तरह तीन हाथियों को घायल करके बाघ मारा गया। लम्बाई में वह ग्यारह फुट से सिर्फ एक इंच कम था। उसका सिर बहुत बड़ा और भयावना था। शायद वह बाढ़ के कारण 'कोशी' नदी के तट से इतनी दूर पूरब निकल आया था।

बाघ के शिकार में सावधानता

बाघ के शिकारी के लिये सबसे बढ़कर आवश्यक है गहरी चुप्पी साधना। जंगल में किसी तरह की कोई आवाज न होनी चाहिये। जरा भी पत्ता खड़का, तनिक भी फुसफुसाहट हुई या एक बार भी बन्दूक का धड़ाका हुआ कि बाघ हाथ से निकला। बाघ के शिकार पर जानेवाले को हरिण या सूअर का शिकार

कभी न करना चाहिये; क्योंकि एक बार जहाँ जंगल में खलबली मची कि बाघ का मिलना दुर्लभ हुआ।

बाघ का शिकार बहुत ही नाजुक और हिम्मत बहादुरी का काम है। इसके लिये पर्याप्त अध्यवसाय, सावधानता, तत्क्षण निर्णय करने की शक्ति, चतुरता और अच्छी सूझ की आवश्यकता है।

बाघ साधारणतः अपने शिकार की गर्दन पकड़ता है। यदि क्रोधवश आक्रमण करता है तो अपने पंजों से आदमी के कंधे को पकड़ लेता है। यदि हाथी पर चढ़कर कोई सामने से गोली मारे तो घातक चोट लगने पर हाथी के मस्तक तक उछल पड़ता है, और हाथी के पीछे की ओर होने की हालत में वह हाथी के पिछले पाँव को पकड़कर जंघे में गहरा घाव कर देता है।

अगर पैर में गोली लगने से बाघ चलने-फिरने में लाचार हो जाता है तो पास के घने जंगल या खड़ी फसल के खेत में जा छिपता है और रात भर विश्राम करता है। उस हालत में अगर कोई बटोही या घसकटा कहीं उधर से निकल पड़ता है तो उसका शिकार हो जाता है। बाघ झपटकर मनुष्य के कंधे या बाँह को अपने दाँतों से पकड़ता है और एकान्त में ले भागता है। क्रोध में वह कभी शिकार नहीं खाता।

बाघ को हमेशा मर्मघाती चोट देनी चाहिये। पहले निशान में अगर मर्मस्थल पर वार न हुआ तो वह बहुत ही खतरनाक और खौफनाक दुश्मन साबित होगा। मर्मस्थान में चोट खाने पर वह

इतने जोर से गरजता है कि सारा जंगल थर्रा जाता है और जान पड़ता है कि क्षण-भर के लिये दिशाएँ काँप उठीं। वह बार-बार उठने की कोशिश करता और गिरता है—गुर्राता और तड़पता है, तब कहीं मौत की गोद में सोता है। लेकिन हल्की चोट लगने पर जब वह टूट पड़ता है तब तो शिकार और हाथी के धीरज की कठोर परीक्षा का अवसर उपस्थित हो जाता है। कभी-कभी तो प्राणघातक चोट खाकर बाघ ऊपर हवा में छः-सात फुट की ऊँचाई तक उछलता है। यह भयानक दृश्य होता है और ऐसे अवसर पर हाथी तो डरते ही हैं, शिकारी के धीरज का बाँध भी प्रायः टूट जाता है।

अगर शिकारी की गोली बहक गई, ठीक निशाने पर न बैठी, तो बाघ फौरन् हाथी के मस्तक पर चढ़ जाता है—महावत पर पंजा मारता है और हाथी के खोपड़े को दाँतों से भँभोर डालता है। ऐसे संकट के समय उपस्थित बुद्धि की बड़ी जरूरत होती है। यदि हाथी पर हौदा न रहा, तो शिकारी की जान पर आफत आये बिना न रहेगी।

बाघ जब हाथी पर चढ़ जाय, तब राइफल से काम लेना ठीक नहीं। उस वक्त के लिये पिस्तौल चाहिये। पिस्तौल की नली को बाघ के सिर के पास भिड़ाकर गोली मारना उचित है। अगर पिस्तौल न हो तो राइफल के कुन्दे से बाघ के सिर को लगातार कूटना चाहिये; क्योंकि इस तरह भारी हथौड़े की-सी गहरी चोट न करने से नतीजा अच्छा न होगा।

हमेशा पैदल या हाथी पर

मैं शिकार खेलने के लिये कभी जंगल में मचान पर नहीं बैठा। कभी रात में शिकार नहीं किया और न कभी छिपकर ही—हमेशा दिन-दहाड़े, खुले मैदान।

साधारणतः भारत में शिकार खेलने के दो ही तरीके हैं—मचान पर बैठकर या हाथियों की कतार के साथ सारे जंगल में 'खेदा' करके, जिसमें खेदा करनेवाले आदमियों का दल ढोल पीट-पीटकर शिकार को छिपी हुई जगह से निकालता या खदेड़ता है। मैंने हमेशा दूसरे ही तरीके से शिकार किया।

शिकार जहाँ दिल-बहलाव का सामान है वहाँ जोश बढ़ानेवाला भी है। यह तुरत नई सूझ पैदा कर संकट में साहस को उत्तेजित करता है। तत्क्षण कोई बात सोचकर चट निर्णय पर पहुँचना, जान पर आफत देखकर भी धीरज को दृढ़ रखना, निराशा मिलने पर भी निरुत्साह न होना—ये सब गुण हमें शिकार से ही प्राप्त होते हैं। लेकिन अधिकतर उसी शिकार से, जो पैदल या दिन-दहाड़े खेला जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि मचान पर बैठकर दिन या रात को शिकार खेलने में भी एक खास तरह का आकर्षण है; पर केवल उन्हीं के लिये जो शान्त भाव से शिकार खेलना पसन्द करते हैं। फिर भी, सामने गुस्से में गुर्राते हुए भयानक जंगली जानवर को चुनौती देकर मारने में पौरुष और पराक्रम को कठिन कसौटी पर कसना पड़ता है।

मुझे रात में शिकार खेलना कुछ अप्राकृतिक-सा मालूम होता है। दिन में सोना और रात में जागकर मचान के ऊपर शिकार की आशा में घंटों चुप बैठे रहना कुछ अस्वाभाविक भी जान पड़ता है। हमें प्रकृति के विरुद्ध न जाकर उसके अनुकूल ही आचरण करना चाहिये। भारतीय शिकारी, खासकर वह जो प्राचीन हिन्दू-भावना का महत्त्व समझता है, कभी अँधेरे में असावधान प्राणी पर वार करना पसन्द न करेगा। वह तो दुश्मन को होशियार करके—उससे आँखें मिलाकर—उसे ललकार कर ही—मारना पसन्द करेगा।

मैंने बहुतेरे बाघों और चीतों का शिकार पैदल ही किया है—अकेले अपने विश्वासी और बहादुर नौकर 'मुसरी' के साथ। केवल हम दोनों कभी घनी घासों में भटकते फिरे हैं; कभी नदी के तीर-तीर दूर-दूर तक चलते रहे हैं, कभी झाड़ियों में फँसे हैं, कभी दल-दल में धँसे हैं, कभी आगे ही खड़े जंगली जानवर के मुकाबले में पड़ गये हैं। सच्चे शिकारी को इस तरह के मीठे-तीखे अनुभव प्रायः होते ही हैं। पर हमें तो दिन-भर के कठोर परिश्रम के बाद कैम्प में लौटने पर हमेशा सन्तोष और आनन्द-रोमाञ्च ही प्राप्त हुआ है।

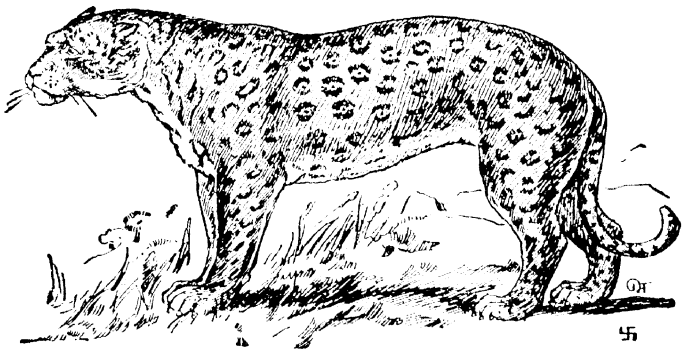
बाघ और चीता

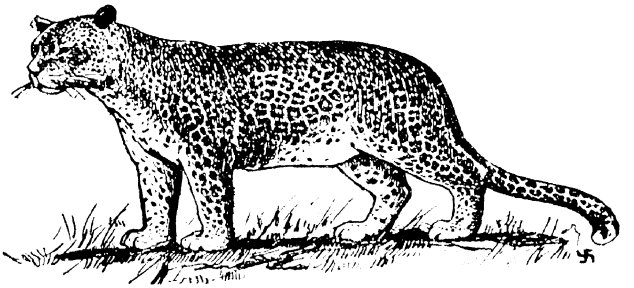
बाघ बड़ा खूँखार जानवर होता है। किन्तु बाघिन तो कहीं उससे भी अधिक भयावनी होती है—खासकर जब वह अपने

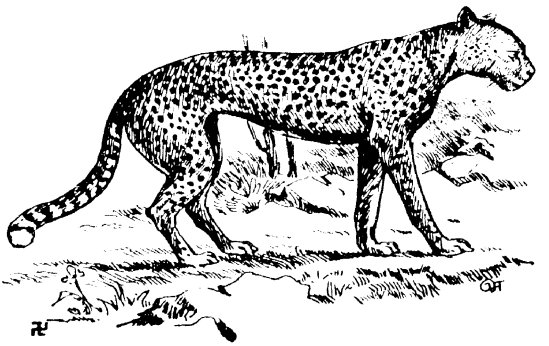
बच्चे के साथ हो। भारत में जितने प्रकार के बाघ पाये जाते हैं, उनमें 'रॉयल-बगाल-टाइगर' सर्वश्रेष्ठ है। यह अत्यन्त शक्ति-शाली, उद्दंड और भयंकर होता है। बड़े-से-बड़े कुशल शिकारी के साहस को भी यह कठोर कसौटी पर कसता है। इसका प्रचंड गर्जन बड़े दृढ़चित्त शिकारी का भी दिल दहला देता है। इसकी चाल बड़ी मस्तानी होती है। यह जान-बूझकर किसी आदमी पर हमला नहीं करता। प्रायः मनुष्य को देखकर भी अपनी राह चला जाता है—किसी जंगली नदी-नाले के किनारे। किन्तु छेड़ने पर तो यह विकराल शत्रु बन जाता है—फिर न तो डरता और न किसी बात की परवा करता, दैत्य की तरह टूट पड़ता है। इसकी मादा तो और भी डरावनी होती है।

बाघ बहुत ही चतुर, बुद्धिमान् और सन्देह-परायण होता है; पर चीता अत्यन्त धूर्त्त। चीता पेड़ पर चढ़कर छिप जाता है, धोखा देकर निकल जाता है और अचानक हमला करने से भी नहीं चूकता। छोटा चीता प्रायः 'तेंदुआ' कहलाता है। यह बड़ा भारी चोर और ठग है, गौओं के बथान में घुसकर छोटे बछड़े को ले भागता है—कभी-कभी कुत्ते, बकरी और सोते हुए बच्चे को भी!

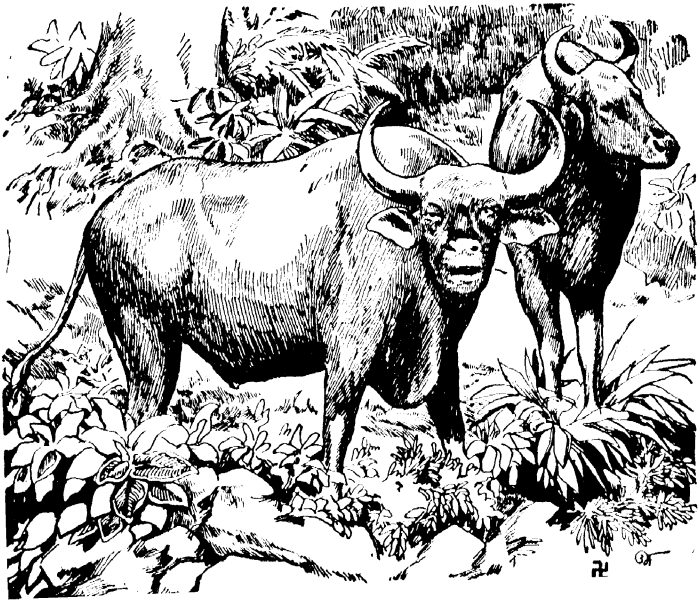
मनुष्य-भक्षी बाघ के सिवा; साधारण बाघ तो कभी-कभी किसी बटोही या लकड़हारे या चरवाहे को देखकर छोड़ भी देता है—बिना छेड़े कुछ नहीं करता; मगर चीते से ऐसी आशा







तीन तरह के चीते !



बलवान् बनैला भैंसा !

करना सरासर भूल है। साधारण बाघ, जबतक मनुष्य-भक्षी बनने के लिये मजबूर नहीं किया जाता, जंगल में चरनेवाले मवेशियों का ही शिकार करता है—आदमी का शिकार करना पसन्द नहीं करता।

नौजवान बाघ प्रायः नौ से ग्यारह फुट तक लम्बे होते हैं—कोई-कोई तो बारह फुट से भी कुछ इंच अधिक होते हैं; पर ऐसे बहुत कम मिलते हैं। चीते की लम्बाई सात और आठ फुट के बीच होती है—तेंदुआ शायद ही कभी छः फुट से अधिक पाया जाता हो।

बनैले भैंसों से मुठभेड़

एक बार यह खबर पाकर कि जंगल के आसपास के खेतों की फसल को बनैले भैंसे नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं, हमलोग उनकी खोज में निकल पड़े। कई दिन जंगलों में भटकना पड़ा। आज यहाँ, कल वहाँ; रोज कैम्प उखड़ते और गड़ते। एक दिन असबाब से लदी-बैलगाड़ियाँ घास के जंगल में गुम हो गईं। हमलोग निर्जन स्थान में कैद थे—न कहीं रास्ते का पता, न किसी पेड़ की छाया, न कोई पथ प्रदर्शक! अन्धकार सघन होता जा रहा था। बहुत दूर कुछ रोशनी दिखाई दी। धीरे-धीरे बड़ी सावधानता से उसी की ओर बढ़े। दो घंटे के बाद एक गाँव के किनारे पहुँचे। बैलगाड़ियों की खोज में जिन आदमियों को भेजा था, उन्हें पुकारने लगे—उन्हें अपना पता देने के लिये बन्दूक के फायर भी

किये; मगर कोई जवाब न मिला। उलटे गाँववाले कच्ची नींद से जाग उठे और हमलोगों को डाकू समझकर उधर से बन्दूक चलाने लगे! तब हमलोगों ने खास आदमी भेजकर गाँववालों को अपना परिचय दिया। आखिर गाँव में जाकर एक बहुत बड़े पेड़ के नीचे टिके। यहाँ भी विपत्ति ने पीछा न छोड़ा, घोर वृष्टि और बिजली की कड़क-तड़प होती रही—बेचैनी में ही रात कटी

सुबह गाड़ियाँ आईं तो मालूम हुआ कि रास्ता बड़ा बीहड़ था और गाड़ियों की सहायता के लिये जो हाथी भेजे गये थे वे भी दलदल में फँस गये थे। खैर, हमलोग दोपहर के बाद फिर बनैले भैंसों की टोह में निकले। रास्ते में मैंने तेइस फुट लम्बे एक घड़ियाल (मगर) का शिकार किया। मैंने एक हजार से भी अधिक मगर मारे हैं; पर इतना बड़ा मगर आजतक कभी न मिला था।

इतने ही में खबर मिली कि जंगल के छोर पर गेहूँ के खेतों में भैंसे ऊधम मचा रहे हैं। हमलोग उधर ही लपके। कुछ दूर आगे एक तगड़ा भैंसा दीख पड़ा, जिसका मस्तक बहुत ही सुन्दर एवं भव्य था। आजतक वह भड़कीला महिष-मस्तक मेरे महल के बरामदे में सुशोभित है। पहले तो उसका मुकाबला होने पर मैं दनादन गोलियाँ दागता चला गया; पर वह हटा नहीं, आँखों से ओझल हो गया। बहुत तलाश करने पर भी निराशा ही मिली; पर इसी बीच तीन भैंसों को मार गिराया। इनके मारने में मुझे घोर आत्म-संयम से काम लेना पड़ा।

फिर दूसरे दिन-सबेरे वह भयंकर भैंसा 'घाघरी' नदी के उस पार मिला। इस बार उसने अड़कर हाथियों को ललकारा। दँतैल हाथियों की कतार ने उसे घेर लिया। घिर जाने पर उसने एक हथिनी को जबरदस्त टक्कर मारी। कई बन्दूकें उसपर सीधी तनीं। पर वह एक हौदावाले दँतैल हाथी को घायल कर कतार तोड़ता हुआ बड़े वेग से बाहर निकल गया। उसका पीछा किया गया। थोड़ी ही दूर पर वह गोली का शिकार हुआ; पर गिरते समय क्रोध और पीड़ा के मारे बड़े जोर से गरज उठा।

इसी तरह एक और मतवाला भैंसा हाथियों से घिर गया था। वह ऐसा मस्ताना था कि विशाल गजदन्त में अपने वज्र कठोर सींगों से दो बार टक्कर मारकर प्रचंड हुंकार करता और गोलियों की बौछार झेलता हुआ पीछे हट गया। हाथी के दाँत में उसके सींग की टक्कर लगने से जो घोर शब्द हुआ उससे जंगल गूँज उठा।

बनैले भैंसे बड़े बलिष्ठ और मदान्ध होते हैं। इनकी टक्कर में पहाड़ी चट्टान की चोट होती है। गंगा और कोशी नदियों के संगम पर जो जंगल है उनमें बड़े मदोन्मत्त भैंसे पाये जाते हैं। एक भैंसा तो खेत के रखवालों पर ऐसा टूटा कि एक अभागे किसान को सींगों पर उठाकर—बेचारे की देह में सींग भोंककर—उसकी लाश को झकझोरता हुआ जंगल में कई दिन दौड़ता फिरा। अन्त में बड़ी दौड़-धूप और छानबीन के बाद गोली के घाट उतारा गया।

शिकारी की कठिनाइयाँ और कसौटियाँ

शिकारी के जीवन में अनायास विपत्तियाँ आती हैं—बड़ी-बड़ी निराशाएँ मिलती हैं—पग-पग पर संकटों का सामना पड़ता रहता है। किन्तु साहसी शिकारी बहादुरी के साथ विपत्तियों को झेलता है, निराशाओं को बर्दाश्त करता है और संकटों पर विजय पाता है। उसके जीवन में संकट के बिना सच्चा आनन्द नहीं—संकट पर विजयी होकर वह स्वर्गीय सुख पाता है और यही उसका सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है।

सफल शिकारी होने के लिये यह जरूरी है कि शुरू-शुरू में संकटों और निराशाओं से हिम्मत न हारे, बल्कि धीरज और ढाढ़स के साथ उनका मुकाबला करता रहे। उसका शरीर सब तरह की असुविधाएँ और कठिनाइयाँ झेलने के लिये काफी मजबूत होना चाहिये। उसका दिमाग हमेशा भय से शून्य और आत्मविश्वास से परिपूर्ण होना चाहिये-उसे अचानक विपत्ति और आसंकर से भयंकर परिणाम के लिये हरदम तैयार रहना चाहिये।

मेरे शरीर और दिमाग पर कितनी ही दुर्घटनाओं की लड़ी टूटी—एक बार घोड़े पर चढ़कर भाले से बनैले सूअर का शिकार करते समय ऐसा गिरा कि खोपड़ी में गहरी चोट लगी, एक घंटे तक बेहोश रहा और सिर में करारे घाव का निशान जिन्दगी भर बना रहा। डाक्टर आदि ने यही राय दी कि घुड़सवारीसे परहेज



मेरे मारे हुए बनैले भैंसों के विशाल मस्तक [पृष्ठ १२६]



मेरे मारे हुए कुछ बाघों की खाल

करना चाहिये; मगर दिन-दिन सूअर के शिकार का हौसला बढ़ता ही गया। शिकारी का सच्चा आनन्द तो आकस्मिक विपत्ति से लोहा लेने में ही है।

कुछ लोग पिंजड़े में बैठकर बाघ का शिकार करते हैं और बाघ को लुभाने के लिये पिंजड़े के पास एक मवेशी बाँध रखते हैं। शिकारी ही सोचें कि ऐसे शिकार में कौन-सा आनन्द है। शिकार को आत्मरक्षा का अवसर देकर उसके हमले से बचे रहने के लिये खुद खबरदार रहने में जो सफाई और सचाई है वह कहीं घात में लगे रहकर वार करने में नहीं है।

शुरू में नये शिकारी को प्रायः निराशा ही मिलती है। पर सिद्धहस्त शिकारी को भी कभी-कभी निराशा से पाला पड़ता है। कभी शेर के शिकार में निकलने पर हिरन ही हाथ लगता है और कभी इसके विपरीत भी। किन्तु किसी हालत में हिम्मत न तोड़ना ही सफल शिकारी की पहचान है। साहस और उत्साह, आशा और विश्वास—इतना दृढ़ होना चाहिये कि लाख निराशाओं के बाद भी संकल्प न डिगे।

कठिनाइयाँ और विघ्न-बाधाएँ झेलना तो शिकारी का सहज स्वभाव ही है। यदि वह शारीरिक सुख का अभिलाषी है—गर्मी की तीखी धूप और आड़े की रातवाली करारी सर्दी नहीं सह सकता—और बरसात की घनी बौछार नहीं बरदाश्त कर सकता, तो वह कभी सफल शिकारी नहीं हो सकता। जिस जंगल में

पगडंडी का भी पता नहीं रहता, उसमें फूलों की सेज कहाँ मिल सकती है ? इसलिये शिकारी को हर तरह की मुसीबत झेलने का आदी होना चाहिये।

मगरों का शिकार

कोशी नदी और उसकी सहायक नदियाँ मगरों की खान हैं। मगर बड़ा चतुर जल-जन्तु है। उसकी सूँघने की शक्ति विचित्र होती है। पानी के कछार की सूखी रेत पर धूप में वह पड़ा रहता है; तनिक-सी आहट पाते ही वह झट पानी में चल जाता है। मैं कई बार बहुत चुपके-चुपके उसके पास तक पहुँचा; फिर भी वह पानी में गायब ही हो गया। शुरू-शुरू तो मैंने जितने मगरों को घायल किया, उनमें एक भी हाथ न लगा। बात असल यह है कि जब तक उसके मर्मस्थल में घातक चोट नहीं लगती वह हाथ नहीं आ सकता। लोग समझते होंगे कि उसके हृदय के आरपार गोली चली जाय तो वह तुरत मर जा सकता है; पर बात ऐसी नहीं है। गर्दन की बगल में गोली लगने से ही वह दम तोड़ता है। भले ही वह छटपटा उठे, पर सरककर या उछलकर जल में नहीं भाग सकता। कारण, पहले सिर उठाये बिना वह जल में समा ही नहीं सकता।

जीवित मनुष्य या पशु के अतिरिक्त मगर का भोजन है मछली और मुर्दा या लाश। कई बार मैंने पशुओं की लाशों और अधजले मुर्दों के चारों ओर मगरों का झुंड देखा है। वे मांस के टुकड़े नहीं

खाते, बल्कि समूचा बदन ही निगल जाते हैं--जैसे साँप अपना शिकार समूचा निगलते हैं। एक बार एक मगर एक ग्वालिन को खिल गया था। जब मैंने उसे मारा, उसका पेट चीरने पर ग्वालिन का समूचा शरीर निकल आया, जो लोंदा-सा बन गया था और जिसके हाथ-पैर के कुछ अंश गल-पच गये थे। वह घृणित दृष्य आज भी चित्त को खिन्न बना देता है।

कई बार तो मगरों के पेट से गहने भी निकले हैं। अंडाकार पत्थर के टुकड़े भी! न जाने वे पत्थर के टुकड़ों को क्यों लीलते हैं! किन्तु मगर के पेट से निकले हुए गहने प्रायः ताबीज का काम करते हैं। बवासीर के रोगी इनसे लाभ उठा चुके हैं। और भी कई बीमारियों में इनका जादू का असर देखा गया है।

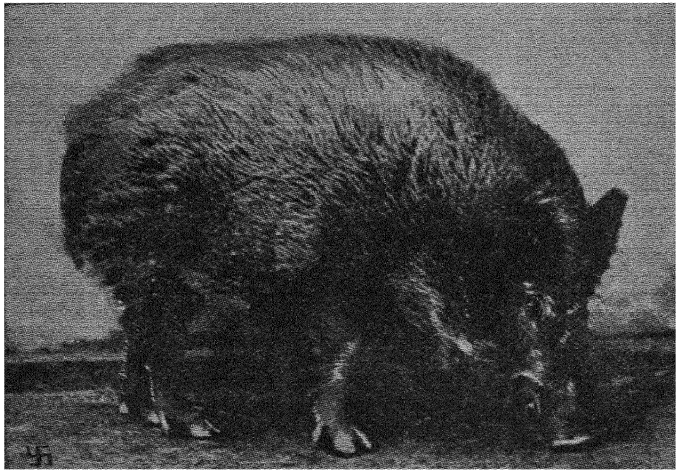
एक बार एक अजीब तमाशा हुआ। चैत्र-संक्रान्ति के दिन कुछ देहाती मछली मारने गये। बाँस की तीलियों से बनी टोकरी-जैसी 'टापो' उनके पास थी जिससे जल के अन्दर मछली को हंककर पकड़ लेते थे। अचानक उनकी 'टापी' एक मगर पर पड़ गई। समझा बड़ी भारी मछली फँसी; सहायता के लिये साथियों को पुकारा। एक बूढ़ा आकर उस भीषण मछली (!) पर घोड़े की तरह सवार हो गया। जब मगर जल के ऊपर उठा, मछली-मार चिल्लाकर भाग चले; पर बूढ़ा हक्का-बक्का हो कुछ क्षण उसकी पीठ पर ही बैठा रहा। जब मगर तट के समीप पहुँचा, किनारे की घासों को पकड़कर बूढ़ा उछल भागा। इसी तरह, एक बार

एक मछुए की टाँग मगर ने पकड़ ली। मछुए ने उसकी आँखों में अपनी उँगलियाँ घुसेड़ दीं, वह व्यग्र हो छोड़ भागा। एक और बहादुर मछुए को मैंने देखा जो जल में डूबकर मगरों की कमर में रस्सी का फाँस डाल देता था और उस रस्सी का छोर किनारे पर खड़े दूसरे साथी को थमा देता था। इस प्रकार उसने कई मगरों को बाहर खींचकर मारा था!

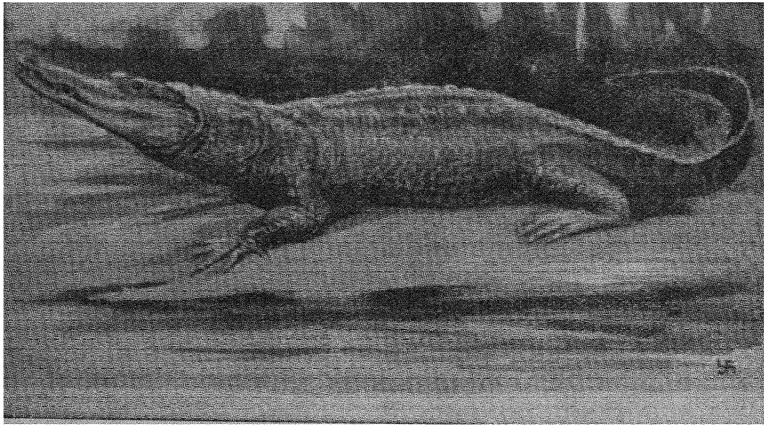
एक दृश्य मैंने अद्भुत देखा। एक नदी के किनारे एक चीता परक गया था। जल पीने के लिये आये हुए पशुओं के शिकार का उसे चसका लग गया था। एक महीने में उसने लगभग बीस बछड़ों को इसी भाँति मारा था। एक दिन शाम को खबर पाकर हमलोग यह देखने गये कि उस हत्यारे चीते का शिकार मगर ने कर डाला! हाथियों की सहायता से जब पानी पर तैरती हुई उसकी लाश बाहर निकाली गई, तब दीख पड़ा कि मगर ने उसकी पिछली टाँग पकड़ ली थी और उसकी आधी देह भी चबा डाली थी!

बनैले सूअरों का शिकार

सूअर का शिकार बड़ा ही खतरनाक काम है। घोड़े पर चढ़ कर भाले से शिकार करना तो और भी खतरनाक है। एक आँखों देखी घटना मुझे कभी न भूलेगी। एक घुड़सवार शिकारी का घोड़ा अचानक ठोकर खाकर खाई में गिर पड़ा। बर्छी की नोक शिकारी के कन्धे को छेदती हुई पीठ के पार निकल



बनैला सूअर !



जल का राजा 'मगर'

गई। आखिर लाठी काटकर नुकीला फल बाहर खींचा गया। शिकारी की पीड़ा का क्या कहना! पर मर्मस्थान बच गया था—बहादुर मरा नहीं—ईश्वर की इच्छा!

एक दँतैल सूअर का सिर, ढाल पर मढ़कर, मेरे गढ़ के बरामदे में टँगा हुआ है। देखने से पता लगता है कि उसके दाँत कितने विशाल थे! एक घास के जंगल में उसके आने की जब सूचना मिली, फुटबाल का खेल छोड़कर मैं अपने घुड़सवारों के साथ तुरत चल पड़ा। आध मील जाने के बाद वह दीख पड़ा, और मैंने उसके कठोर शरीर में भाला भोंक दिया। पर वह बेपरवा-सा आगे बढ़ता ही गया। जब लगभग-पाँच सौ गज आगे बढ़ गया, मेरे एक सवार ने दूसरी बार भाला भोंका। अब वह लौट पड़ा। उसकी ललकार पर सवार न डट सके। वह उन्हें बहुत पीछे छोड़कर आगे दूर निकल गया और अब मैं ही अकेला उसके साथ रह गया। उसके पीछे घोड़ा डाले जब मैं चौथाई मील निकल गया, उसके सिर की हड्डी में इतने जोर से भाला घुसा दिया कि फिर खींच निकालना असंभव हो गया। सूअर अत्यन्त क्रुद्ध होकर टूट पड़ा। मेरे बूट को काटा और घोड़े की बगल में भी थोड़ा जख्म कर दिया। अब मैंने भाले को उसके सिर में ही गड़ा छोड़ देना चाहा; पर उसके पीछे दौड़ते-दौड़ते घोड़ा इतना थक गया था कि अब टस-से-मस होना नहीं चाहता था। वे कुछ क्षण एक युग के समान बीत रहे थे। इतने में मेरे एक घुड़सवार ने पहुँचकर उसका काम तमाम कर दिया।

एक बार मैं, दिसम्बर की कड़ी सर्दी में, पाँच सवारों के साथ सूअर के शिकार पर चला। एक सूअर इतना भारी मिला कि अपने मांसल शरीर का भार लेकर वह तेज दौड़ नहीं सकता था। इसलिये उसे लगातार भाला मारने में कोई कठिनाई न हुई। दो भाले उसकी देह में ही अँटके रह गये। उनके लट्ठों को उसने दाँतों से तोड़कर क्रोध में चबा डाला, यद्यपि उनके फल उसके शरीर में ही चुभे रह गये।

इतने में घनी घासों से ढँके एक गहरे गढे में घोड़े के साथ एक सवार गिर पड़ा। घोड़ा तत्काल ही मर गया और सवार बहुत घायल हो गया। घोड़े की गरदन टूट गई थी, और सवार भी बड़ी कठिनाई से निकाला गया। घोड़ा बड़ा शोख और तेज था, इसलिये हमलोगों को बड़ा दुःख हुआ। उसे वहीं छोड़ देने के सिवा और कोई चारा न था। उस घायल सवार को भी दूसरे घोड़े पर लादना पड़ा।

अब मैं चार सवारों के साथ फिर आगे बढ़ा—उसी बनैले सूअर की टोह में। किन्तु उसे मार गिराने से पहले हमलोग भी पारी-पारी से गिरे और उठे। सचमुच वह बड़ा अशुभ दिन था! अन्त में मैं भी गिरा, क्योंकि खाई से घिरे घास के जंगल में सूअर के पैठ जाने पर भी मैंने उसका पीछा न छोड़ा, और घोड़े को पिछली टाँग गढ़े में पड़ जाने से मैं खाई में गिर पड़ा। मैं कूदकर ज्योंही ऊपर आया, सूअर पाँच फुट की दूरी तक पहुँच गया। मेरे हाथ में भाला भी न था; क्योंकि गिरते समय ही मैंने उसे

अलग फेंक दिया था; किन्तु सौभाग्यवश पिस्तौल था—इसलिये दो गोलियों में ही उस बनैले दँतैल को ढेर कर दिया।

एक बार मैं मोटर पर जा रहा था। एक जगह सड़क पर बहुत से देहातियों ने मोटर को घेरकर कहा कि पास ही के मैदान में एक सूअर ने दो आदमियों को घायल कर दिया है, जिनमें एक की आँतें निकल आई हैं और अस्पताल जाकर मर गया है। मैंने मैदान की ओर मोटर घुमाई। तबतक सूअर पटुए के खड़े पौधों से ढँके खेत में घुस गया था। जब मैंने मोटर का भोंपू बजाया, वह निकल पड़ा—मोटर के बायें मड-गार्ड में इतने जोर का थक्का मारा कि वह टेढ़ा हो गया। मेरे पास राइफल न थी, एक बारह-नली बन्दूक थी; पर उसकी गोलियाँ कारगर न हुई—सूअर एक धान के खेत में चला गया, जिसमें एक फुट पानी लगा था। देहातियों के पास जो भाले थे, एकदम भोथरे! बहुत-से देहाती कुत्ते भी जमा हो गये थे, जिनमें से एक को उसने खत्म कर डाला था। आखिर जब धान के खेत से वह मैदान में खदेड़ा गया तब उसके पास-पास मैं मोटर दौड़ाने लगा। इस चक्करदार घेरे की दोड़ में जब वह थक गया, एक देहाती ने भोंड़े भाले से उसका काम तमाम किया। उसके खेत रहने से देहाती बड़े खुश हुए; पर वास्तव में वे थे बड़े डरपोक! उस बनैले सूअर का सिर दो विकराल दाँतों के साथ, अब भी मेरे पास है।

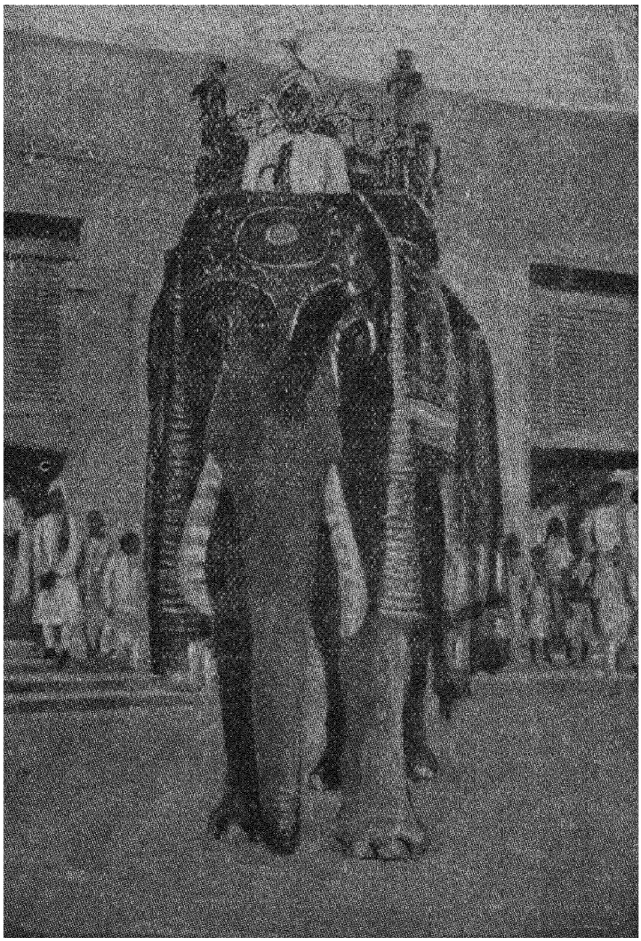
क्रोधान्ध 'मोतीप्रसाद'

सन् १६१४ ई० की बात है। मेरे परम प्रिय हाथी 'मोती-

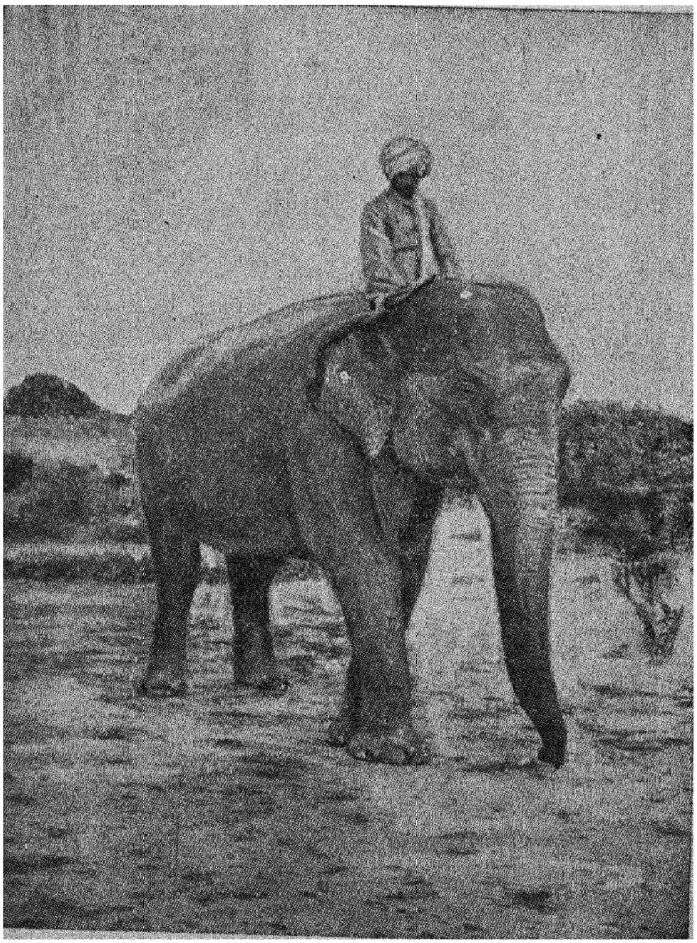
प्रसाद' ने एक रात नींद हराम कर दी। दिन-भर जंगल में शिकार के पीछे हैरान होने के बाद शाम को घने जंगल के बीच कैम्प के अन्दर आरामकुर्सियों पर हमलोग बैठे हुए थे। सामने आग धधक रही थी। जाड़े की रात, चारों ओर सन्नाटा, सियारों का कोरस-गान! चारा काटकर लौटते हुए हाथियों की आहट धीमी-धीमी सुनाई पड़ रही थी। 'मोती' भी लौट आया। चारे का बोझ उतारा गया। महावत ने उतरकर एक लम्बा भारी सीकड़ उसके पिछले पाँव में बाँधा; पर ज्योंही उस साँकल को खूँटे से बाँधने चला, 'मोती' बिगड़ खड़ा हुआ। महावत मेरे कैम्प में दौड़ आया और चिल्लाने लगा कि मोती बिगड़ उठा है और पीछा करता हुआ इधर ही आ रहा है!

हमलोग हड़बड़ाकर अपनी राइफलों के लिये कैम्प में दौड़े। तबतक सौ गज की दूरी तक मोती आ धमका! पहले मैंने उसपर फैर करना अच्छा न समझा; क्योंकि वह केवल महावत को ढूँढ़ता हुआ खीमे के पास से चुपचाप निकल गया। महावत दूसरे खीमे में चला गया था, इसलिये मोती वहीं जाकर ऊधम मचाने लगा। महावत तो लुक-छिपकर निकल भागा; पर 'मोती' ने खीमे को रौंद डाला, वहाँ की सब चीजों को तोड़-फोड़कर मसल डाला।

महावत अपनी जान के डर से ऐसा पागल हो गया था कि हमलोगों के बीच आकर गिड़गिड़ाने लगा। बस, मोती उसकी गंध और आहट पाकर इधर ही लपका। अब सबकी जान पर



मेरा विशाल दन्ती 'मोतीप्रसाद'
[पृष्ठ १४०]



'चंचल प्यारी' (शिकारी हथनी)
[पृष्ठ १४८]

आफत आई। कैम्प के पास ही एक छोटी नदी थी, हमलोग झट उस पार हेल गये—लगभग तीन ही फुट पानी था। हमलोगों के पास राइफलें तो थीं, पर मूर्ख महावत जो पीछा नहीं छोड़ता था! इसलिये हाथी भी अदबदाकर हमलोगों के पीछे पड़ गया था। अँधेरा ऐसा घना था कि हाथ को हाथ न सूझता! चारों ओर दूर-दूर तक फैला हुआ घनघोर जंगल! अन्त में उसे गोला मार देने की ही ठहरी। पहले हवाई फायर किये गये। तब हाथी चिंघाड़ता हुआ घने जंगल में घुस गया।

हमलोग जाड़े से ठिठुरते हुए कैम्प में वापस आये। हड़-बड़ी में जूता-मोजा पहने हुए ही नदी लाँघ गये थे, इसलिये रात की तीखी सर्दी से कँपकँपी लग रही थी। झट कपड़े बदलकर हमलोग भोजन करने बैठे। अधिकांश नौकर भी इधर-उधर भाग गये थे—कोई तो दो ही घंटे में, कोई आधी रात तक और कोई सुबह होते-होते लौटे।

पर, भोजन कर चुकने के बाद फिर 'मोती' का चिंघाड़ सुन पड़ा। मैंने मन में दृढ़ संकल्प किया कि राइफल के साथ सावधान रहकर रात भर जागूँगा। अपने बड़े भाई (राजा कल्यानन्द सिंह) को निश्चिन्त सोने के लिये कह दिया; क्योंकि उनका हृदय बड़ा सुकुमार था। आधी रात के बाद मेरे साथ चार-पाँच ही आदमी जगे रहे और सब सो गये। सोभाग्यवश हाथी के पिछले पाँव में भारी साँकल रहने से उसकी आहट मिलती रहती थी-वह मेरे

कैम्प से थोड़ी ही दूर पश्चिम चक्कर काट रहा था, पर हमलोगों के जागरण के कारण बन्दूक के डर से कैम्प तक नहीं आता था।

आखिर सुबह में देखा गया कि थका-माँदा वह अपने स्थान पर आकर खड़ा है! अँधेरे में बोहड़ जंगल के अन्दर मानों भारी साँकल खींचते फिरने से वह चूर-चूर हो गया था। रात-भर चिंता में जगे रहने से हमलोगों की भी वही दशा थी। सुबह 'मोती' को शांत देख विश्राम की इच्छा से अभी थोड़ी ही देर सोये थे कि कैम्प के दक्षिण से चीतों के उत्पात का समाचार आ पहुँचा! शरीर में स्फूर्त्ति तो थी नहीं; पर अब सोना भी कठिन था। चल पड़े उसी क्षण। गत रात्रि के भयंकर नाटक का नायक 'मोती' भी साथ चला। एक घंटे के अन्दर ही हमलोग तीन चीतों को मारकर हाथी पर लादे हुए कैम्प में पहुँचे, जिनमें दो मेरी राइफल के शिकार थे!

मनुष्य-भक्षी बाघ

नर-मांस-भक्षी बाघ अत्यन्त भयंकर और चतुर होता है। वह गाँव या सड़क के आस-पास के छोटे जंगलों में बड़ी होशियारी से छिपा फिरता है। वह कभी एक स्थान में नहीं ठहरता, हमेशा जगह बदलता रहता है। कहीं-कहीं उसके भय से जंगल के रास्ते बिलकुल बन्द हो जाते हैं। वह अचानक छापा मारकर गुम हो जाता है। ऐसे बाघ के शिकारी को सरकार भी पुरस्कार देती है; पर निहत्थे देहातियों का आशीर्वाद उस सरकारी पुरस्कार से कहीं अधिक बहुमूल्य होता है।

एक नर-भक्षक ने बड़ा आतंक फैला रक्खा था। मैं दल-बल सहित उसकी तलाश में निकल पड़ा। कई जगह जंगल में और सड़क के किनारे बटोहियों और चरवाहों की लोथ के कुछ बिखरे हुए टुकड़े देखकर मैं रोमांचित हो उठा। मैंने निश्चय कर लिया कि इस नर-भक्षक का अन्त किये बिना चैन न लूँगा।

सारा जंगल छान डाला गया, गज-दल दो दिन हैरान-परेशान होकर रह गया—कहीं वह 'मौत का दूत' न मिला। एक-दो बार उसकी झलक भी देखी गई; पर वह राइफल के दायरे में न आया। संयोगवश एक बार लगभग पाँच सौ गज की दूरी पर दीख पड़ा, और मैंने गोली भी चलाई; पर वह घायल हुआ या नहीं—कुछ पता न लगा। मुझे अवसर चूकने का बड़ा पछतावा हुआ; पर अब समय न रहा; क्योंकि कैम्प उठाकर मुझे दिल्ली दरबार (१९१२) में चला जाना पड़ा। वहाँ से लौटने पर मैं फिर उसी जंगल में पहुँचा। इस बार जंगल में मोटी और मजबूत रस्सो के लम्बे-चौड़े जाल बिछाये गये। सैकड़ों आदमी शोर मचाते और ढोल पिटते हुए चारों ओर दौड़ने लगे। इस तरह वह हत्यारा जाल के बीच में पहुँचते ही फाँस लिया गया।

मैंने देखा कि पहली बार जो मैंने बहुत दूर से उसे गोली मारी थी वह उसकी जाँघ में लगी थी, जिससे मवाद बह रहा था। संभवतः कुछ ही दिनों में असमर्थ होकर वह मर जाता; पर आज जाल में फँसते ही वह क्रोधान्ध हो स्वयं अपने शरीर को नोचने

लगा—मानों अपने-आपको काट खायगा। इस तरह वह एक-डेढ़ घंटे के अंदर ही मर गया। वह पट्ठा जवान नौ फुट से ज्यादा लम्बा था। क्या उस स्वाभिमानी ने ग्लानिवश आत्महत्या कर ली ?

एक साथ ही दो बाघ

कोशी नदी के किनारे एक जगह बहुत लम्बा-चौड़ा टापू-सा बन गया था, जिसके एक तरफ नदी के पुराने प्रवाह-क्षेत्र में तीन फुट छिछला पानी था। उसमें लम्बी घासों का घना जंगल लहरा रहा था। ऐसे जंगल में हाथियों के बिना शिकार करना कठिन है। उस टापू के जंगल में लगभग चार बरसों से दो बाघ रहते थे। मैं कई बार उनके शिकार के लिये गया; पर वे हर बार आँख बचाकर निकल गये। एक बार जंगल के चारों ओर पहरा बैठाकर मैंने हुक्म दिया कि हाथियों के झुंड से जंगल रौंद डाला जाय। मै एक नाके पर दूर और नजदीक निशाने की दो बन्दूकें लेकर बैठ गया।

इस बार का उपाय सफल हुआ। थोड़ी देर में दोनों साथ ही दीख पड़े—आहिस्ता-आहिस्ता बहुत चौकन्ने से चले जा रहे थे। जब वे तीन सौ गज की दूरी पर आ गये, मैंने गोली चलाई। एक की छाती में गोली लगी, वहीं सर्द हो गया—हिला-डुला तक नहीं। दूसरा उसे चारों ओर से देख-देखकर चकित-सा हो रहा था। मैंने सोचा, कहीं यह सामने का शिकार गायब न हो जाय। लगातार दस गोलियाँ चलाकर मैंने अपनी राइफल की टोटादानी

खाली कर दी और दूसरी बन्दूक सँभाली ! बाघ की रीढ़ टूट गई और दो पैर भी। दनादन गोलियों की आवाज सुनकर हाथियों का दल मेरी तरफ दौड़ा। उनके पहुँचते-पहुँचते मेरे भाईजी की अन्तिम गोली खाकर एक फुट पानी में गिरकर शान्त हो गया !

पन्द्रह मिनट में तीन बाघ

सन् १६११ ई० के अप्रैल महीने की घटना है। मैं अपने गज-दल के साथ एक जंगल में शिकार खेलने गया; पर वहाँ पहुँचकर देखा कि आग लगने से जंगल भस्म हो गया है, कहीं-कहीं कुछ झाड़ी-झुरमुट बच रहे हैं। पता लगा कि इस जंगल के जानवर दूसरे जंगल में निकल गये हैं। इसी निराशा में एक घसकटा मिल गया, जिसने इनाम देने का करार करने पर उँगली के इशारे से घास और झाँए का वह जंगल दिखलाया, जो करीब पाँच सौ गज की दूरी पर था। उस समय का आनन्दोल्लास अवर्णनीय है !

सात हाथियों के साथ उस जंगल पर धावा किया गया। जहाँ तक संभव था, हमलोग अत्यन्त शान्त एवं धीर गति से सावधानतापूर्वक आगे बढ़ रहे थे। किन्तु जंगल के किनारे हाथियों के पैर रखते ही बाघ खलबलाकर निकल पड़े। मेरे सामने एक जोड़ा आया। मैंने तुरत निशाना साधा। एक-एक ही गोली दोनों के लिये काफी हुई। मैं टुक ठिठककर अपने डबल शिकार को घूरने लगा; पर मेरे साथी यह कहकर आगे बढ़ने लगे कि अभी और दो बाघ हैं, जो निशाना बचाकर भाग गये हैं। तब

मैं भी उनके पीछे चला। किन्तु दोनों बाघ पड़ोस के दूसरे जंगल में चले गये थे; इसलिये वहीं उनका पीछा किया गया। सौभाग्यवश ज्योंही मैं जंगल में घुसा, तीसरा बाघ मेरे सामने ही उछल निकला। मैंने उसे क्षणभर भी अवकाश न दिया—मेरी एक ही गोली खाकर वह धराशायी हो गया—इसके पहले उसे कोई गोली नहीं लगी थी।

मेरे साथियों की बन्दूकें अभी तक जंगल को गुँजा ही रही थीं; पर चौथा बाघ हाथ न लगा—दूर के घने जंगल में जा छिपा। इन तीनों में जो सबसे बड़ा था, दस फुट नौ इंच का निकला! बाकी दोनों नौ-नौ फुट के थे। इसके सिवा इस यात्रा में चार बाघ तथा चीते और भी मिले थे—छः चितकबरे हरिण भी।

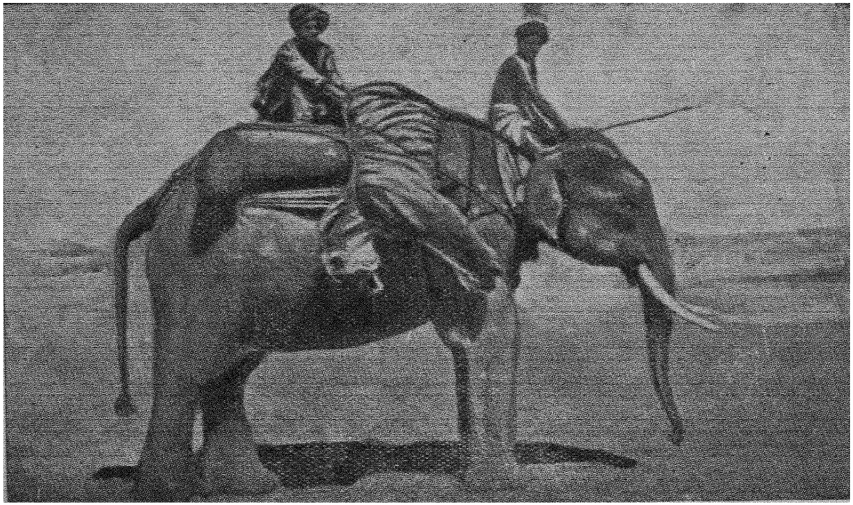
सबसे बड़ा बाघ

सन् १९१५ ई० के वसन्त काल में 'रॉयल-बंगाल-टाइगर' (Royal Bengal Tiger) के नमूने का एक विशाल विकराल बाघ मेरी राइफल का शिकार हुआ, जो बारह फुट तीन इंच लम्बा था—जिला और प्रान्त-भर में अब तक जितने बाघ मारे गये थे, सबकी लम्बाई का रेकर्ड इसने मात कर दिया!

अप्रैल का प्रथम सप्ताह था। देवढ़ी-चम्पानगर के गढ़ में प्रातःकाल ही सूचना मिली कि पड़ोस के जंगल में दो गायें मार डाली गई हैं। उसी समय मैंने कूच किया। जंगल में पहुँचते ही बाघ का सामना हुआ। वह क्रोधान्ध हो भयंकर रूप से गरजने लगा। पारी-पारी से उसने कतार के सभी हाथियों को चुनौती दी।



मेरा सबसे बड़ा शिकार (१२ फुट ३ इंच लम्बा बाघ)—[पृष्ठ १४६]



हाथी पर लदा हुआ मरा बाघ [पृष्ठ १५१]

मैंने अपना हाथी आगे बढ़ाया, पर इतने ही में वह नदी लाँघकर पार के घने जंगल में घुस गया। हमलोगों ने बड़ी तेजी से उसका पीछा किया। मेरी परम प्यारी हथनी 'चंचल पियारी' बड़ी उत्सुकता और तीव्रता से आगे बढ़ती जा रही थी। तबतक अचानक वह सामने आ पड़ा। तत्क्षण मैंने गोली चलाई, जिसके लगते ही वह धरती पर लोट गया। इसका भव्य चेहरा और बुलन्द बदन देखकर मुझे अफसोस हुआ कि इसकी कलाबाजियाँ देखने का मौका न मिला—एक ही गोली में पट्ठा ठन बोल गया। यदि उसके कलेजे पर मेरी गोली की करारी चोट न बैठी होती, तो वह अवश्य ही अपना कला-कौतुक दिखाकर हमलोगों के जोश में उत्तेजना भरता। अन्त में उसकी लाश को एक हाथी पर लादकर हमलोग लौट आये। जिस मस्तानी और गर्वीली चाल से वह मेरे सामने आ डटा था; वह मेरी आँखों में बराबर नाचती रही।

मेरे हाथी के ऊपर बाघ

यों तो एक-दो बार पहले भी बाघ के शिकार में हाथी के मस्तक पर बाघ उछल आया था, जिसे हाथी ने झोंका देकर पटक दिया था; पर इस बार की दुर्घटना अभूतपूर्व एवं रोमांचकारिणी थी। एक नदी तट के जंगल में हाथियों पर हमलोग शिकार की खोज करते चले जा रहे थे, इतने में पंकिल जल के गढ़े से एक बाघ निकलकर गरजता हुआ मेरे हाथी पर टूट पड़ा। एक क्षण तक तो मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ रहा; पर दूसरे ही क्षण

मैंने दोहरा फायर कर दिया। परन्तु निशाना शायद ठीक घात पर बैठा, और वह बिजली की गति-से मेरे हाथी पर उछल आया। बेचारी 'चंचल-पियारी' चकित और स्तब्ध-सी खड़ी रह गई। मैं प्रायः शिकार में हाथी पर हौदा नहीं कसवाता था, इसलिये खुले गद्दे पर ही बैठा था। बाघ झट मेरे पास बढ़ आया।

उसका एक पंजा महावत के पाँव पर था, दूसरा था गद्दे पर और उसका भयानक सिर मेरी जाघों के बीच में। उसके दोनों पिछले पैर हथनी की सूढ़ँ और देह पर झूल रहे थे। बेचारी 'चंचल-पियारी' जी-जान से कोशिश कर रही थी कि उसे झटका देकर गिरा दे; पर वह किसी तरह गिरता न था। पहले तो क्षण भर मैं स्तम्भित-सा हो गया; पर तुरत उपस्थित बुद्धि की उत्तेजित प्रेरणा ने आकस्मिक सूझ पैदा की। मैं बन्दूक के कुन्दे से ज़ोर भर उसके सिर को कूटने लगा। मैं लगातार चोटों की वर्षा कर रहा था और वह भयंकर गुर्राहट के साथ मुझे पकड़ने की कोशिश में था; पर मैं उसे साँस लेने का भी अवसर नहीं देता था। अन्त में वह आह-भरी राक्षसी-गुर्राहट के साथ नीचे गिर पड़ा। फिर उठ न सका, वहीं ठंढा हो गया। मेरी पहली दो गोलियाँ अपना काम कर गईं—फिर कुन्दे से जो हथौड़े की मार पड़ी थी वह भी कम न थी।

हथनी ने आज कमाल की दृढ़ता दिखाई। उसकी सूँढ़ पर गहरे घाव हो गये थे। एक कान फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया था।

बेचारी लहू-लुहान सूँढ़ को हिला-हिलाकर शान्ति और सन्तोष व्यक्त करने लगी।

किन्तु, बेचारा फीलवान 'श्रीलाल' कराह रहा था! उसके पैर से रक्त की धारा बह रही थी। वह प्रायः मूर्च्छित-सा हो गया। बाघ ने उसके दाहिने पाँव को, घुटने से एँड़ी तक, बुरी तरह भँभोर लिया था। बड़ा हृदयद्रावक दृश्य था!

मैंने हथनी को बैठाकर श्रीलाल को सहारा दे नीचे उतारा और अपना साफा फाड़कर पट्टी बाँधी; फिर कैम्प में पहुँचते ही उसे पास के अस्पताल में भेज दिया। दूसरे दिन मोटर से उसे अपने गढ़ में ले आया, जहाँ वह चार महीने अस्पताल में रहकर चलने-फिरने लायक हो सका।

जब बाघ की खाल निकाली गई, मेरी दो गोलियों में से एक उसके पेट से निकली और दूसरी उसके पुस्ते के पास से। यदि वह कुछ सौ गज दूर रहता तो हाथी तक पहुँचने न पाता, रास्ते में ही खेत रहता। पर वह तो मुश्किल से सिर्फ बीस गज की दूरी पर था, इसीलिये यह दुर्घटना हुई। उसके शरीर की धारियाँ बहुत सुन्दर थी और लम्बाई में वह नौ फुट आठ इंच था। नौ फुट कुछ इंच लम्बा एक और बाघ भी इसी यात्रा में मेरी गोली का शिकार हुआ।

एक विशाल अजगर

सन् १९१३ के मार्च में हमलोग नेपाल की तराई के जंगलों

में शिकार खेलने गये थे। हिमालय की तलहटी के जंगल बड़े सुहावने भी हैं और डरावने भी। अपने कैम्प से झटपट नाश्ता-पानी करके हमलोग निकल पड़े। खेदा करनेवाले अपने काम पर तैनात थे। यात्रा शुभ मालूम हुई, शुरू ही में सुन्दर बाघों का एक जोड़ा मिल गया। नर-बाघ करीब बारह फुट लम्बा था, जो देखते-देखते अचानक हाथियों की कतार तोड़कर निकल भागा। पर उसकी मादा (बाघिन) डटकर हाथियों को ललकार-पर-ललकार देने लगी। उसका राक्षसी गर्जन जंगल को कँपा रहा था। राइफलें गूँज रही थीं; पर तनिक भी उसका मान हेठ न हुआ—जरा भी उसकी शान में बट्टा न पड़ा। वह बराबर गरजती और उछलती रही, बल्कि एक हाथी पर हल्का झपट्टा भी मारा। किन्तु अन्त में वह भी हाथ से निकल गई। कारण, हमलोग उसका खेल-कूद ही देखते रह गये।

आखिर हताश होकर कैम्प में लौटना पड़ा। पर एक ही घंटे के बाद एक चरवाहा आकर कहने लगा कि कैम्प से थोड़ी ही दूर पर एक चीता अभी भैंस का पड़वा मारकर खा रहा है! फिर कैसा विश्राम! चल पड़े हमलोग उसी दम। किन्तु वहाँ पहुँचने पर चीते के बदले बाघ निकल पड़ा! चरवाहा ठीक पहचान न सका था! एक साथ ही कई राइफलें उसपर बरस पड़ीं; फिर भी वह पैंतरे बदलकर भाग निकला। करीब डेढ़ सौ गज दूर गया होगा कि मैंने भी गोली चलाई। निशाना सटीक बैठा और तत्काल

ही प्राणघातक सिद्ध हुआ। नौ फुट से कुछ अधिक ही लम्बा बाघ था! उसे हाथी पर लादकर हमलोग कैम्प की ओर लौटे तो रास्ते में एक अद्‌भुत दृश्य दीख पड़ा।

एक पंकिल स्थान में घास के झुरमुट के चारों ओर कुंडल बाँधकर एक विशाल अजगर बैठा हुआ था! भयावनी चमकीली आँखें थीं—बड़ी कठिनाई से सरक सकता था। मैंने एक बड़ा बोरा मँगाया, जिसमें वह घुसाया गया। कैम्प में लाकर उसके लिये एक पिंजड़ा बनवाया और 'देवढ़ी-चम्पारण' भेज दिया। किन्तु गढ़ में आने के कुछ ही दिनों के बाद उसे पिंजड़े से बाहर निकाल कर महल के सामनेवाले मैदान में छोड़ दिया; क्योंकि वह विषधर नहीं था। गर्मियों में वह फुलवारी के पक्के तालाब के किनारे लगे हुए फूलदार पौधों की जड़ के पास फेटा मारे पड़ा रहता। रात में धीरे-धीरे सरककर मेढ़कों और कीड़ों से भूख बुझाता!

हाँ, अजगर को गढ़ में भेजकर हमलोग दूसरे दिन फिर शिकार पर निकले। रास्तेमें एक बाघ सामने आया,पर हाथ उठाते-उठाते चकमा देकर निकल गया। मेरे साथी शिकारियों की गोलियाँ उसे घायल भी न कर सकी। आखिर बड़ी खोज के बाद फिर एक झाड़ी से निकला। इस बार मैंने बड़ी तेजी से उसके पीछे हाथी दौड़ाया, किन्तु आगे भागने के बदले वह क्रोधोन्माद में पीछे लौट पड़ा। करीब पचीस गज तक निकट आकर हाथी की ओर झपटा। मैंने तुरत निशाना ताककर मारा। राइफल की आवाज के साथ

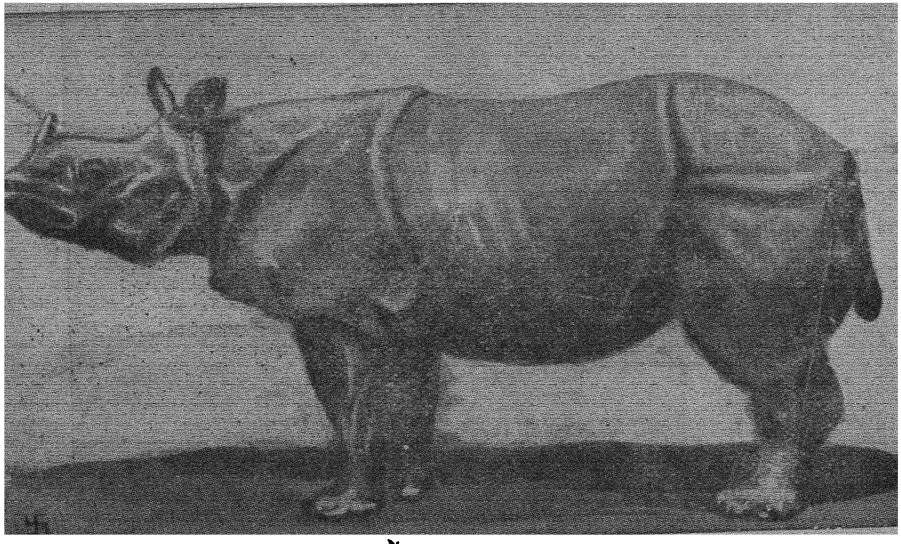
ही यम-यंत्रणाका गंभीर गर्जन सुन पड़ा। क्षण मात्र में थर्राहट भरी आह के साथ ही दम टूट गया। वह दस फुट से भी लम्बा था।

गैंड़े का शिकार

हिन्दुओं मे यह धारणा बँधी है कि गैंड़ा एक पवित्र पशु है; क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि इसका मांस पवित्र होता है और वार्षिक श्राद्ध के अवसर पर मृत आत्माओं को इसके रक्त का तर्पण दिया जाता है। कहते हैं, ऐसा करने से उन आत्माओं को चिर शान्ति मिलती है। अतः कुछ तो धार्मिक भावों और कुछ आखेट प्रिय होने के कारण मेरे हृदय में गैंड़े का शिकार करने की लालसा जगी।

आसाम को छोड़कर भारतवर्ष में इन दिनों गैंड़ा मिलना कठिन है। पुर्णिया जिले की सीमा पर, मोरँग के जंगलों में, कुछ गैंड़े मिलते हैं। इन जंगलों में गैंड़ों का शिकार करने की, नेपाल सरकार ने मनाही कर रक्खी है। इस कारण मैंने, कुछ दिन हुए, नेपाल-नरेश (महाराज चन्द्रशमशेर जंगबहादुर राणा) से उनके राज्य में, गैंड़े का शिकार करने की आज्ञा माँगी। उन्होंने अंततक मेरे साथ कृपा-भाव रक्खा और मुझे नेपाल-राज्यान्तर्गत भिखना ठोरी के समीप, चित-वन में गैंड़ों का शिकार करने की आज्ञा दे दी।

मुझे शिकार करने की अनुमति देने के बाद महाराज साहब ने अपने हाथियों को चित-वन में भेज देने की आज्ञा दी और



गैंड़ा



नेपाल के बादशाह (बायें से दूसरे, नंगे सिर) अपने शिकार के साथ;
और उनके प्रधान मंत्री (हैट पहने, लेबों में हाथ डाले)

शिकार का प्रबन्ध करने के लिये एक अफसर को भी तैनात कर दिया। इस प्रकार शिकार का प्रबन्ध हो जाने पर मैं, १६२० ई० के मार्च महीने में, भिखनाठोरी (बी० एन० डब्लू रेलवे) गया और वहाँ से 'बघही' पहुँचा। यह स्थान भिखनाठोरी स्टेशन से १२ मील दूर है। यहीं कैम्प डाला गया। जिस दिन हम यहाँ पहुँचे, उस रात में मूसलधार वर्षा हुई और पत्थर भी गिरे। भाग्यवश भोर होते-होते आकाश निर्मल हो गया और हमें खबर मिली कि पास के ही जंगल में एक गैंड़ा है। महाराजा बहादुर के अफसर ने, उस गैंड़े को घेर रखने के लिये, अपने शिकारी हाथियों और शिकारियों को भेजा और आदेश कर दिया कि ऐसा होते ही वे हमें खबर दें। दस बजते-बजते खबर आई कि ५०० फुट की दूरी से गैंड़ा घेर रक्खा गया है और वह एक छोटे-से गन्दे जलाशय के कीचड़ में बैठा हुआ है। गैंड़े से १५० फुट की दूरी तक मैं पहुँच गया। जैसे ही हम इकट्ठे हुए कि अचानक उसे हमारी गन्ध मिल गई। वह उठकर खड़ा हो गया! मेरे पास ४७६ नम्बर की रायफल भरी तैयार थी। मैंने गैंड़े पर गोली दाग दी। यह तो मैं ठीक तरह से नहीं बतला सकता कि गोली उसे कहाँ लगी; लेकिन गोली लगते ही वह घुटनों के बल बैठकर फिर खड़ा हो गया। मैं दूसरी गोली चलानेवाला ही था कि नेपाली अफसर ने अपना हाथी मेरे सामने कर दिया। जिससे मैं रुक गया। इसी बीच गैंड़ा, बड़ी तेजी के साथ भागकर, समीप ही

सागौन के पेड़ों के घने जंगल में घुस गया। नेपाली अफसर से, मेरे उसके ऐसा करने का कारण पूछने पर, मालूम हुआ कि गैंड़े के सांघातिक आक्रमण से मेरे हाथी को बचाने के लिये ही उसने ऐसा किया था। उसने कहा कि गैंड़ों को कई बार हाथी को गिराते और अपने ठोस, मजबूत और नुकीले सींग से उसका पेट बुरी तरह चीरते देखा है। उसके बगलवाले दाँत कुल्हाड़ी की तरह तेज और लोहे की तरह मजबूत होते हैं और इन्हीं दाँतों से वह हाथी जैसे बड़े जानवर को भी चीर-फाड़ देता है। अगर दूसरी बार गोली चलाने का मौका मुझे मिल गया होता तो मैं उसे बुरी तरह घायल कर देता और तब वह इतनी तेजी से भागकर जंगलों में नहीं छिप सकता। जलाशय में जिस जगह वह खड़ा था, वह जगह खून से तर हो गई थी - वहाँ का पानी लाल हो गया था। खून के कतरों के सहारे हमलोगों ने उसे ढूँढ़ निकाला। वह एक मील तक भागकर एक दूसरे जलाशय में बैठ गया था। दूर से ही उसपर गोली छोड़ देना मैंने ठीक नहीं समझा। मैं आगे बढ़ा। इतने में ही वह अचानक खड़ा हो गया और इस बार भी आँखों से ओझल हो गया! खून के निशानों के सहारे हमलोग बहुत दूर तक चले गये; लेकिन उसका कुछ भी पता न लगा। हमलोग निराश होकर कैम्प में लौट आये।

तीसरे पहर कैम्प में हमलोगों ने सुना कि यहाँ अब गैंड़ा नहीं मिलेगा। अतः हमलोगों को अपना कैम्प उठाकर हरइहा घघार

नामक स्थान में ले जाना पड़ा। वहाँ बहुत गैंड़े रहते थे। कल की तरह हमलोगों ने कुछ चुनिन्दा शिकारी महावतों को गैंड़े की टोह में भेजा।

थोड़ी देर के बाद महावत ने खबर भेजी। इस बार मैंने छः शिकारी हाथियों को साथ कर लिया और उन्हें अपने से कुछ दूर पर ही पीछे-पीछे लाने का आदेश दिया। महावतों को मैंने पहले ही ताकीद कर दी थी कि मेरे गोली दागने के बाद हाथियों को शीघ्र मेरे समीप ले आवें!

मुझे दूर से ही गैंड़ा दिखला दिया गया और मेरे साथियों ने मुझे सावधानी से उसके कुछ और समीप जाने की राय दी।

यह गैंड़ा भी एक छोटे जलाशय के कीचड़ में बैठा हुआ था, जिसके चारों ओर बड़ी-बड़ी घासों का घना जंगल था। मैं अकेला ही अपना हाथी लेकर गैंड़े के पास गया। गैंड़ा मुझसे ५० गज की दूरी पर था। ज्योंही गैंड़ा उठ खड़ा हुआ, त्योंही मैंने अपनी ४७६ दुनली राइफल की दोनों गोलियाँ धड़ा-धड़ दाग दी। गोलियाँ उसके पिछले हिस्से में लगी, यह बड़ा बुरा हुआ। यदि उसका अगला हिस्सा जख्मी हो गया होता, तो वह आसानी से भाग नहीं सकता था। वह भाग निकला। मैं उसका पीछा करता और गोलियाँ दागता गया। मेरे पास दो राइफलें थी, एक ४७६ नम्बर की और दूसरी ५०० की। हाथ की राइफल जब अधिक गर्म हो जाती थी तब झट से दूसरी राइफल उठा लेता था। भागते-भागते

वह गैंड़ा एक छोटी-सी पहाड़ी पर चढ़ने लगा। मेरे हाथी ने भी उसका पीछा न छोड़ा। अबतक मैं उस गैंड़े पर पैंतीस बार गोली चला चुका था, तो भी वह बुरी तरह घायल न हो पाया था! पहाड़ी के ऊपर ५०० गज तक जाकर वह खड़ा हो गया। शायद अब उसपर गोलियाँ असर कर रही थीं और वह आगे न बढ़ सकता था। मैंने गोली चलाना बन्द कर दिया, और उसके अधिक समीप पहुँचना चाहा। मेरे अन्य साथी भी इस समय इधर-उधर जुटकर छोटी-छोटी राइफलों से दनादन गोलियाँ चलाने लगे। अधिक नजदीक पहुँचकर मैंने भी कुछ गोलियाँ चलाईं और गैंड़ा लुढ़ककर अनन्त निद्रा में सो गया। मरते समय उसने अपने चारों पैर ऊपर आकाश की ओर कर दिये।

प्रायः गैंड़ा पहली बार चोट खाने पर घुटने के बल बैठ जाता है, फिर तुरत उठकर, बड़ी तेजी के साथ, भाग जाता है। इसका कारण यह कि उसकी चोट गहरी नहीं होती। गोली मर्म-स्थान तक नहीं पहुँचती। यदि पहली ही बार गोली उसके मर्म-स्थान को पार कर गई, तब तो वह वहीं ठंढा हो जायगा। गैंड़े का नया शिकारी, गैंड़े को घुटने के बल बैठते देखकर, यही समझ बैठेगा कि गैंड़ा बुरी तरह घायल हो गया, अब गिर जायगा। इस प्रकार यदि वह नया शिकारी, दनादन गोलियाँ चलाने के बदले, अपनी सफलता पर विश्वास कर, चुपचाप बैठा रहा, तो शिकार से उसे हाथ धो बैठना पड़ेगा; क्योंकि अवसर मिलते ही जख्मी गैंड़ा भागकर

आँखों से ओझल हो जायगा। जब गैंड़ा अपनी टाँग ऊपर उठाकर चित पड़ जाय, तभी समझना चाहिये कि वह मर गया। गैंड़े के मारने की यह परख है। एक बात और है। गैंड़े के चमड़े को १२ बोर की गोली (ball) अच्छी तरह पार नहीं करती।

गैंड़े के गिर जाने पर हमलोगों की राय हुई कि फोटो ले लिया जाय। इस गरज से जब मैंने हाथी से उतरना चाहा, मैंने देखा कि मेरी हथेलियों में कई जगह फफोले पड़ गये हैं। इस समय मेरे दायें हाथ में इतना दर्द होने लगा कि उसे उठा भी न सकता था। लाचार मैं हाथी पर ही पड़ा रहा। पहले गोलियाँ चलाने की धुन में मुझे कुछ भी दर्द नहीं मालूम होता था; क्योंकि हाथ की राइफल की नला जब गोलियों की आग से बहुत गर्म हो जाती थी, तब मैं उस राइफल को रखकर दूसरी राइफल बड़ी आसानी से उठाकर काम में लाता था; और इसके पहले भी ऐसा मुझे कई बार करना पड़ा था। किन्तु इस बार मेरी बाईं हथेली, बराबर गर्म नल पकड़े रहने के कारण, जल गई थी। अधिक शक्तिशालिनी गोलियों का लगातार प्रयोग करने से मुझे कई झटके लगे थे, जिसके फलस्वरूप मेरे कन्धे में दर्द हो रहा था और जिस जगह राइफल का कुन्दा (निचला भाग) मैं अड़ाये हुए था, वह जगह भी सूज गई थी।

मेरे नौकरों ने मुझे हाथी से नीचे उतारा और फोटो लिया गया। इसके बाद मैंने, शास्त्रों के अनुसार, तर्पण-संस्कार भी किया

जिसकी लालसा मेरे हृदय में बहुत पहले से ही लगी हुई थी। हमलोगों ने उसके खून में चावल भिंगोकर धूप में सुखाया और वार्षिक श्राद्ध के अवसर पर उसका उपयोग करने के लिये घर लाये। हमलोगों में से बहुतों ने तो वहीं पर मांस भी खाना चाहा; लेकिन रूखा और सख्त होने से किसी ने नहीं खाया। सिर्फ कुछ सूखा हुआ मांस घर के लिये हमलोगों ने ले लिया। हाँ, कुछ नेपाली शिकारियों ने जरूर मांस खाया और तारीफ भी खूब की।

दूसरे दिन कैम्प में आराम करना मेरे लिये जरूरी हो गया; क्योंकि मैं दर्द के मारे राइफल नहीं उठा सकता था। चौथे दिन गैंड़े की कुछ खबर न मिलने पर हमलोग बाघ के शिकार में निकले।

दोपहर को हमलोगों ने कैम्प छोड़ा था और घंटा भर भी नहीं बीतने पाया था कि एक शिकारी महावत ने, जिसे सदा की तरह गैंड़े की टोह लगाने के लिये भेज दिया था, खबर भेजी कि उसे पास में ही एक गैंड़ा मिला है। हमलोग उसी ओर बढ़े।

इस बार गैंड़ा जंगली घासों से भरी हुई एक छोटी-सी नदी की तलहटी में था। मेरे उस ओर बढ़ने पर एक गैंड़ी (female rhinoceros) मिली। उसके सींग बहुत छोटे और पतले थे। मैंने उसपर गोली नहीं चलाई। महावत के यह कहने पर कि गैंड़ा थोड़ी ही दूर आगे है, मैं आगे बढ़ा। जब मैं गैंड़े के नजदीक पहुँचा, तब उसने अपने दाँतों से 'कड़कड़-चटचट' शब्द किया। महावत डर गया। उसने कहा कि गैंड़ा तुरत हमलोगों पर

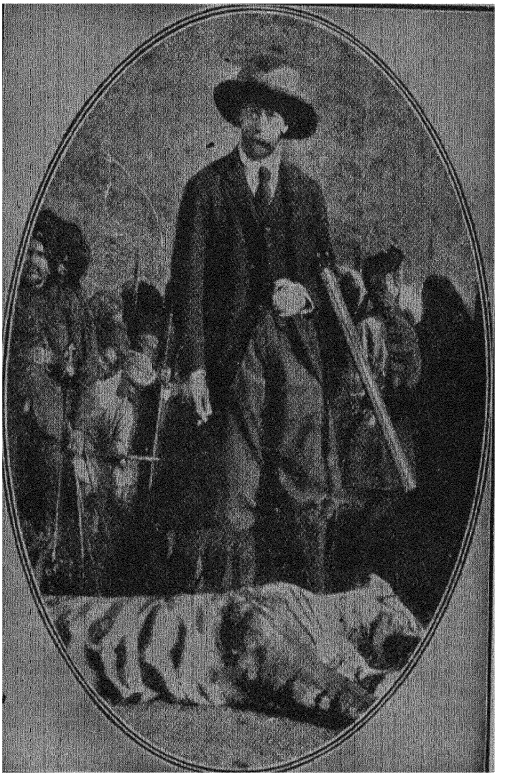
टूटेगा; क्योंकि किसी पर टूटने के पहले वह ऐसा शब्द करता है। उसने मुझे गोली दागने के लिये तैयार हो जाने को कहा। मैंने उसे हाथी बढ़ाने की आज्ञा दी। गैंड़े से ५० गज की दूरी पर पहुँचते ही, गड़ा ठीक सामने से हाथी की ओर टूटा। हाथी स्थिर रहा और मैंने ४७६ नम्बर की राइफल से गोली चला दी। गैंड़ा लुढ़क गया और उसने तुरत अपनी टाँगें ऊपर उठा दीं। टूटते हुए कालरूप गैंड़े को आज मैंने एक बार में ठंढा कर दिया; मेरे आनन्द की सीमा न रही।

साधारणतः पहली बार वार करने पर गैंड़ा पीछे मुड़कर भागने लगता है और शिकारी को उसके अगले हिस्से में गोली मारने का मौका ही नहीं मिलता। भागते समय गोली मारने पर पिछला ही हिस्सा जख्मी होता है और इसी कारण चोट सांघातिक नहीं होती। एक बात और भी है। गैंड़े के पिछले हिस्से का चमड़ा बहुत मोटा और कड़ा होता है। उसपर साधारण शीशे की गोली का कुछ भी असर नहीं पड़ता। केवल सिलवर (Nickel) की ठोस गोली ही उसके शरीर के भीतर पैठ सकती है। सामने से टूटकर आते हुए गैंड़े को मार गिराना कोई कठिन काम नहीं है, बशर्ते कि शिकारी मुस्तैद और पक्का निशानेबाज हो।

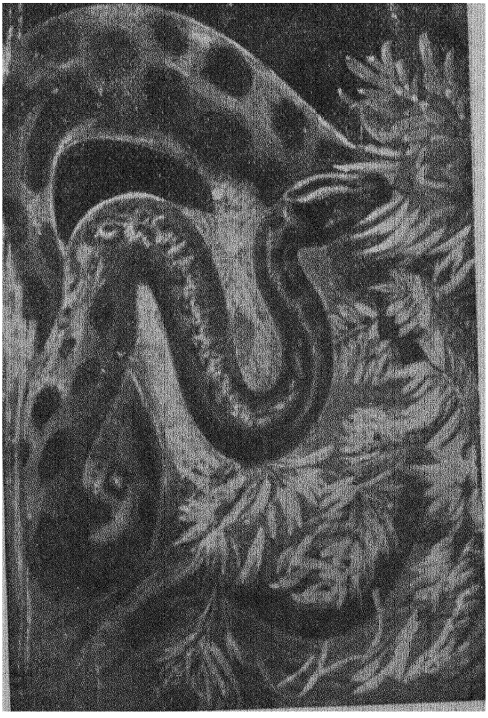
दूसरे दिन हमलोगों ने कूच कर दिया। मेरे साथ मेरे मारे हुए दो गैंड़े थे, जिनका शिकार करने के लिये मैं पहले से ही लालायित था। हाँ, वहाँ से कूच करने के पहले मुझे खबर मिली

कि जिस गैंड़े को मैंने वहाँ जाने पर, सबसे पहले घायल कर डाला था, वह पास के ही 'सुखीभार' नामक एक झील में मरा हुआ मिला है। मैंने नेपाली अफसर को उस गैंड़े की खाल और सींग को, मेरी ओर से महाराजा बहादुर नेपाल को दे डालने का आदेश दिया। इसी झील के स्थान पर एक बार भारत-सम्राट (पंजम जार्ज) का शिकारी कैम्प भी डाला गया था।

अधिकांश शिकारी गैंड़े का शिकार करना पसन्द नहीं करते। नेपाली शिकारियों का भी ऐसा ही विचार है। हाँ, उनलोगों के लिये गैंड़े का शिकार कौतूहल-सा हो सकता है, जिन्होंने कभी एक भी गैंड़े का शिकार नहीं किया है। एक बार गैंड़े का शिकार कर लेने पर फिर इस ओर से दिल हट-सा जाता है। ठीक यही बात पुर्णिया जिले में जंगली भैंसों के शिकार के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। आज तक मैंने कोई ४० भैंसों का शिकार किया है, जिनमें केवल तीन बार ही मुझे आनन्द मिला है। ये पालतू-से जान पड़ते हैं। प्रकृति शिकारी को तो संकटों से सामना करने में ही शिकार का आनन्द मिलता है। यही कारण है कि मुझे बाघ के शिकार में जितना आनन्द मिलता है, उतना अन्य किसी भी जंगली चौपाये के शिकार में नहीं। अबतक मैंने पूरे एक सौ बाघों का शिकार किया है, और आज भी मुझमें उतनी ही अतृप्ति है जितनी पहली बार बाघ मारने पर थी।



नेपाल की तराई में सम्राट् पंचम जार्ज का शिकार
[पृष्ठ १६०]



एक विशाल अजगर
[पृष्ठ १५०]